

श्री सद्गुरुवेनमः

# भक्ति दान गुरु दीजिए

जा गुरु ते भ्रम न मिटे, भ्रांति न जिव की जाय।  
सो गुरु झूठा जानिये, त्यागत देर न लाय ॥

—सतगुरु मधु परमहंस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, जिला साम्बा (जे. एण्ड के.)

# भक्ति दान गुरु दीजिए

— सतगुरु मधुपरमहंस जी

## प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)

ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	July, 2009
Copies	—	5000

### Website Address.

[www.sahibbandgi.org](http://www.sahibbandgi.org)

[www.sahib-bandgi.org](http://www.sahib-bandgi.org)

### E-Mail Address.

\*[satgurusahib@sahibbandgi.org](mailto:satgurusahib@sahibbandgi.org)

### Editor

**Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri**

**Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)**

**Ph. (01923) 242695, 242602**

---

**Mudrak : Deepawali Printers, Sodal Road, Preet Nagar, Jalandhar**

1. जगत है रैन का सपना	7
समझ मत कोई यहाँ अपना	
2. नर तन का फल विषय न भाई	21
3. इसलिए भटका रहा है मन	29
4. कौन है काल पुरुष व परम पुरुष ?	42
5. भक्ति को नष्ट करना चाहते हैं ये	51
6. भक्ति दान गुरु दीजिए	61
7. सहज जनि जानो साईं की प्रीत	65
8. शब्द बिना सुरति आँधरी	83
कहो कहां को जाये	
9. कोटि जन्म का पंथ था गुरु पल में	91
दिया पहुँचाये	
10. योगमत और संतमत में अंतर	116
11. ऐसे करें सतगुरु भक्ति	119
12. वाणी साहिब की	125



# दो शब्द

नौ मन दूध को एक नीबू फाड़ देता है। इस तरह मन बड़ा अनिष्टकारी है। यह बड़ा कठिन है; यह बड़ा जटिल है। मन ने आत्मा को बुरी दशा में पहुँचाया। नाम के बिना इससे कोई नहीं बच सकता है।

**नाम बिना पापी सो कहिए॥**

बड़े अच्छे-अच्छे लोग हैं, जो बड़े पुण्य-कर्म करते हैं। क्या वो पापी हैं? जो सच की बात कर रहा है, काफ़ी झूठ बोल रहा है। पर पता नहीं चल रहा है। आप किसी से कहते हैं कि कल आपके घर आऊँगा। पर किसी कारण से नहीं जा पाते हैं। यह झूठ हो गया। ऐसा न कहें। कहें कि अगर सद्गुरु की कृपा हुई तो आऊँगा। इस तरह सच-झूठ को इंसान ठीक से नहीं समझ पा रहा है।

**साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।**

**जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥**

किसी भी कीमत पर आदमी का अंतःकरण नाम की ताक़त के बिना कभी भी चेतन नहीं हो सकता है। जब गुरु नाम की ताक़त संग्रहीत कर देता है, तब वो पकड़ में आता है। यह अनिष्टकारी कर्म ही करवायेगा। इस मन से कभी उम्मीद नहीं करना कि अच्छे कर्म की तरफ ले जायेगा। क्या पानी को मथने से घृत की प्राप्ति हो सकती है? क्या रेत को पेरने से तेल निकल सकता है? इस तरह मन से शुभ की उम्मीद नहीं करना। यह मन निर्मल नहीं हो सकता है। इसे काबू में करना है। कोई मत कहे कि किसी का मन निर्मल हो गया। यह एकाग्रता से पकड़ा जा सकता है। जब तक मन की आज्ञा से कुछ कर्म कर रहा है, किसी भी कीमत पर अच्छा नहीं हो सकता है। इसलिए नाम के बिना इंसान हीन है। जब वो ताक़त खड़ी हो जाती है तो वो नहीं होने देती है। आपकी जैसी भावना आती है, वैसा करते हैं। भावना उचित है या अनुचित, यह आपको पता नहीं है। कुछ कहते हैं कि चाह ही जीवन है। नहीं।

**चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।**

**वो ही शाहनशाह है, जिसको नाहीं चाह॥**

यह अद्भुत ताक़त है नाम की। अजीब ताक़त बिलकुल फॉमलेस

भाव से खड़ी रहती है। वो आपको इंगित करती चलेगी कि क्या उचित है, क्या अनुचित। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

**गुरु संजीवन नाम बताए।**

**ताके बल हंसा घर जाए॥**

वो मन को अचेत करती चलेगी। मन अनन्त युगों से आत्मा को अचेत करता आ रहा है। आप मुक्त नहीं हो पाए। यदि मुक्त हो पाते तो यहाँ कैसे होते !!

**मुक्त हुआ जन्मे फिर नहीं॥**

यानी धरती पर जो भी है, उसमें कोई भी मुक्त नहीं हुआ है।

**देह धरे का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोय।**

**ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूरख भुगतत रोय॥**

शरीरधारी कभी भी मुक्त नहीं हुआ। इसका मतलब है कि हम सब जन्म लिये जा रहे हैं; बार-बार जन्म-मरण के क्रम में आ रहे हैं। संभव है कि अनन्त जन्म भक्ति की होगी; कई बार स्वर्ग-नरक की प्राप्ति की होगी; 84 लाख योनियों का क्रम भी पूरा किया होगा; चार खानि में घूमे होंगे, पर मुक्त न हुए। क्योंकि जो मुक्त हो गया, उसका जन्म नहीं होता। यानी आप मुक्त नहीं हो पाए थे। तभी तो जन्म हुआ न! पर साहिब कह रहे हैं—

**मुक्त होय सतलोक सिधावे।**

**बहुरि न हंसा भवजल आवे॥**

इसका मतलब है कि पार होने में हमारी कोशिश कामयाब नहीं हो पाई है। हमारी अपनी ताकत, अपनी साधनाएँ, क्रियाएँ हमें मुक्ति नहीं दिला पाईं।

**नाम बिना मुक्ति न होय।**

**कोटिन भांति करे जो कोय॥**

करोड़ों प्रयास भी कोई करे, पर नाम के बिना मुक्त नहीं हो सकता है।

**नाम बिना सब विधि सो हीना॥**

आत्मा अज्ञान में जी रही है। कहाँ जाना है, पता नहीं है। यानी हम अपनी कमाई से किसी भी कीमत पर मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं।



## दसवें द्वार से आगे—संत वाणी

दशम द्वार से जीव जब जाई । स्वर्ग लोक में वासा पाई ॥  
 11वें द्वार से जीव जब जाता । परम पुरुष के लोक समाता ॥

दसवें द्वार से न्यारा द्वारा । ताका भेद कहूँ मैं सारा ॥

नौ द्वारे संसार सब, दसवें योगी साध ।  
 एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान ॥

—कबीर साहिब

.... आठ अटाकी अटारी मज़ारा, देखा पुरुष न्यारा ।  
 न निराकार आकार न ज्योति, नहिं वहाँ वेद विचारा ।  
 ओंकार कर्त्ता नहिं कोई, नहीं वहाँ काल पसारा ।  
 वह साहिब सब संत पुकारा, और पाखण्ड है सारा ।  
 सद्गुरु चीन्ह दीन्ह यह मारग, नानक नज़र निहारा ॥

—गुरु नानक देव जी

पलटू कहै साँच कै मानो । और बात झूठ कै जानो ॥  
 जहवाँ धरती नाहिं अकासा । चाँद सूरज नाहिं परगासा ॥  
 जहवाँ ब्रह्मा विष्णु न जाहीं । दस अवतार न तहाँ समाहीं ॥  
 आदि जोति ना बसै निरंजन । जहवाँ शून्य शब्द नहिं गंजन ॥  
 निरंकार ना उहाँ अकारा । अक्षर शब्द नहिं विस्तारा ॥  
 जहवाँ जोगी जाए न पावै । महादेव ना तारी लावै ॥  
 जहवाँ हृद अनहृद नहिं जावै । बेहृद वहाँ रहनी ना पावै ॥  
 जहवाँ नाहिं अग्नि परगासा । पाँच तत्व ना चलता स्वाँसा ॥

—पलटू साहिब

सुन्न गगन में सबद उठत है , सो सब बोल में आवै ।  
 निःसबदी वह बोलै नाहीं सो सत सबद कहावै ।

—पलटू साहिब जी

# जगत है रैन का सपना समझ मत कोई यहाँ अपना

---

यों सपना पेखना, जग रचना तिम जान।  
इसमें कछु साँचो नहीं, यह नानक साँची मान ॥

क्या सच में हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, वो सपना है? ऐसा वाणियों में आ रहा है। साहिब भी कह रहे हैं—

**जगत है रैन का सपना ॥**

यह रैन का सपना है तो क्यों हमें सब कुछ सच-सच लग रहा है? सुख-दुख सच लग रहा है, भाई-बंधु सच्चे लग रहे हैं, दुनिया के वैभव सच्चे लग रहे हैं। इंसान जो इच्छाएँ कर रहा है, सब सच्चा लग रहा है। क्या मामला है?

जैसे हम सपना देखते हैं तो सब कुछ सच्चा लगता है। पर सच में सब सपना है। सच क्यों लग रहा है? है सब कुछ स्वप्न। ऐसा नहीं है कि चंद लोगों को सच लग रहा है, बाकी को नहीं। ऐसा नहीं है। यह सभी को सत्य लग रहा है। क्यों सत्य लग रहा है? यह सच नहीं है। शास्त्र भी कह रहे हैं कि संसार स्वप्नवत् है। पर जिसे भी देखो, शरीर को नित्य मान रहा है, जगत के पदार्थों को नित्य मान रहा है। जिसे भी देखो, जगत की चीजों को नित्य मानकर चल रहा है। फिर क्यों सच लग रहा है? यह सच इसलिए लग रहा है कि अवस्था का खेल है। प्रमाण देता हूँ। अवस्था के कारण दुनिया सच्ची लग रही है। जैसे सपना देखते हैं तो सपना सत्य

लगता है। जो भी स्वप्न देख रहा है, उसे स्वप्न नित्य लग रहा है। लेकिन जाग्रत पर इसका ज्ञान होता है कि यह तो हम सपना देख रहे थे। पर जितनी देर सपना देख रहे होते हैं, उतनी देर वो सब सच्चा लग रहा होता है। क्या बात रही? देखने वाले भी हम हैं, जागने वाले भी हम हैं। उस अवस्था में उसे सत्य मानने वाले भी हम हैं और जागने पर उसे झूठ, स्वप्न-मात्र मानने वाले भी हम हैं। आखिर हमें क्या हो गया था कि सपने को हमने सच मान लिया था? सपने में राज्य मिले तो खुशी मिलती है। हम जितनी देर सपना देख रहे थे, सब सच्चा लग रहा था। जागने पर हम ही थे, जिसने उसे नकार दिया। सपने में प्राप्त होने वाला सुख-दुख नहीं रह पाता है। यह क्या हुआ? अवस्था थी। इस तरह इंसान का चाहना एक स्वप्न है।

जो भी ब्रह्माण्ड में देख रहे हैं, सब स्वप्न है। सपने की खूबी थी कि हमें जो कुछ दिखा, सब सच्चा लग रहा था। सपने में जो कुछ देख रहे थे, सब सत्य प्रतीत हो रहा था। आपने कभी सपने पर गहराई से चिंतन नहीं किया। यह कैसा भ्रम है? इस भ्रम में शिव-सनकादि, ऋषि-मुनि भी झूल रहे हैं। इसका मतलब है कि यह अवस्था का असर था। जैसे भांग खाने वाले को ज़मीन में खड़े दिखते हैं। कभी लगता है कि उड़ रहा हूँ। सच यह है कि उड़ नहीं रहा है। सच यह है कि ज़मीन में खड़े नहीं हैं। यह नशे के कारण हुआ। इस तरह जो स्वप्न है, भ्रमांक है। पर एक बात है कि यह अवस्था बदली कैसे? जाग्रत से कोई नींद में चला गया तो उसी की अनुभूति करने लगा। रात-भर स्वप्न देखता रहा। नींद खुली तो सब चीज़ें चली गयीं। उसे पता न चला कि कैसे गया और कैसे आया। इस तरह तीन-लोक में जो भी है, भ्रम के झूले में झूल रहा है। सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत और तुरीया—ये चार अवस्थाएँ हैं। कभी आप देखते हैं कि ऐसी अवस्था में चले गये कि कुछ भी पता नहीं चलता है। आप शून्यास्त हो गये। आपको किसी भी बात का पता नहीं चला। यहाँ तक कि जागने के बाद भी उस अवस्था का कुछ देर तक असर रहता है। जैसे कोई रात



को नशा करता है तो दिन को उतर जाता है। लेकिन नहीं उतरा। कुछ असर रहा। इस तरह सपने से उठने पर भी कुछ देर चिंतन रहता है। वो कभी सोचता भी है कि कहाँ हूँ! खिड़की, दरवाजे भी देखता है, जानने की कोशिश करता है कि कहाँ हूँ। यह घटना सबके साथ में होती है। थोड़ी देर में पता चलता है कि फ़लानी जगह पर हूँ। यह क्या हुआ? आप भ्रम अवस्था में चले गये थे। घोर अज्ञान अवस्था में चले गये थे। तब आपकी एकाग्रता नाभि में सिमट गयी थी। वहाँ एकाग्र थे। फिर निद्रा में चेतना का सिमटाव कंठ की बाईं तरफ हो जाता है। जाग जाते हैं तो वो अवस्था गुम हो जाती है। पर थोड़ी देर असर रहता है। कभी कोई नींद से उठता है तो कहता है कि अभी बात मत करो, मूड ठीक नहीं है। क्योंकि वो भयानक चीजें देख रहा था। आदमी पागल सपने में होता है। कभी सपने में भी समस्याएँ आती हैं। सपने में भी आदमी को दुख-दर्द आते हैं और सपने में भी आदमी उनका हल ढूँढ़ता है। उदाहरण के लिए कोई सपने में मार रहा है तो आप दिमाग लगाते हैं कि यह आदमी मुझसे तगड़ा है। आप भागते हैं। यानी यहाँ भी दुश्मन मिल जाए तो सावधान हो जाते हैं। साँप मिल जाए तो बचना चाहते हैं। जब समाधान नहीं मिलता है तो उलझ जाते हैं। उस अवस्था में भी ब्रेन काम करता है। फिर परेशान होता है। जब समाधान नहीं मिल पाता है तो दिमाग पर असर पड़ता है। पर मेडिकल साइंस यहाँ तक नहीं पहुँची है। जब इंसान के सामने समस्याएँ आती हैं तो उन्हें याद करके सो जाता है। जाग्रत से स्वप्न में पहुँचकर भी उनका हल ढूँढ़ने लगता है। क्योंकि सोचते-सोचते सो गया। कभी प्यास लगती है तो दिल करता है कि पानी पी लें। पर आलस्य के कारण उठते नहीं हैं। नींद में जाते हैं तो वहाँ भी प्यास लगती है। इसलिए एक बार बीच में पानी पी लेना चाहिए। नींद में प्यास अधिक सताती है। एक सवाल उठा कि नींद में प्यास क्यों लगती है? सुबह मुँह कड़वा होता है। स्वांस के कारण प्यास लगती है। नींद में स्वांस जोर से लेते हैं। कभी ऐसी

स्थिति में सो जाते हैं कि स्वांस लेना मुश्किल हो जाता है। आमतौर पर जितनी स्वांस मिलनी चाहिए, जाग्रत में मिल जाती है। कड़ियों का मुँह खुला रहता है। क्यों रहता है? वो नासिका से पूरी स्वांस नहीं ले पा रहा होता है तो मुँह से भी लेता है। क्योंकि फेफड़े कमजोर हो गये, इसलिए मुँह का भी प्रयोग कर रहा है। पर यह खतरनाक है। वायुमण्डल में बड़े शुक्राणु हैं, वायरस हैं। नासिका में यह सिस्टम है कि आगे नहीं जाने देती है; पर यह सिस्टम मुँह में नहीं है। मुँह खुला है तो वो शुक्राणु मुँह में प्रवेश कर लेते हैं। तो वो बड़ी ताकत से स्वांस लेता है। आदमी स्वांस लेने के लिए शक्ति लगाता है। इसलिए दिल के दौरे के चांस नींद में अधिक होते हैं। खराटे लेता है। कभी आप खराटों की बड़ी आवाज़ सुनते हैं। आमतौर पर यह आवाज़ बूढ़ों की होती है, बच्चों की नहीं। बच्चों के फेफड़े ताकतवर हैं; जितनी स्वांस चाहिए खींच लेते हैं। पर कमजोर फेफड़े वाला स्वांस पूरी नहीं कर पाता है तो खराटे लेता है। यह आवाज़ क्यों निकली? नासिका से भी हवा ली, मुँह से भी ली। स्वांस नलनी के पास दोनों हवा टकराती हैं तो आवाज़ होती है। इसका असर हृदय पर होता है। इसलिए ऐसे लोगों को दिल की बीमारी के चांस अधिक होते हैं। वो सोते-सोते ही शरीर छोड़ देते हैं।

...तो नींद में बड़ी गहरी स्वांस लेता है और ताकत लगाता है। इसका असर यह होता है कि बहुत प्यास से मुँह कड़वा हो जाता है। यदि उठकर बीच में पानी पी ले तो राहत मिलती है। उस अवस्था में दिमाग इस तरह का हो गया कि होल्ड नहीं रहता है। कभी नींद में ऐसे अनर्थकारी काम कर बैठता है जो जाग्रत में नहीं कर सकता है। पर नींद की अवस्था एक स्वाभाविक अवस्था है। अगर आपने दारू पिया तो भी मेरे शब्द सामने आयेंगे। अगर माँस खाया तो भी सामने आयेंगे। नींद में भी दुखी हो जाओगे। पर सवाल उठा कि कैसे हुआ? क्यों? क्योंकि दिल से अभी भी आकर्षण था। मौत के समय भी अवस्था बनती है। जहाँ इच्छा करता है, वहीं पहुँच जाता है। वो वहीं पहुँचता है। मुझे एक आदमी

ने कहा कि गुरुजी, जब नींद में होता हूँ तो प्रेतात्मा आती है, मुझे बहुत सताती है, मुझे बहुत मारती है। मैंने कहा कि नाम करो। कहा कि तब याद नहीं रहता है। फिर वो बहुत मारती है। बुरी गति होने पर आपका ध्यान आता है। जैसे ध्यान आता है, वो भाग जाती है।

अब उसकी समस्या यह है कि उसे पहले ध्यान क्यों नहीं आया? उसके लिए मैं कहता हूँ कि तुम बहुत गहराई से हमसे जुड़ जाओ, निरंतर ध्यान करते रहो, गहराई से दिल में बसाओ। आदमी को कष्ट होता है तो कहता है कि हाय माँ! अब तो जवान हो गया है और माँ तो बूढ़ी है, क्या मदद कर सकती है? पर अनायास यही पुकार निकलती है। क्यों? क्योंकि उसने बचपन में ही दिल में यह धारणा बना ली थी कि माँ उसकी सबसे बड़ी संरक्षक है। देखा, यह धारणा बनी थी तो स्वाभाविक पुकार निकल गयी। यह दिमाग से नहीं निकलती है। यह अन्दर से निकलती है। यह है अन्दर से। मैंने भी कहा कि भक्ति अन्दर से करना, दिल से करना ताकि किसी भी अवस्था में, कभी भी नहीं भूल पाओगे।

मुझे एक आदमी ने बड़ी प्यारी बात बोली, कहा कि हम नींद में अपना वजूद भूल जाते हैं, इसलिए कभी माई, बहन के साथ भी अनुचित कर्म कर बैठते हैं। हम सबका वजूद नींद में भूल जाते हैं, पर आपको नहीं भूलते हैं। सही बात है। जब मैं आपकी तरफ देखता हूँ तो आपमें चेतनता आ जाती है। इसलिए मेरी कोशिश होती है कि सत्संग में सबसे निगाह मिला लूँ। उसमें मेरा ध्यान उनकी तरफ होता है जो मेरी बात को समझ रहे होते हैं। यह पता चल जाता है। मेरा विश्वास है कि जितनी भी देर आपको देखता हूँ, आप परम चेतन होते हैं। सच में बहुत चेतन होते हैं। यही बात बंदगी के समय होती है कि यदि निगाह नहीं मिले तो आप उदास हो जाते हैं, कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। आप खिन्न हो जाते हैं। मेरा विश्वास है कि जिन चीजों पर महापुरुषों की नज़र पड़ती है वो चेतन हो जाती हैं। जिनकी तरफ रुझान है, उनका कहना ही क्या! दो लोगों की तरफ ध्यान बंट जाता है। एक, जो समर्पित होते हैं।

यह स्वाभाविक है। दूसरे, जो विश्वासी हैं। गुरु नानक देव जी तो कह रहे हैं—

**नानक जो गुरु सेवे अपना, हों तिस बलिहारी जाऊँ ॥**

... तो अवस्था का खेल है। माता-पिता, भाई-बंधु सब सच लग रहे हैं। वाणियों से पता चलता है कि कुछ भी सत्य नहीं है; पर कितना भी ज़ोर लगाए, इस अवस्था से नहीं निकल पाता है। यह है रहस्य!

दुनिया मिथ्या है, सत्य अनुभव हो रही है। और यह मन है। जिस अवस्था में बैठकर आप दुनिया का भास कर रहे हैं, यह धोखा है। यह माँ है, यह बाप है, यह परिवार है, ये बच्चे हैं, यह सुख है, यह दुख है आदि जो भी अनुभूति हो रही है, यह चेतन अवस्था के कारण है। यह अवस्था भी धोखा है। यह भी मन का नशा है। जैसे आपने नींद में कुछ देखा। नींद में दिखने वाले पदार्थ नित्य लगे। अगर निद्रा में राज्य मिला तो सच्चा लगा। अगर फाँसी की सज़ा मिली तो वो भी सच लगी। राज्य मिलने पर जो सुख यहाँ चेतन अवस्था में मिलता है, वैसा ही वहाँ भी मिला। फाँसी की सज़ा मिलने पर जैसा दुख यहाँ मिलता है, वैसा ही वहाँ भी मिला। वहाँ भी सब कुछ सच अनुभव हुआ। जैसे जाग्रत में कर्म कर रहे हैं तो सच अनुभव हो रहे हैं, ऐसे ही नींद में भी सत्य आभास हुआ। नींद खुलने पर जाग गये तो सब मिथ्या है। पर जितनी देर सपना देख रहे होते हैं, सच लगता है। क्यों? यह अवस्था थी। यह अवस्था किसने बनाई? मन ने। अभी भी भ्रम अवस्था है, पर सच-ही-सच लग रहा है। यह नहीं है कि 4-5 लोगों को सच लग रहा है। नहीं, सबको। पढ़े-लिखे, विद्वान, ऋषि-मुनि आदि सबको। क्यों? यह झूठ सच लग रहा है। यह अवस्था है। यह नशा है मन का। नशे के कारण सच लग रहा है।

भांग के नशे का अनुभव मैंने एक दिन कुंजवाणी में एक से पूछा तो उसने कहा कि एक बंदा पाँच-पाँच दिख रहे थे। खटिया पर सोऊँ तो लगता था कि आसमान में उड़कर जा रहा हूँ। उलटा सोऊँ तो लगता था कि पाताल में चला जा रहा हूँ। कहा कि पूरी रात पासे ही पलटता रहा।

चल रहा था तो लगता था कि पेड़ टेढ़ा है, अभी गिर पड़ेगा। हँस रहा था तो हँसते ही जा रहा था। पता नहीं क्या हो गया था! तब एक ने मेरी हालत देखकर कहा कि इसने भाँग खा रखी है, इसे इमली का पानी पिलाओ। तो मैं होश में आया।

इस तरह गुरु भी एक बूटी देता है। यह नशा उतार देता है। जो खड़े दिख रहे थे, नशा था। क्यों मकान टेढ़ा लग रहा था? यह सब भाँग का कमाल था। इस तरह जो सब सच लग रहा है, यह मन का स्वभाव है। जिस तरह भाँग का कमाल था कि लग रहा था, उड़ रहा हूँ, इस तरह मन का नशा है कि सच लग रहा है। उसने कहा कि ऐसी गति हो गयी कि फिर कभी नहीं खाई भाँग। बस, इसी तरह अवस्था के कारण सपना सच लग रहा था। नशे की अवस्था थी। जिस जाग्रत अवस्था में आप उठते-बैठते हो, यह भी धोखा है। पर जब तक इसके घेरे में हो, सब सच्चा ही लगेगा। साहिब कह रहे हैं—

**जगत है रैन का सपना। समझ न कोई यहाँ अपना ॥**

संसार स्वप्नवत है। यह है मन की अवस्था कि सच-सच लगे। अगर मन-माया का नशा न होता तो आत्मदेव ने कुछ भी काम नहीं करना था। भाँग का नशा न होता तो कभी खटिया पर तो कभी नीचे नहीं होना था। यह नशे के कारण किया। इसी तरह पूरी जिंदगी इंसान कभी लड़के बच्चे, कभी धन, कभी अन्य चीजों में समय गँवा देता है।

**जन्म तेरा बातों ही बीत गयो। तूने कबहुँ न नाम जपो ॥**

साहिब ने संसार की असारता पर बड़े शब्द बोले, बहुत कुछ कहा। और कहा भी अनूठा।

**रहना नहीं देश बीराना है ॥**

नशे का देश है, बेगाना देश है।

**यह संसार नाव कागज की, बूँद पड़े गलि जाना है ॥**

पानी पड़ा तो गल जायेगा।

**यह संसार फूल सेमर का, चोंच लगे पछताना है ॥**

कभी सुगना (तोता) सेमर के लाल-लाल फूल को सुन्दर और रस वाला मानकर आता है, सोचता है कि अच्छा फल होगा, पर जब चोंच मारता है तो नीरस लगता है, रूई निकलती है।

**चोंच लगे पछताना है ॥**

जिन चीजों में सुख देख रहे हो, अंतकाल में पछतावा ही मिलेगा।

**यह संसार झाड़ अरु झाखड़, उलझ पुलझ मर जाना है ॥**

उलझ जाओगे इसमें।

**यह संसार रैन का सपना।**

**समझ न कोई यहाँ अपना ॥**

हे बंदे! इसकी ममता छोड़। यह रैन के सपने की तरह है।

**हाथ कछु न आना है।**

आपके हाथ कुछ नहीं लगेगा।

**नाम गुरु का जप ले बंदे, फिर पीछे पछतायेगा ॥**

**तू कहता है मेरी काया, काया का गुमान क्या।**

**चाँद सा सुन्दर ये तन तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा ॥**

**वहाँ से क्या तू लाया बंदे, यहाँ से क्या ले जायेगा।**

**मुट्ठी बाँधे जग में आया, हाथ पसारे जायेगा ॥**

**बालापन में खेला खाया, आई जवानी मस्त रहा।**

**बूढ़ापन में रोग सताये, खाट पड़ा पछतायेगा ॥**

**जपना है तो जप ले बन्दे, आखिर तो मिट जायेगा।**

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, करनी का फल पायेगा ॥**

इसलिए—

**जाग जाग नर जाग रे ॥**

**क्या तू सोया मोह निशा में, उठ के भजन में लाग रे ॥**

ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी है, शर्तिया नाशवान् है। कम-से-कम

किसी भी बुद्धिजीवी का सिद्धांत नहीं कह रहा है कि यह नित्य है। यह मन का संसार है और मन के इस झूठे संसार में सभी मन की ही गुलामी कर रहे हैं, उसी की भक्ति कर रहे हैं। साहिब की वाणी में बड़े रहस्य भरे पड़े हैं। वो कह रहे हैं—

अवधू छाड़हु मन विस्तारा ॥  
 सो पद गहो जाहि ते सद्गति, पारब्रह्म सो न्यारा ॥  
 नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरि हजरत कछु नाहीं ॥  
 आदम ब्रह्मा नहिं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं ॥  
 असी सहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी ॥  
 चंद्र सूर्य तारागण नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी ॥  
 वेद कितेब सुमृत नहिं संजम, नहिं जीवन परिछाई ॥  
 बाँग निमाज कलमा नहिं होते, रामहु नाहिं खुदाई ॥  
 आदि अन्त मन मध्य न होते, आतश पवन न पानी ॥  
 लख चौरासी जीव जन्तु नहिं, साखी शब्द न बानी ॥  
 कहहिं कबीर सुनो हो अवधू, आगे करहु विचारा ॥  
 पूरण ब्रह्म कहाँ ते प्रगटे, कृत्रिम किन्ह उपराजा ॥

कभी लोग अवस्थाओं में घूमते हैं। चारों अवस्थाएँ भ्रम हैं। पूरे ब्रह्माण्ड में जो दिख रहा है, स्वप्न है। साहिब एक बड़ा प्यारा शब्द कह रहे हैं—

नाद बिन्द योग स्वप्न, जीव ईश भोग स्वप्न,  
 भूमि आव तार निराकार स्वप्न रूप है।

निर्गुण सत्ता जब भी साकार रूप में प्रकट होती है, उसे ईश्वर कहते हैं। आत्मा प्राणों को धारण कर लेती है तो जीव कहते हैं। इसलिए ये भी स्वप्न हैं।

पाप पुण्य करै स्वप्न वेद और वेदान्त स्वप्न,  
 वाचा और अवाचा स्वप्न रूप सो अनुप है।

बोलना, सुनना भी स्वप्न है। वाह ! सब स्वप्न है। पाप और पुण्य दोनों स्वप्न समान हैं।

**चंद्र सूर्य भास स्वप्न पंच में प्रपंच स्वप्न,  
स्वर्ग नर्क बीच बसे, सोऊ स्वप्न रूप है।**

चाँद, सूर्य, स्वर्ग, नरक सब स्वप्न है। स्वर्ग में रहने वाले देवता भी स्वप्न की अवस्था में हैं।

**ओहं और सोहं स्वप्न पिण्ड और ब्रह्माण्ड स्वप्न,  
आत्मा परमात्मा स्वप्न रूप सो अरूप है।**

आपको यहाँ वहम आ जायेगा कि आत्मा कैसे स्वप्न है, परमात्मा कैसे स्वप्न है ! चेतन सत्ता को आत्मा कब कहते हैं ? जैसे जल जम गया तो बर्फ कहते हैं ; जब तरल है तो पानी कहते हैं। इस तरह मन के सम्पर्क में जब चेतन सत्ता आती है तो आत्मा कहते हैं। परमात्मा क्यों स्वप्न है ? परमात्मा मन का नाम है। पारब्रह्म भी मन की संज्ञा है। ओंकार भी स्वप्न रूप है।

**जरा मृत्यु काल स्वप्न गुरु शिष्य बोध स्वप्न,  
अक्षर निःअक्षर आत्मा स्वप्न रूप है।**

जीवन, मृत्यु, काल भी स्वप्न है। ये नित्य नहीं। जो वर्तमान में गुरुत्व को अनुभव कर रहे हैं, यह पंच-भौतिक तत्वों के कारण है, इसलिए यह भी स्वप्न है। यही वस्तु जब आगे चलकर छंटती चलती है, पार पहुँचती है तो नित्य हो जाती है। इसलिए भ्रमित नहीं होना है।

**कहत कबीर सुन गोरख वचन मम,  
स्वप्न ते परे सत्य सत्य रूप भूप है।  
सोई सत्यनाम सत्यलोक बीच वासा करे,  
नहीं कहूँ आवे नहीं जावे सत्यरूप है॥**

जो अपने रूप को नहीं खोता है, बदलता नहीं है, वो सत्य है। वो कहीं आता-जाता नहीं।



तो पूरा ब्रह्माण्ड स्वप्न है। अवस्थाएँ स्वप्न हैं। सुषुप्ति भी स्वप्न है, स्वप्न भी भ्रमांक है, झूठा है, जाग्रत भी स्वप्न है, तुरीया भी स्वप्न है। कुछ मेरुदण्ड में ध्यान करके सुषुप्ति अवस्था में पहुँच जाते हैं, कहते हैं कि यहाँ संकल्प-विकल्प नहीं हैं मन के; ज्ञान अवस्था है। पर सत्य यह है कि वो बड़ी ही अज्ञानमय अवस्था है। स्वप्न भ्रमांक अवस्था है, पर सब सत्य आभासित होता है। यह विराट् चेतना नहीं है। महापुरुष के पास विराट् चेतना होती है। सुषुप्ति में कम चेतना है। स्वप्न में उससे कहीं अधिक चेतना होती है। जाग्रत में कई गुणा अधिक चेतना स्वप्न से होती है। फिर ऐसे ही तुरीया में जाग्रत से कई गुणा अधिक चेतना होती है।

चौथी तुरीया अवस्था में बड़ी चेतना है। यह साधारण नहीं है। इसे प्रज्ञावस्था भी कहते हैं। प्रज्ञावस्था में देवत्व रहता है। वो भी स्वप्न है। कुछ महाप्रज्ञा की भी बात कर रहे हैं। पर यह महाप्रज्ञा भी भ्रमांक है। इसमें योगेश्वर लोग रहते हैं। कुछ केवल प्रज्ञा तक बोल रहे हैं, कुछ महाप्रज्ञा तक बोल रहे हैं। इस महाप्रज्ञा में केवल छः योगेश्वर पहुँचे। पर यह भी भ्रमांक अवस्था है; यह भी स्वप्न है। यह स्वप्न बड़ा लंबा है।

**कोई कोई पहुँचा ब्रह्म लोक में, धर माया ले आई ॥**

इस महाप्रज्ञा को तुरीयातीत अवस्था भी कहते हैं। तुरीया के बाद तुरीयातीत आती है। साहिब अपनी वाणी में कह रहे हैं—

**तुरीयातीत ताहिं के पारा। विनती करे तहँ दास तुम्हारा ॥**

साहिब तुरीयातीत से, महाप्रज्ञा से परे की अवस्था की बात कर रहे हैं। कह रहे हैं कि वहाँ दास विनती कर रहा है। तुरीया में भी मन का मिलन होता है। तुरीयातीत में भी होता है। दही में लस्सी है। मक्खन निकाला तो भी लस्सी है। घी निकाल लिया तो भी कुछ लस्सी है। पर उसकी बात ही क्या, जिसमें लस्सी नहीं! इस तरह तुरीयातीत में मन का मिश्रण है। कई चीजें मिली हुई हैं। जब तक मन की मिलन है, पुनर्जन्म होगा। जैसे शुद्ध घी नहीं है, लस्सी की मात्रा है तो खराब होना-ही-होना है। इस तरह—

**चार अंतःकरण के संग आत्मा खराब ।**

**जैसे नीच परसंग से, ब्राह्मण पीये शराब ॥**

इसलिए इन अवस्थाओं में पहुँचने वाला भी सुरक्षित नहीं है ।

जिस भी अवस्था में आत्मा जाती है, वही सत्य लगता है । जिस जाग्रत में आप हैं, वो भी स्वप्न है । इसमें मन की ताकत है कि इसे सत्य अनुभव करवा रहा है । महापुरुषों ने ऐसे ही नहीं कहा—

**यों सपना पेखना, जग रचना तिम जान ।**

**इसमें कछु साँचो नहीं, यह नानक साँची मान ॥**

साहिब वाणी में कह रहे हैं—

**नहीं माया नहीं काया हो, चल हंसा उस देश ॥**

यह तीन-लोक भी भ्रमांक है । इस स्वप्न में बड़े-बड़े झूल रहे हैं । इससे कोई पार नहीं हो पा रहा है । सब इंद्रियाँ स्वप्न हैं । ये सभी काल का तमाशा दिखाने वाली हैं । कुछ कहते हैं कि आँखों देखी पर विश्वास करना । नहीं, यह भी स्वप्न है । आँखें भी धोखा देती हैं । ये भी झूठ ही दिखाती हैं । सद्गुरु इन सभी से परे कर देता है । वो सुरति को चेतन कर देता है । जैसे सभी वायरस का हमला हमारे खून पर है । वो बड़ा स्वादिष्ट है । क्योंकि भोजन से लार बना । ये ही रस रक्त में परिवर्तित होते हैं । इसलिए खून स्वादिष्ट है । पर यह वर्जित है । हरेक वायरस का हमला ही खून पर है । इस तरह काल का हमला सुरति पर है । 24 घण्टे हमला कर रहा है । इसे स्वप्न की दुनिया में ही घुमा रहा है । इसलिए कह रहे हैं—

**सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय ॥**

**मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय ॥**

कुछ कहते हैं कि देवत्व में आनन्द है । कहाँ है आनन्द? वहाँ भी एक शरीर है । वहाँ भी एक अवधि है । चार मुक्तियाँ भी आनन्द से परे हैं । इसलिए—

**वा घर को खोजो रे भाई । जाते आवागमण मिट जाई ॥**

साहिब ने खण्डन नहीं किया, पर सत्य की ओर इशारा किया ।  
वो कह रहे हैं—

**भृंग मता होय जिहि पासा । सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥**

जिसके पास भृंगमता है, वो सत्य है । वो अपनी तरह बना देता है । पूर्ण गुरु में ताकत होती है कि बदल देता है । इसलिए नाम की प्राप्ति के बाद एक ताकत आ जाती है तो चेतन कर देती है । जिस अवस्था में मन आत्मा से बिलकुल अलग हो, उसे शुद्ध चेतना कहते हैं । सुनार सोने का खोट निकालने के लिए तपाता है । इस तरह सुरति में बड़े खोट हैं । गुरु का ध्यान करके, उनमें समाकर निर्मल हो जाएँ ।

**सुरति बाँध अस्थिर करो, गुरु में देय समाय ।**

**कहैं कबीर धर्मदास से, तो अगम पंथ लखाय ॥**

सुरति गुरु में समाने लगती है तो निर्मल होने लगती है । तब उसका प्रकाश अनुभव होने लगता है, मन-माया के आवरण छूटने लगते हैं । इसलिए सच्चे नाम के बिना कभी सफ़ा नहीं हो सकता है । यह जीव अपनी ताकत से निर्मल नहीं हो सकता है ।

**गुरु कहे संत को पूजे, साध कहे गुरु पूज ।**

**साध गुरु के बीच में, भई अगम की सूझ ॥**

गुरु कहता है कि संत के पास जा । जब संत के पास जाता है तो वो कहता है कि गुरु के पास जा, कहाँ भ्रमित हो रहा है ! इस तरह इनके बीच में परम-पुरुष की प्राप्ति हो जाती है ।

नाम की प्राप्ति के बाद महाप्रज्ञावान पुरुष आपके साथ में खड़ा होकर पूरे संकेत देता है । वो संदेश देता चलता है । वो चेतन करता रहता है । वो स्वप्नवत् संसार से परे अमर-देश में ले जाता है । वो ऐसे देश में ले जाता है, जहाँ जीव अपनी ताकत से कभी नहीं पहुँच सकता है । वो उसे उसके सही घर में ले जाता है, जहाँ सारा स्वप्न मिट जाता है, जहाँ संसार का सारा भ्रम समाप्त हो जाता है । वहाँ पर पहुँचकर ही चेतन सत्ता

अपने मूल रूप में आती है, जहाँ उसे हंस कहा जाता है। वहाँ माया नहीं है; वहाँ काया नहीं है। वहाँ पर माया का शरीर नहीं है।

**चल हंसा उस देश, जहाँ जात वरण कुल नाहिं।**

**शब्द मिलावा होत है, देह मिलावा नाहिं ॥**

वहाँ देही नहीं है। पर कोई पारखी ही इस रहस्य को समझ सकता है। वहाँ जाने के बाद हंस दुबारा मन-माया के झूठे संसार में नहीं आता है।

**हंसा हंस मिले सुख होई ॥**

**इहाँ तो पाँती है बगुलन की, कदर न जाने कोई ॥**

**जो हंसा तेरे प्यास छीर की, कूप नीर नहिं होई।**

**यह तो नीर सकल ममता को, हंस तजा जस चोई ॥**

**षट दर्शन पाखण्ड छानबे, भेष धरे सब कोई।**

**चार बरन औ वेद किताबै, हंस निराला होई ॥**

**यह जम तीन लोक को राजा, बाँधे अस्त्र सँजोई।**

**सब्द जीत चलो हंस हमारे, तब जम रहि हैं रोई ॥**

**कहैं कबीर प्रतीत मान ले, जिव नहिं जाय बिगोई।**

**लै बैठारों अमर लोक में, आवागमन न होई ॥**



**अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रच, सब से रहे न्यार।**

**जिन्द कहे धर्मदास सों, ताका करो विचार ॥**

# नर तन का फल विषय न भाई

---

नर तन का फल विषय न भाई । भजो नाम सब काज बिहाई ॥

राजा गोपीचंद स्नान कर रहा था । उसकी माँ चबूतरे से देख रही थी । गोपीचंद को शरीर पर कुछ गर्मी का आभास हुआ । उसके शरीर पर ऊपर से आँसू की बूँदें गिरी थीं । उसने ऊपर देखा तो माँ खड़ी थी । उसने बाद में माँ से पूछा कि तुम रो क्यों रही थी? माँ ने कहा—बेटा ! तेरी सुंदर देही को देखकर आँसू निकल आए । क्योंकि तेरे बाप की भी ऐसी ही सुंदर देही थी; वो भी ऐसे ही विषयों में बेकार चली गयी और मानव-तन का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका । तेरी देही भी अपने पिता की तरह सुंदर है और मैं देख रही हूँ कि यह भी विषयों में ही कहीं तुम्हारे पिता की तरह बेकार न चली जाए ! गोपीचंद को माँ की बात समझ में आ गयी । उसने माँ से पूछा कि मानव-तन का लक्ष्य कैसे पूरा होगा? माँ ने कहा कि सद्गुरु की शरण में आकर भक्ति-भजन करने से होगा । गोपीचंद के दिल में वैराग्य उत्पन्न हो गया । उसने माँ से कहा कि मैं सन्यास ग्रहण कर रहा हूँ, मुझे आशीर्वाद दो । माँ ने कहा कि नहीं, तू घर में रह । पहले समझाया कि विषय में न उलझ, पर सन्यास लेने को कहा तो ममता आ गयी । पर गोपीचंद न माना । तब माँ ने कहा कि तू अगर जाना ही चाहता है तो मेरी तीन बातें याद रखना । कहा कि सुन्दर बिस्तर पर सोना । गोपीचंद ने कहा कि मैं तो राजपाट छोड़कर जा रहा हूँ । फिर ऐसा कैसे हो सकता है? सन्यासी को कभी पत्थरों पर भी सोना पड़ सकता है । माँ ने कहा कि स्वादिष्ट भोजन खाना । गोपीचंद ने कहा कि यह भी संभव नहीं है । फिर माँ ने कहा कि मजबूत किले में सोना । गोपीचंद ने माँ से

कहा कि तुम जो तीन चीजें कह रही हो, ये तो संभव नहीं हैं। मैं तो राजपाट यहीं छोड़कर जा रहा हूँ। यह सब कैसे हो पायेगा? माँ ने कहा कि जब बहुत गहरी नींद आए, तब सोना। तब वो सेज बड़ी सुन्दर हो जायेगी। फिर कहा कि जब बहुत भूख लगे, तभी खाना। वो भोजन भी बड़ा स्वादिष्ट हो जायेगा। तीसरा, मैंने कहा कि मजबूत किले में सोना। यह कोई महलों वाला किला नहीं बोला। तुम सद्गुरु का ध्यान करके सोना। वो बड़ा मजबूत किला है। वहाँ कोई भूत-प्रेत भी घुसपैठ नहीं कर सकेगा। गोपीचंद को बात समझ में आ गयी। वो माँ से आशीर्वाद लेकर चल पड़ा।

**बली हो तन में, शीलवंत कोई होय तो होय ॥**

जिसके 4-5 बच्चे हों, बुढ़ापे की तरफ बढ़ रहा हो और वो कहे कि मैं शरीफ़ हो गया हूँ तो बात जमेगी नहीं। वो तो उसने होना ही है। बच्चों की परेशानी से वैसे ही हो जायेगा। बात तो तब है, जब कोई जवानी में शरीफ़ हो।

इसलिए सद्गुरु की पहचान में भी साहिब ने ये बातें ही बोली हैं। कहा कि गुरु बालब्रह्मचारी करना। यदि वो न मिल सके तो ऐसा गुरु करना, जो ज्ञान हो जाने पर दुनिया छोड़ चुका हो। यानी पहले माया के थपेड़े खा चुका हो, पर बाद में संभल जाए, तो भी चलेगा। क्योंकि 'जबसे चेता तबसे सही ॥' पर गृहस्थ गुरु के लिए तो साहिब ने कभी नहीं बोला है। वो तो भूल से भी नहीं करना है।

**जाका गुरु है गीरही, चेला गिरही होय।**

**कीच कीच के धोवते, दाग न छूटे कोय ॥**

एक महात्मा से मेरे शिष्य की बात हुई। मेरे शिष्य ने कहा कि गुरु पूर्ण होना चाहिए। महात्मा ने कहा कि मेरा गुरु जी पूर्ण है। उसने शादी भी की है; बच्चे भी हैं; व्यापार भी किया। हुआ न पूर्ण गुरु! महात्मा ने यह जवाब दिया। बड़ा अटपटा जवाब है। नहीं, यह नहीं है पूर्ण गुरु की पहचान।

साहिब तो कह रहे हैं—

**सतपुरुष को जानसी, तिसका सतगुरु नाम ॥**

जो उस सत्ता में मिला हुआ हो, वो है पूर्ण गुरु। जो उसमें मिला, विषय-विकार उसमें नहीं होंगे। इसलिए आपके पास भी नहीं आ पायेंगे। तभी तो कहा—

**तन मन वाको दीजिए, जाको विषया नाहिं ॥**

**आपा तब ही डारि के, राखे साहिब माहिं ॥**

आप जिसका भी ध्यान करेंगे, उसी के गुण आपमें आ जायेंगे। सद्गुरु का ध्यान इसीलिए तो किया जा रहा है, क्योंकि उसकी शक्तियाँ आ जाती हैं। पर परम-पुरुष का ध्यान नहीं किया जा सकता है। धर्मदास जी को साहिब ने साफ़ बोल दिया कि कोई फायदा नहीं है, कोई मतलब नहीं है परम-पुरुष के ध्यान का। चाँद पर पत्थर फेंकने की तरह बेकार है। इसलिए सद्गुरु ही माध्यम है। तो सद्गुरु ऐसा होना चाहिए जो विषयों से रहित हो। पर ऐसा गुरु संसार में आसानी से मिलता नहीं है। क्योंकि—

**चदरिया झीनी रे झीनी, सत्य नाम रस भीनी ॥**

**अष्टकमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।**

**नौ दस मास बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी ॥**

**जब मोरि चादर बन घर आई, रंगरेज को दीनी।**

**ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने, लालों लाल कर दीनी ॥**

**चादर ओढ़ शंका मत करियो, दो दिन तुमको दीनी।**

**मूरख लोग भेद नहिं जाने, दिन दिन मैली कीनी ॥**

**ध्रुव प्रह्लाद सुदामा ने ओढ़ी, शुकदेव ने निर्मल कीनी।**

**दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी ॥**

यह शरीर रूपी चादर बड़े सूक्ष्म रहस्यों से भरी पड़ी है। पाँच तत्वों की पूनी से माता के गर्भाशय में यह चादर 9-10 महीने तक बुनी

जाती है, पर मूर्ख मनुष्य इसे विषय-विकारों में गंदा कर देता है। इस चादर को रँगने वाला सद्गुरु है, जो इसे ज्ञान रूपी गहरे लाल रंग से रँग देता है। पर इसे ओढ़कर इस भ्रम में नहीं रहना कि यह सदा तुम्हारे पास रहेगी। यह तो तुम्हें कुछ दिनों के लिए दी गयी है। पर मूर्ख लोग इस बात का भेद नहीं जानते हैं और विषय-विकारों में खोकर गंदा कर देते हैं। ध्रुव, प्रह्लाद, सुदामा, शुकदेव आदि ने इसे भक्ति में लगाकर निर्मल किया। पर कबीर साहिब ने तो यह शरीर रूपी चादर जैसी निर्मल ओढ़ी थी, वैसी ही निर्मल रख दी, क्योंकि वे माया में उलझे ही नहीं।

**मानुष जन्म तुझको दिया, भजने को सतनाम।**

**कहैं कबीर चैत्यो नहीं, लाग्यो औरहि काम॥**

यह मनुष्य-तन प्रभु की भक्ति करने को मिला था ताकि संसार-सागर से मुक्त हो सके, पर जीव भूल गया और संसार के अनात्म कार्यों में लग गया।

**दो दिन खेल ले यह खेला, यह तो नदी नाव को मेला॥**

**कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, संग न जाय अधेला।**

**और जनम बहुतेरे पाओ, मानुष जन्म दुहेला॥**

**मात पिता सुत कुटुम्ब कबीला, संग न जाय मेला।**

**चार वेद षट् शास्त्र पुकारें, संत न देहे हेला॥**

**यह जीवन तो चार दिनन का, अंत होइहैं ढेला।**

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, आई चलन की बेला॥**

प्रभु ने कृपा करके यह अवसर प्रदान किया था, पर इस अवसर को मूर्ख जीव ने खो दिया। यदि भक्ति की भी तो बिना गुरु के ही लगा रहा।

**गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिना देते दान।**

**गुरु बिन दान हराम है, पूछो वेद पुराण॥**

**फिर यदि गुरु किया भी तो विचारकर नहीं किया।**



**बिना विचारे गुरु करे, सो पीछे पछताय ॥**

क्योंकि संसार से छूटने के लिए ही तो गुरु किया। पर यह विचार नहीं किया कि जिसकी शरण में आकर अपना कल्याण चाह रहे हैं, क्या वो खुद पहुँचा हुआ है या नहीं! जो खुद संसार-सागर से छूटा हुआ हो, वही तो दूसरे को छुड़ा सकता है।

**हरि कृपा तब जानिये, दे मानुष अवतार।**

**गुरु कृपा तब जानिये, छूड़ावे संसार ॥**

सच्चा गुरु, जिसे संतों ने सद्गुरु कहा, संसार-सागर से छुड़ाता है। वो स्वयं संसार-सागर में बँधे हुए, स्वयं मोह-माया में फँसे हुए गुरु की तरह केवल रास्ता नहीं बताता है। वो शिष्य की आत्मा को अपने साथ में लेकर उस स्थान में पहुँचा देता है, जहाँ से वो इस संसार में आई है। तभी तो संतों ने कहा—

**हरि कृपा जो होय तो, नहीं होय तो नाहिं।**

**कहैं कबीर गुरु कृपा बिना, सकल बुद्धि बह जाहिं ॥**

इसलिए परमात्मा की भक्ति को नहीं कहा। गुरु की भक्ति करने को कहा। गुरु को परमात्मा से बहुत बड़ा बोल दिया। वैसे गुरु की भक्ति को तो सब धर्म-शास्त्रों में बोला गया। परमात्मा की भक्ति का संदेश कोई नहीं दिया। पर परमात्मा की भक्ति को लोगों ने अपने हितों के कारण अपनाया। हम मूर्ति-पूजा के खिलाफ नहीं हैं, पर मूर्ति-पूजा से कल्याण नहीं होने वाला है। लोग चाहते हैं कि पाप-कर्म भी करते रहें और भक्ति भी। इसलिए सच्चे गुरु की भक्ति नहीं कर पाते हैं। अगर गुरु भी करते हैं तो ऐसा करते हैं, जो अन्तर्यामी नहीं होता है, जो पहुँचा हुआ नहीं होता है, जिसे कोई खबर नहीं होती है कि उसके शिष्य क्या कर रहे हैं, और न ही वो उन्हें उनके दोष समझा पाता है। दूसरी ओर संत सद्गुरु कुम्हार की तरह अपने शिष्य के दोषों को निकालकर बाहर करता है। तब ही सच्ची भक्ति हो पाती है। पर दूसरी तरफ, जो चाहे, करो, मूर्ति न समझाती है, न डाँटती है, न नाराज़ होती है। पर गुरु का क्या कहना!

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट ।

अन्तर हाथ सम्हार दे, बाहर मारे चोट ॥

गुरु दोषों को निकालता है, भक्ति के काबिल बनाता है । इसलिए गुरु-भक्ति सहज नहीं है ।

गुरु भक्ति अति कठिन है, ज्यों खाँड़े की धार ।

बिना साँच पहुँचे नहीं, महा कठिन व्यवहार ॥

वहाँ झूठा नहीं टिक सकता है । वहाँ पापी नहीं टिक सकता है । तभी तो कहा—

कामी क्रोधी मसखरा, इनसे भक्ति न होय ।

भक्ति करे कोई सूरमा, जाति बरण कुल खोय ॥

जाति वरण कुल खोय के, भक्ति करे चितलाय ।

कहैं कबीर सतगुरु मिले, आवागमण नशाय ॥

गुरु जाति, कुल आदि का अहंकार छुड़ा देता है । गुरु के आगे सब अहंकार त्यागकर उनके हर शब्द पर चलते चलना है । आपका मन कुछ कह सकता है । पर उसकी बात नहीं माननी है, क्योंकि वो कभी आपके कल्याण में सहायक नहीं हो सकता है ।

मन की दशा विहाय, गुरु मार्ग निरखत चले ।

हंस लोक कहँ जाय, सुख सागर सुख सों लहे ॥

बुंद जीव अनुमान, सिंधु नाम सतगुरु सही ।

कहैं कबीर प्रमान, धर्मदास तुम बूझहूँ ॥

अपने मन की बात नहीं माननी है । जो गुरु कहे, वो ही सच मानना है, उसी पर चलना है । चाहे कितने भी वेद-शास्त्र का ज्ञाता हो, अपनी बुद्धि के अनुसार नहीं चलना है ।

वेद पुराण भागवत गीता, आठों जाप रटो री ।

कहैं कबीर बिना सतगुरु के, भर्म मिटे नहिं बाँरी ॥

बिना सद्गुरु के संसार का भ्रम नहीं मिट सकता है । मात्र पढ़ते रहने से कुछ ज्ञान नहीं होने वाला । सद्गुरु यथार्थ में आत्मज्ञान करवा देता

है। वो संसार का भ्रम मिटा देता है। इसलिए जो गुरु यह भ्रम न मिटा सके, उसे अज्ञानी गुरु जानकर त्याग देने में ही भलाई है।

**जा गुरु ते भ्रम न मिटे, भ्रांति न जिव की जाय।**

**सो गुरु झूठा जानिये, त्यागत देर न लाय॥**

पर लोग हैं कि मानते ही नहीं। संतमत-संतमत रटे जा रहे हैं और सद्गुरु की महिमा को जानते नहीं हैं। पढ़-पढ़कर बोलते रहने से कुछ नहीं होने वाला है। यथार्थ में आत्मज्ञानी गुरु चाहिए। उस अमर-लोक में पहुँचा हुआ गुरु चाहिए।

**बातन मुक्ति न हौहिहैं, छोड़ो चतुराई।**

**संतमता कुछ और है, खोजा तिन पाई॥**

दुनिया के बड़े-2 पंथ भी 10 वें द्वार तक की बात ही करते हैं, पर यह तो वेदों में भी है। पाँच मुद्राएँ भी वहाँ हैं, पर संतमत कुछ और है। वो वेदों-शास्त्रों के आगे की बात है। तभी कहा—

**वेद हमारा भेद है, हम वेदन के माहिं।**

**जौन भेद में मैं रहूँ, वेदो जानत नाहिं॥**



**खेचरि भूचरि साथै सोई। और अगोचरि उनमुनि जोई॥**

**उनमुनि बसै अकास के माहीं। जोगी बास करे तेहि ठाहीं॥**

**ये जोगी मति कहा पसारा। संत मता पुनि इन से न्यारा॥**

**जोगी पांचौ मुद्रा साथै। इंडा पिगला सुखमनि बाँधै॥**

—तुलसी साहिब हाथरस वाले

**पाँच शब्द औ पाँचों मुद्रा, सोई निश्चय माना।**

**आगे पूरण पुरुष पुरातन, तिनकी खबर न जाना।**

—कबीर साहिब जी

## मुझपे कर्में नज़र तू सदा रखना.....

मुझपे कर्में नज़र तू सदा रखना ।  
मैं खड़ा हूं दया की नज़र के लिए ॥

मेरे सतगुरु सुनो मेरी फरियाद को ।  
चरणों में जगह दो सदा के लिए ॥

मुझपे कर्में नज़र.....

क्या पुकारूं तुझे मेरे अदली-अदल ।  
दिल की है तुझको तो सारी खबर ॥  
मेरे सतगुरु मुझे बस यही भीख दो ।  
मैं तड़फता रहूं बस तुम्हारे लिए ॥

मुझपे कर्में नज़र.....

न मांगू जगत की सुख संप्रदा ।  
दास की है बस इतनी सी इन्तजा ॥  
मैं पुकारूं तुम्हे तुम आवाज़ दो ।  
बहे हर पल यह आंसू तुम्हारे लिए ॥

मुझपे कर्में नज़र.....

मेरी किशती फसी है मझदार में ।  
तू तारे या डोवे है इन्तयार में ॥  
मेरे साहिब न पल, इक अब देर कर ।  
डूबने को खड़ा हूं तुम्हारे लिए ॥  
मुझपे कर्में नज़र.....

—साहिब जी

# इसलिए भटका रहा है मन

---

**मन ही स्वरूपी देव निरंजन तोहे रहा भरमाई ॥**

इस बात को गंभीरता से लेना होगा। क्या यह मन हमारा बैरी है? यह मन सच में हमारा बैरी है। तो कैसा है यह मन? हम सब इससे बेखबर क्यों हैं? क्या कर रहा है मन? कहाँ रहता है यह मन? मन को क्या पड़ी है हमें परेशान करने की? ये चंद सवाल हैं, जो बड़े अहम हैं। आदमी इनपर चिंतन नहीं कर रहा है।

मन को क्या पड़ी कि हम सबको इतना परेशान कर रहा है? आत्मा को आखिर मन क्यों उलझा रहा है? जैसे मनुष्य जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, पेट पालने के लिए नौकरी कर रहा है, मेहनत कर रहा है, ऐसे ही मन को क्या पड़ी है? इतना परेशान क्यों कर रहा है? कुछ तो वजह है।

अच्छा, प्रेतात्माएँ किसी में क्यों आती हैं? प्रेतात्माएँ तीन कारण से आती हैं। पहला तो इनको बदला चुकाना होता है। फिर, दूसरा इनकी वृत्तियाँ अच्छी नहीं हैं, विषय-विकारों के लिए आती हैं। एक बात ध्यान रहे कि जो मर जाता है, उसकी जैसी वृत्तियाँ होंगी, वैसा ही होगा। इस तरह वो पहचान में आयेगा। जो जिस स्वभाव का है, मरने के बाद भी वैसा ही होगा।

पहली बात कि प्रेतात्मा किसी में भी प्रवेश लेती है—बदला लेने के लिए। दूसरा, विकारों के कारण। गंदे काम करने आती हैं। तीसरा, उन्हें शरीर चाहिए। उदाहरण दे रहा हूँ। मुझे इसका इल्म है। ठीक-ठीक

है। और प्रेतात्माओं का हल हमारे अलावा किसी के पास नहीं है। कोई कितने भी स्थानों पर जाए, प्रेतात्मा पीछा नहीं छोड़ती है। किसी की भी भक्ति कर ले, नहीं छोड़ती है। उदाहरण देता हूँ। एक बार एक प्रेतात्मा ने आकर मुझे प्रार्थना की, कहा कि महाराज, एक प्रार्थना लेकर आई हूँ। मैंने कहा कि कहो। बोली कि आप इतने खराब-2 लोगों को इतनी बड़ी-बड़ी शक्तियाँ कैसे दे रहे हो? मैंने कहा—कैसे कह सकती हो? राजपुर की बात है। बोली कि मैं फ़लाने घर की बहू हूँ। मुझे 100 साल हो गये हैं प्रेतयोनि में। कहा कि बड़े लंबे समय से हूँ। मैंने कहा कि क्या हुआ? बोला—करीब 100 साल पहले की बात है; मैं इस घर की बहू थी। मैं बीमार हो गयी।

उस जमाने में बीमारियों का इलाज कम था; पर बहुत कम बीमारियाँ थीं। तो कहा कि मेरी बीमारी ठीक नहीं हो रही थी। पर मैं जीना चाहती थी। एक रात मेरे पेट पर बैठकर मेरा गला दबा-दबा कर मुझे मार डाला गया। मेरी आवाज़ नहीं निकलने दी। बस, मरते समय एक बात दिमाग़ में उठी कि इनसे बदला लेना है। मैं मौत के समय एक ही प्रतिशोध लिए थी, एक ही चाह थी कि इनसे बदला लेना है। इसलिए मैं इनसे बदला लेने आई। बहुत बुरा नचाती थी। इसी से मुझे शांति मिलती थी। यह स्वाभाविक भी है कि आपके शत्रु को दुख पहुँचता है तो आपको सुख मिलता है। कहा कि इन्होंने चेले, सयाने बड़े किये, बड़े तंत्र-मंत्र किये, पर मैंने इन्हें नहीं छोड़ा। मेरा कोई कुछ न बिगाड़ सका। यह बात उसने सामने खड़े होकर की। इनमें शक्ति होती है। सामने से गुज़र जाए तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। पर मैं देख लूँगा। तो कहा कि मैं अपने मकसद में कामयाब होती गयी। मेरा लक्ष्य था कि इनका नामोनिशान मिटा देना है। मैं इसमें कामयाब भी हुई। इनके वंश को मिटाने में कामयाब हो रही थी। इतने में ये आपसे जुड़ गये। मुझे रुकावट आ गयी। अभी मैं इनके पास नहीं पहुँच पाती हूँ। जब इनके नज़दीक पहुँचने की कोशिश करती हूँ तो मुझे करेंट पड़ता है। इनके पास ताक़त

है। ये आपने दी। मेरा सवाल है कि ऐसे हत्यारों को इतनी बड़ी ताकत आपने कैसे दे दी? मैंने कहा कि इनके पूर्वजों ने तुझे मारा था; इन्होंने नहीं मारा न!

पितर-लोक में जाने पर भी प्रेमभाव रहता है। कभी स्वप्न में मिलें तो लगता है कि जिंदे हैं। मरने के बाद वो वैसा ही होगा। प्रेतयोनि में गया तो भी वैसा ही होगा।

तो उसने कहा कि या तो आप मेरा कल्याण करो या फिर इनसे अपनी ताकत वापिस लो। क्योंकि मेरे दिलोदिमाग में एक ही बात है कि इनसे बदला लेना है। देखो, वज्रन था उसकी बात में। मेरा मानना है कि प्रेतात्मा के पास बड़ी ताकत होती है। वो जब भी चाहे, किसी के पास पहुँच सकती है; जब भी चाहे, आदमी के कॉन्शिएस में प्रवेश ले सकती है। तो जो करना था वो मैंने किया।

**मैं यह बात पक्के तौर पर बता रहा हूँ; मेरी बात पर भरोसा करना कि प्रेतात्माओं से छुटकारे की विधि सिवाए हमारे पंथ के और कहीं नहीं है। पूरा सुरक्षित कर देता हूँ।**

अब एक सवाल उठा कि हमारे पास कौन लोग आ रहे हैं? राँजड़ी में एक ज्ञानी जी मेरे पास आए। बड़ी समस्या वाले आते हैं। पर संगत के प्रति मेरा क्या कर्तव्य है, मैं जानता हूँ। जिस दिन से शिष्य नाम लेता है, गुरु को अपना आधार बनाता है। एक आधार मानता है। नाम-दान देना गुरु का शिष्य को अडॉप्ट करना है। जैसे बच्चे को गोद लेते हैं, ऐसा ही है। अब उसका सुख-दुख गुरु का हो गया। जब भी कोई अपना दुख बताता है तो गहराई में लेता हूँ; उसपर चिंतन करता हूँ। तो वो कहने लगा कि किसी का कुछ किया-कराया है; मैं बड़ा परेशान हूँ; धंधा भी नहीं चल रहा है; आप चरण डालें, कृपा करें। एक सवाल उठा कि वो एक याचक था, याचना लेकर आया था। मेरा सवाल है कि क्या उसका मुद्दा आत्मा का कल्याण था? या वो कोई जिज्ञासा लेकर आया था? नहीं। इस तरह बीमार कल्याण की भावना से नहीं आता है। वो रोगी है,

मुसीबत में है। रोग काटो, यह सोच रखकर आता है। पर उसके प्रति हमारी सोच क्या है? उसके प्रति मेरी सोच बड़ी सकारात्मक है। मेरा मानना है कि उसने माना है कि ये हमारा दुख काट रहे हैं, ये मुक्त भी करा लेंगे। यहाँ यह भाव है। मेरा एक दवाब होता है कि नाम ले लो या एक राय होती है कि भक्ति में जुड़ो। क्यों? उसका प्रेशर दुबारा शुरू भी हो सकता है। उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है, पर उसकी समस्या का यह पूर्ण रूप से समाधान नहीं है। मैं उसे पूर्ण रूप से सुरक्षित करना चाहता हूँ। आत्मा, जो जकड़ी हुई है, वो सुखी नहीं हो सकती है। दान-पुण्य करके, देवी-देवताओं की भक्ति करके स्वर्ग में भी पहुँचे तो भी पिंडा नहीं छूटा। जिस शैतानी ताक़त ने यहाँ जकड़ा हुआ है, वहाँ जाकर भी उसकी ग्रिप से नहीं निकले। आप उसकी पकड़ से बाहर नहीं निकले। वो तो जैसे यहाँ नचा रहा है, वहाँ भी नचा रहा है। देवताओं में भी काम, क्रोध है। इसका मतलब है कि उनमें भी मन है। सुनो, हम यह कह रहे हैं कि तुम्हारी समस्याओं का हल हो जायेगा। पर कल कोई और समस्या आ जायेगी। यह निदान तो नहीं हुआ न! हम कह रहे हैं कि पूर्ण सुरक्षित कर रहे हैं। अब वो क्यों नहीं आना चाह रहा है? या छल, कपट कर रहा है या दारू पी रहा है। इसलिए वो नहीं आना चाह रहा है।

एक माई को ट्यूमर था। उसे पड़ौसियों ने बताया कि तुम्हें किसी ने कुछ किया हुआ है। नज़रिया वैद्य नज़र से बीमारी को पकड़ते हैं। नज़र से कई बीमारियाँ आप भी पकड़ते हैं। जैसे पीलिया हो गया तो नज़र से नहीं पकड़ते हो क्या! टी.बी. हो गया तो भी नज़र से पकड़ लेते हो। इस तरह और भी कई बीमारियाँ हैं, जिनके लक्षण चेहरे और शरीर के अन्य हिस्सों पर होते हैं। मैंने पढ़ा कि क्या बीमारी है। अब वो कह रही है कि किसी ने कुछ किया हुआ है। मैं समझ गया कि यह कौन लोग करते हैं। मेरे पास अधिकतर लोग इसी तरह के आते हैं, जो दुखी, लाचार होते हैं।

कोई कहता है कि फ़लाने स्कूल में बड़ी अच्छी पढ़ाई है, वहाँ



के बच्चे बड़े तेज़ हैं। मैं कहता हूँ—नहीं। वो पहले ही चालाकी कर रहे हैं। वो पहले ही उन्हीं बच्चों को दाखिला दे रहे हैं, जो तेज़ हैं, बुद्धिमान हैं। वो चुन ही अच्छों को रहे हैं। यदि किसी नालायक को अच्छा बनाएँ तब बात है। कोई मत सोचे कि फौज में लाकर हट्टा-कट्टा बनाते हैं। फौज में बेकार खुराक है। आटा पुराना होता है; सब्जी बासी होती है। घूसखोर लोग हैं; अच्छे दाम पर घटिया सामान लेते हैं। दुनिया यहाँ दूध में पानी डालती है, वहाँ पानी में दूध डालते हैं। जो माँसाहारी हैं, वो नरक खाते हैं। मरी हुई भैंसों को भी काटकर साथ में दे देते हैं। मैंने बुचड़खाने में देखा। वो नीबू जितना संतरा देते हैं खाने को। मेरे लिए कहते थे कि इसे सप्लाई में नहीं भेजना है, झंझटी है। मैंने कहा कि बेकार चीज़ें दे रहे हो..... सड़ी हुई सब्जी..... नीबू जितना संतरा।

तो वहाँ पहले से ही छॉटकर लिए हैं। सेहत अच्छी होनी चाहिए, जंप मारना आना चाहिए। पहले ही सेहतमंद आदमी को छॉटते हैं। बाद में खिचड़ी निकालते हैं। कोई यह सोचकर न बैठे कि वहाँ बुआ बैठी है—भोजन खिलाने के लिए। फौज जितना बेकार भोजन कहीं नहीं है। मैं बाजार से सब्जी मँगवाता था। 2 किलो दूध लाता था; डेढ़ किलो पीता था और आधा किलो का पनीर निकालता था। कोई न कहे कि खिलाकर तगड़ा करते हैं। हाँ, जे.सी.ओ. और बड़े आफिसरों को अच्छा मिलता है। क्योंकि चमचागिरी करने वाला प्रमोशन के बारे में सोचकर अच्छा भेजता है, छॉटकर भेजता है। यह है फौज की कहानी। बाकी को भोजन अच्छा नहीं मिलता है।

तो पहली बात तो यह कि मेरे पास आ ही वो लोग रहे हैं, जो बीमार हैं, दुखी हैं। उनके प्रति मेरे दिल में धारणा है कि यह उम्मीद से आया है। पर मेरी रुचि नहीं है इसमें। इसमें मेरी लग्न नहीं है। आपकी समस्या को दूर करना मुश्किल नहीं है। यह सिद्ध लोग भी कर सकते हैं। मुश्किल काम है—आत्मा का कल्याण। इसलिए उस समय मेरी राय होती है कि भक्ति में जोड़ो, नाम दिलाओ।

अब सरदार जी बोल रहा है कि किसी ने कुछ किया है, यहीं से फूँक मारो। मैं कहता हूँ कि यह काम मैं नहीं करता हूँ। कोई कहता है कि सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दो। मैं कहता हूँ कि नाम-दान के समय एक बार हाथ रखा था, वही काफ़ी है; बार-बार का नाटक नहीं करना है। सब चीज़ें उसी में मिल जाती हैं।

तो दूसरे, मेरे पास प्रेतात्माओं वाले आते हैं। पर कई नाटक वाले भी मिल जाते हैं। मैं हर आश्रम में सत्संग एकाग्रता से करता हूँ; कहीं भी ढिलाई नहीं करता हूँ। जैसे माँ बच्चे की खुराक में ढिलाई नहीं करना चाहती है, ऐसे ही मैं सत्संग बड़ी लग्न से करता हूँ। यह मैं खानापूर्ति के लिए नहीं करता हूँ, रुचि से करता हूँ। मैं आश्रम में गया तो दरवाजे के अन्दर एक लड़की लंबी लेटी हुई थी। मुझे किसी ने कहा कि गुरु जी, यह लड़की है, ठीक-ठाक आई थी, यहाँ आकर नुक्स हो गया है। यह शब्द सुनने के साथ मुझे चिढ़ आती है। पहली बात तो यह कि मेरा मानना है कि हमारे आश्रम में भूत की नानी भी नहीं घुस सकती है। मेरी मान्यता है कि प्रेतात्मा देखकर काफ़ी दूर भाग जाती है, टिकती नहीं है। प्रेतात्मा तो जानती है। वो नहीं टिकती है। तो मैंने कहा कि ऐ लड़की! उठो! क्या है? वो आँख न खोले। मुझे एक अनुभव है, 40 साल हो गये; अनुभव हो गया है और यह बढ़ता जा रहा है। अब सवाल उठा कि आँख क्यों नहीं खोल रही है? कपट आँखों से पढ़ा जाता है; इसलिए वो आँख नहीं खोल रही है। फिर शरीर के मसँल भी बताते हैं। कोई गुस्सा हो गया तो पता चलता है। गुस्से में चेहरा बदल जाता है; चेहरे के मसँल बदल हो जाते हैं, आँखें बदल जाती हैं। मैंने एक ट्रिक अपनाई। वो आँखों से पढ़ने नहीं दे रही है। मैंने कहा कि यह पाखण्डी है। पूरे भाव चेहरे पर आ रहे थे। मैंने कहा कि इसे कुछ भी नहीं है, उठाओ, गेट के बाहर करो। जो भय है, वो भी चेहरे पर आ जाता है, प्रेम भी चेहरे पर आ जाता है। वो, जो शिवरिंग कर रही थी, वो भी खत्म हो गयी। इससे सिद्ध हो गया कि वो नखरा कर रही थी। मेरे पास माताएँ-बहने आती हैं तो उस समय

मेरी सोच और होती है। कोई लड़की आती है तो पहली सोच होती है कि यह पाखण्ड है। क्यों? इसके पीछे कारण होता है। माताएँ कम नाटक करती हैं, लड़कियाँ अधिक करती हैं। एक माई ने कहा कि जबसे लड़की की सगाई हुई है तब से इसे दौरे पड़ रहे हैं। बात यह थी कि वो शादी नहीं करना चाह रही थी। मुझे अनुभव हो गया है। तो मैंने माँ-बाप को कहा कि बाहर जाओ। बाद में उससे पूछा कि क्या बात है? वो कहीं ओर शादी करना चाह रही थी। जहाँ की जा रही थी, वहाँ उसकी इच्छा नहीं थी। इसलिए नाटक कर रही थी कि उन्हें पता चले तो टूट जाए और जहाँ वो चाहती है, वहाँ हो। कोई जब भी आँख बंद करके कहे कि भूत आ गया, उसके लिए मेरी सोच होती है कि यह पाखण्ड कर रहा है। आँख हृदय का दर्पण है। आश्रम में आकर कोई कहे कि प्रेतात्मा आ गयी तो मेरी सोच होती है कि यह धोखेबाज है; यह बड़ा ग़लत है। बात यह होती है कि वह परेशान है। क्योंकि मेरे पास आकर प्रेतात्मा कोई खेल नहीं खेल सकती है। मेरे नामी के पास नहीं आ सकती है तो मेरे पास कैसे आ सकती है!

मेरा मानना है कि स्त्री बहुत बुद्धिमान नहीं है। लड़की हो सकती है। जिस स्त्री ने बच्चे को जन्म दिया, उसका बुद्धिमान खत्म हो जायेगा। बालक को जन्म देने के बाद भोंदू हो जाती है। बड़ी त्रासदी से गुज़रना पड़ता है। तो बड़ी तादाद में ब्रेन की कोशिकाएँ टूटती हैं। वो दुबारा वापिस नहीं आ सकती हैं।

**नारी तेरी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ॥**

जन्म देकर वो बहुत कुछ खो देती है। बड़ा कठिन जीवन है नारी का। यदि शादी नहीं हुई है तो शातिरपना बड़ा है। लड़की काफ़ी तेज़ है; नारी नहीं है। उससे हमदर्दी रखना। बच्चे के जन्म के बाद बड़ा कुछ खो चुकी है। नारी से रिश्ता केवल शारीरिक ही नहीं है; बड़ा गहरा है। यह वैचारिक संबंध भी है; यह भावात्मक संबंध भी है। मैं कहता हूँ कि संभोग संतान-उत्पत्ति के लिए हो, आनन्द के

लिए नहीं। स्त्री का गर्भ-द्वार सबसे गंदा अंग है। वो आनन्दमयी नहीं है। यह भूल केवल इंसान कर रहा है। वो केवल वंश आगे बढ़ाने के लिए हो। आदमी संभोग करके घृणा महसूस क्यों नहीं करता है? यह प्रश्न आपको पागलपंथी का लगेगा। यह केवल संतानोपत्ति के लिए हो। पर यह नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि फिर कोई आयेगा ही नहीं। फिर कहेंगे कि देवते भी छुड़वा देता है; सब चीजें छुड़वा देता है; स्त्री-पुरुष का मिलना भी रोक रहा है।

प्रेम में भय नहीं है। वासना में भय है। आदमी वासना में चोर भी बन जाता है। खुला भाव है तो भय ही नहीं रहता है। साहिब ने मनुष्य को बुरा लताड़ा। देखो, कैसे लताड़ दिया! साहिब ने कोई पक्षपात नहीं किया।

### कामी कुत्ता तीस दिन, नर छः ऋतु बारह मास ॥

साहिब देखो, आदमी के साथ कठिन व्यवहार कर रहे हैं। आदमी का कचूमर निकाल दिया है। कुत्ते को कामी कहा जाता है। पर उससे भी आदमी को नीचे गिरा दिया है। कुत्ता तो 30 दिन तक कामी रहता है, पर —

### नर छः ऋतु बारह मास ॥

कुत्ता सूँघता है। स्त्री को भी और आदमी को भी। जानवरों से सीखने को मिलता है। मैं दो दिन बाहर रहकर फिर राँजड़ी गया तो छत पर खड़े होकर सेवादारों को कहा कि 2 दिन में इतना ही काम किया है! मेरी आवाज़ सुनकर दूर गाइयों ने चिल्लाना शुरू कर दिया ताकि मैं तंग पड़कर उनके लिए फुलके ले जाऊँ। सुबह भी ऐसा ही करता हूँ।

तो साहिब कुत्ते के लिए कह रहे हैं—

### कामी कुत्ता तीस दिन।

कुत्ता कैसे कामी है? कुत्ता केवल कार्तिक के महीने में संभोग करता है। क्योंकि उस महीने शरीर में वीर्य बनता है। तब उतावला बनता है। यह नियम है। जिस कुत्ते को सबसे कामी बोला, उससे जोड़कर

आदमी को लताड़ रहे हैं। बहुत बड़ी सजा दे दी। यह क्यों बोल रहे हैं? कुतिया अगर प्रेग्नैन्ट है तो कभी भी संभोग नहीं करता है। यदि एक दिन पहले भी प्रेग्नैन्ट (गर्भवती) हुई है तो भी नहीं जाता है पास में। कितना कण्ट्रोल है! बेहद कंट्रोल है। सन्यासी को कहा कि बच्चों में नहीं उलझना। यह तो आधार दे दिया कि इन्हीं को पकड़े रहो। यह उलझाया गया। महात्मा जानता है कि मेरा एक रूप बाहर रहेगा तो वो तंग करेगा; तब अपने लक्ष्य की तरफ नहीं जा पाऊँगा।

तो कुत्ते से आदमी को नीचे गिरा दिया। आदमी बड़ा अशिष्ट है, उतावला है। सीधा कह दिया।

### देव चरित्र सुनो रे भाई ॥

इस शब्द में साहिब ने बड़े-बड़ों की खबर ले ली। वो कह रहे हैं कि ये बातें शास्त्र में लिखी हैं, पढ़ लो। कहा कि मेरी बात पर भरोसा नहीं होता है तो पढ़ लो।

जगत में काहून मन वश कीना ॥  
 भरतखंड में भरत लीना जोगी, मृग सुत मन हर लीना।  
 ता कारण नर देहहि त्यागी, मृग शरीर चित दीना ॥  
 सूखे पत्र पवन भख रहते, पाराशर से ज्ञानी।  
 सो तो रूप देख वनीता को, काम कन्दला ठानी ॥  
 शृंगी ऋषि बन भीतर रहते, विषय विकार न जाना।  
 पठई नारि भूप दशरथ ने, पकड़ अयोध्या आना ॥  
 पार्वती शी पात्नी कहिये, तिनका मन क्यों डोला।  
 चकित हुए शिव देख मोहनी, हा हा करके बोला ॥  
 सोलह सहस उरवशी जाके, ताका मन बौराना।  
 गौतम ऋषि की नारी अहिल्या, ताहि देख ललचाना ॥  
 नारद मुनि से तपसी कहिये, कन्या हाथ दिखायो।  
 माग्यो रूप भूप श्रीपति को, स्वांग बंदर को लायो ॥  
 जमदग्नि जाकी नारी रेनुका, जात जमुन जल भरने।

मोही देख भूप की लीला, चकित भये दो नयने ॥  
 एकही नाल कँवल सुत ब्रह्मा, जग उपराज कहाये ।  
 कहैं कबीर इक नाम भजन बिन, जीव विश्राम न पावे ॥

कह रहे हैं कि माया ने किसे नहीं ठगा ? इसने सबको बस में किया ।

**चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे ॥**

यह क्या है चश्म दिल? यह क्या है आँख? क्या ऐसी आँख हैं, जो सहज हो? परमात्मा ने हमारी बाहरी आँख का सिस्टम कोई कठिन नहीं रखा। दिव्य-दृष्टि की बात कही गयी तो कहीं कठिन तो नहीं है? जैसे आप हम सब बाहरी आँख से देख रहे हैं। इसका कोई भी सिस्टम कठिन नहीं है। नाक से सूँघ रहे हैं। इसका सिस्टम प्रकृति ने सहज रखा। कोई कठिन नहीं है। आँखों का सिस्टम भी आसान है। ऐसा नहीं है कि हमें बड़ी मुश्किल से सुनाई पड़ता हो या बड़ी मुश्किल से हम देख पाते हों। नहीं, यह सहज है। इस तरह अन्दर की आँख या दिव्य-दृष्टि को पाने के लिए कोई दुनिया छोड़ने की ज़रूरत नहीं है, कोई भागीरथी प्रयास करने की ज़रूरत नहीं है। यह सबके पास है और सब देख भी रहे हैं इससे। आप इस आँख से भविष्य देख रहे हैं, भला-बुरा देख रहे हैं। चिंतन करके देख रहे हैं। हरेक इससे लाभ ले रहा है। आप कहते हैं कि कुछ कृपा करो, अन्दर के चक्षु खोलो। यह आन्तरिक चक्षु काम कर रहे हैं। आपकी सुरति में आँख है। यह सिस्टम जटिल नहीं है।

जितने भी बुरे लोग हैं, उनमें भी ज्ञान है, आत्मभाव है, त्याग है। ये कहाँ से आए? ये 16 गुण परम-पुरुष के हैं। मित्रभाव सबमें दिखता है, प्रेमभाव सबमें दिखता है। ये गुण आत्मा में हैं। ये सद्गुणों से भरी है। ये है ही सत्य। इसलिए इसमें विवेक है, ज्ञान है, वैराग्य है। ये चीजें सत्य से उत्पन्न होती हैं। आग से तपश और रोशनी खुद-ब-खुद पैदा होते हैं। इस तरह सत्य से ये चीजें आईं।

मैंने खूँखार लोगों से भी व्यवहार करके देखा। वो भी बड़े समर्पित मिले। एक दिन कुलदीपसिंह कह रहा था कि आपके लिए जान भी दे सकते हैं। मैंने कहा कि हमें जान लेनी नहीं है, जान देनी है। एक

दिन कहा कि फ़लाने से निपटता हूँ। मैंने कहा कि मैं अपने तरीके से निपट लूँगा, तू अपने वाला निपटने का तरीका रहने दे। फिर मेरे और बदमाश में क्या अन्तर रह जायेगा! मैं इंसान को एहसास करवा देता हूँ कि उसने ग़लती की है। यह शैली ठीक है। हमें किसी को भी हलके में नहीं लेना है। किसी को कमज़ोर देखकर हम बल का प्रयोग करने लग जाते हैं। यह ठीक नहीं है।

**दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाथ।**

**बिना साँस की फूँकनी, लोहा देत गलाय ॥**

मैंने आजतक किसी को बल नहीं दिखाया; डराया-धमकाया नहीं। यह अधम कर्म है। हरेक में आत्मा है।

...तो हरेक में यह आँख काम कर रही है। पर हमारी आदत बन चुकी है—बाहरी आँख से देखने की। उस आँख में सभी दिशा से देखने की क्षमता है। आँखें नहीं हैं, तो भी देख सकती है। यह आपकी सोच है; यह आपका चिंतन है। जब आप सोचते हैं कि फ़लाने आदमी से लड़ूँगा तो घाटा है तो आप दिव्य-दृष्टि का ही तो इस्तेमाल कर रहे हैं। जब आप सोचते हैं कि फ़लाना काम करूँगा तो हानि हो जायेगी तो आप दिव्य-दृष्टि से ही देखकर पता लगा रहे हो कि इस काम में हानि हो जायेगी। यह दिव्य-दृष्टि हर काम का रिज़ल्ट भी बताती है।

मन चाहता है कि आप दिव्य-दृष्टि को नहीं समझ पाएँ। जब आपकी दिव्य-दृष्टि खुल जायेगी तो आप अन्दर के शत्रुओं को समझने लग जायेंगे। आपको पता चलता जायेगा कि कौन-कौन शत्रु आपको धोखा दे रहे हैं। आपको तब पता चल जायेगा कि मन आपको दुनियावी चीज़ों में भ्रमित कर रहा है। इसलिए यह मन आपको भटका रहा है। मन पर सवार रहना है। सुरति का ही सारा खेल है।

....तो मन ने सबको अपने वश में किया हुआ है। फिर एक सिद्धांत है कि 50 साल के बाद यह काम नहीं करना है। क्योंकि तब माताएँ रजोवृत्ति में नहीं आती हैं और पुरुष में वीर्य नहीं बन पाता है। अब एक 80 साल की बूढ़ी आकर मुझे कह रही थी कि बूढ़े को समझाओ,

अभी भी शरीर का पिंडा नहीं छोड़ रहा है। वो बुढ़िया आकर खुद कह रही थी। गाय बूढ़ी हो जाए तो बैल छूता भी नहीं है। इंसान बेहद ग़लत है। यह खानपान से भी ग़लत है। यह सृजन का सबसे ख़तरनाक प्राणी है।

...तो मैं कह रहा था कि प्रेतात्माएँ नहीं आ सकती हैं। वो आती क्यों हैं? पहला—प्रतिशोध के लिए। ये भयंकर सज़ा के तौर पर मिली है योनि। कुत्ता भी ठीक है; भूख लग रही है तो कुछ-न-कुछ खा रहा है; सोना है तो सो भी रहा है। पर वो तरसता है, क्योंकि उसे पिंडा नहीं है। नींद लगती है तो कोई शरीर ढूँढ़ता है। भूख लगती है तो भी शरीर ढूँढ़ता है। किसी के शरीर में बैठकर खाता है। तो दूसरा, प्रेतात्मा आती है—आसक्ति के कारण। इसका उदाहरण देता हूँ। मैंने दिल्ली में पूछा कि जिन्हें प्रेतों से तक्रलीफ़ थी, हाथ खड़ा करो। एक माता ने भी किया। मैंने कहा कि नाम लेकर तक्रलीफ़ ठीक हो गयी। कहा—हाँ। मैंने कहा कि बताओ, प्रेतात्मा कब से आने लगी? कहा—गुरु जी, पड़ौस में एक लड़का रहता था; वो मर गया। वो मुझमें आने लगा। अब सवाल किया कि ईमानदारी से बताना कि क्या उससे संपर्क था? कभी ऐसे होता है कि आपका प्रेम नहीं है, आपका रुझान नहीं है, दूसरे का होता है। तो मैंने पूछा कि वो मरने के बाद कब आया? कहा कि उसी दिन। यानी मरते समय उसके चिंतन में वो स्त्री थी। इसलिए वो वहीं समाया। जिसमें ध्यान होगा, वहीं उलझेगा। मैंने कहा कि क्या करता था, संकोच न करना? उसने कहा कि ऐसी स्थिति में ले जाता था कि मैं हिल न सकूँ। फिर ग़लत कार्य करता था।

इसलिए अधिकतर माताओं में आते हैं। तो तीसरा, उन्हें एक शरीर चाहिए। तब कॉन्शिएस में प्रवेश लेते हैं। इसके लिए वो भोले लोगों को ढूँढ़ते हैं। जो आप महसूस कर रहे हैं कि फ़लाना हूँ, इसमें प्रवेश लेते हैं। इसलिए आपमें नहीं आ पायेंगे। उन्हें रोटी खानी होती है, आराम करना होता है। इसके लिए शरीर चाहिए। ऐसे प्रेत कहीं ग़लती से प्रेत योनि में आ गये होते हैं। वो किसी को सताना नहीं चाहते हैं। क्या इनमें ताक़त अधिक है? बहुत अधिक। कहाँ से आ गयी ताक़त इनमें? क्योंकि उस समय आत्मा के थोड़ा नज़दीक होते हैं। स्थूल शरीर का पर्दा उतर



चुका होता है। आत्मा में शक्ति है ही है। आदमी को भयभीत भी कर सकते हैं। ब्रेन में बैठकर घुमा सकते हैं। एक तो प्रकट हो जाते हैं; एक प्रवेश लेते हैं। तीसरे इतनी बारीकी से आयेंगे कि आपको पता भी नहीं चलने देंगे। ये बहुत खतरनाक होते हैं।

...तो मन को क्या पड़ी कि आत्मा को तंग कर रहा है? जैसे प्रेतात्मा को पिंडा चाहिए, ऐसे ही मन को आत्मा चाहिए। नहीं तो कुछ काम नहीं हो पायेगा। वो नहीं चाहता है कि कुछ आत्माएँ निकल जाएँ। वो सावधान है। बेशुमार आत्माएँ हैं। यदि थोड़ी-सी निकल गयीं तो क्या फ़र्क पड़ता है? नहीं, फ़र्क पड़ता है। क्योंकि वो जानता है कि यदि एक भी निकल गया तो कइयों को निकाल ले जायेगा और मेरे लिए ख़तरा हो जायेगा। इसलिए उलझाता है। यदि आप चिंतन करेंगे तो यह दिखेगा। जैसे शरीर में धड़ दिख रहा है, गर्दन दिख रही है, यह दिखेगा। पर यह चिंतन नहीं करने दे रहा है, किसी भी तरह आत्मा के नज़दीक नहीं पहुँचने दे रहा है। इसलिए इस मन से सावधान रहना।

**तेरा बैरी कोई नहीं तेरा बैरी मन ॥**

नाम के बाद आपको सुरक्षित कर दिया। अब कुछ नहीं कर सकता है।

**नाम होय तो माथ नमावे। ना तो यह मन बाँध नचावे ॥**

तो मेरा मानना है कि हमारा पंथ दुनिया का सबसे बड़ा पंथ है। यह आप जानते हैं, पर बता नहीं पाओगे। नाम के बाद ख़ास क्या मिला, वो भी नहीं बोल पाओगे। और वो आपके साथ हुआ।

सबसे पहले आपको होश में कर दिया। आप बेहोश थे। सच में बेहोश थे। मन के अन्दर आप गुम थे। मथ कर आपको बाहर कर दिया है। पर यह काम ऋषि-मुनि नहीं कर सके। होश में कोई नहीं ला सकता है। हम होश में कर देते हैं।



# कौन है काल पुरुष व परम पुरुष ? आओ इस भेद को थोड़ा समझें !

“वेद चारों नाहिं जानत, सत्य पुरुष कहानियाँ ॥”

धर्म दास के पूछने पर आदि उत्पत्ति का रहस्य संसार को सब से पहले कबीर साहिब जी ने दिया। आप ने कहा सत्य पुरुष पहले गुप्त और अकेले थे। वे कभी बने ही नहीं, न ही कभी मिटेंगे। जिस वस्तु का सर्जन होता है वह नष्ट भी अवश्य होती है। कबीर साहिब कहते हैं मैं तब की बात कहता हूँ जब साकार, निराकार, लोक-लोकांतर, सूर्य, चांद, तारे, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, काल निरंजन (मन) भी नहीं बना था।

सब से पहले उस गुप्त, अगम पुरुष ने अपनी इच्छा से शब्द उच्चार। जिस से अद्भुत श्वेत प्रकाश उत्पन्न हुआ, जो इस संसारी प्रकाश जैसा नहीं था। जिस का एक-एक कण क्रोड़ों सूर्यों को भी लज्जा दे। अगम पुरुष स्वयं उस प्रकाश में समा गये और वह प्रकाश जीवित हो गया। अगम पुरुष जो पहले गुप्त थे, प्रकाश में आने से उनको सत्य पुरुष, परम पुरुष, दयाल पुरुष कहा गया। वो ही अमर लोक सतलोक कहलाया।

फिर उन्होंने अपनी मौज से अपने ही स्वरूप को अपने में से शटका दिया, अनन्त बूंदें हुई। जो वापस उस अद्भुत अनन्त प्रकाश में आई। लेकिन उनका अपना अलग वजूद रहा वो उस अद्भुत अनन्त प्रकाश में मिक्स नहीं हो पाई। क्योंकि सत्यपुरुष ने इच्छा की कि इनका अलग अस्तित्व रह जाये। वे ही जीव (आत्मा) कहलाई। वे सब जीव उसी प्रकाश में विचरण करने लगे जैसे पानी में मछली। अमर लोक में आत्मा का प्रकाश सोलह सूर्य जितना है।

इसके बाद सत्य पुरुष ने सौलह शब्द उचारे जिससे इनके सोलह शब्द पुत्र उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् सत्य पुरुष का पांचवां पुत्र निरंजन, जिसको निराकार, निरंजन, नारायण, अथवा मन आदि नामों से जाना जाता है जिसे संसारिक लोग राम, ब्रह्मा, आदि निरंजन, कादर, क्रीम, प्रमेश्वर, प्रमात्मा, हरी, हरि, अद्वैत, भगवान, तथा अलख निरंजन आदि नामों से याद करते हैं। निरंजन ने 70 युग तक एकाग्र चित होकर परम पुरुष का एक पग पर खड़े होकर ध्यान किया। इस तप से खुश होकर सत्यपुरुष ने निरंजन को मानसरोवर दीप में जाकर रहने को कहा।

इस स्थान पर निरंजन बहुत खुश हुआ और फिर से 70 युग तक एक पग पर खड़े हो कर परम पुरुष का ध्यान किया। परमपुरुष के प्रसन्न होने से निरंजन ने कहा या तो मुझे अमर लोक का राज्य दो नहीं तो अलग से एक न्यारा देश दे दो जिस पर मेरा पूरा अधिकार हो। सत्यपुरुष ने कहा तुम्हें 17 चौंकड़ी असंख्या युग का राज्य देता हूं। अपने बड़े भाई कुरम से बीज लेकर शून्य में एक अलग ब्रह्मांड की रचना बनाओ। निरंजन ने बिनती किए बिना कुरम के तीन सीस काट डाले और उनके पेट से पांच तत्व का बीज छीन लिया। इस तरह निरंजन ने 49 क्रोड़ योजन पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, तारे सप्त पाताल, सप्त लोक आदि सब बना दिये और शून्य में रहने लगा लेकिन वहां जीव नहीं थे, सोचा जीव नहीं तो ब्रह्मांड का क्या लाभ। अतः उसने पुनः 64 युग तक फिर परमपुरुष का ध्यान किया। परम पुरुष ने पूछा अब क्या चाहते हो ? निरंजन ने कहा

जीव ही नहीं है तो राज्य किस पर करूँ। इस लिए कृप्या कर थोड़े से जीव मुझे भी दे दो।

अब परमपुरुष ने आदि शक्ति की उत्पत्ति कर उसे अनन्त आत्मायें देकर कहाँ हे ! पुत्री मानसरोवर में निरंजन के पास जाओ और मिलकर सत्य सृष्टि करो। पांच तत्वों से बनी रूदर मांस वाली नहीं (यानि आत्माओं को शरीरों में डालने की आज्ञा नहीं दी गई)।

निरंजन आद्या शक्ति का सौंदर्य देख कामुक हो गया तथा उसे निगल गया। यह परमपुरुष को बुरा लगा और निरंजन को शाप दे दिया कि तू एक लाख जीवों को रोज निगलेगा तो भी तेरा पेट नहीं भरेगा और सवा लाख उत्पन्न करेगा मगर तू सत्यलोक नहीं आ सकेगा। तब से इसका नाम काल पुरुष हुआ। सत्य पुरुष ने सोचा निरंजन ने पहले कुर्म के तीन शीश काटे फिर आदि शक्ति को निगल लिया, तो विचार किया कि निरंजन को मिटा देता हूँ। सोचा इसे मिटा दिया तो सोलह पुत्र जो एक नाल में हैं वे भी मिट जाएंगे और जो मैंने 17 चौकड़ी असंख्य युग का राज्य दिया है, मेरा शब्द भी कट जाएगा।

परम पुरुष ने अपने को मथ ज्ञानी पुरुष (कबीर साहिब योग जीत) को निकाला वास्तव में वो खुद ही सत्यपुरुष थे और उसे निरंजन की गलतियाँ बताकर कहा निरंजन को मानसरोवर से निकाल दो (मानसरोवर अमरलोक का हिस्सा है) तांकि वो सतलोक न आ सके। साहिब की आज्ञा से योगजीत ने निरंजन को शून्य में फेंक दिया। वहाँ निरंजन डर से सम्भल कर उठा तो आदि शक्ति परमपुरुष का ध्यान कर उसके पेट से बाहर आ गई और निरंजन को देख डरने लगी।

अब निरंजन ने आदि शक्ति को प्यार से कहा मैं पाप पुन्य से नहीं डरता मेरे से इसका हिसाब लेने वाला कोई नहीं मैं आगे भी पाप पुन्य

कर्मों का जाल ही बिछाऊंगा, मुझ से मत डरो। परमपुरुष ने तुम्हे मेरे लिए रचा है। आठ भुजाओं वाली आदि शक्ति काल निरंजन के साथ सहमत हो गई और दोनों एक साथ रहने लगे, जिस से इनके तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी पैदा हुए।

निरंजन ने आद्या शक्ति को कहा जीव और बीज तुम्हारे पास है और तीनों पुत्र भी सौंपता हूं। मैं शून्य में निराकार रूप में समाऊंगा और मन बन कर सभी जीवों के साथ रहूंगा। मेरा भेद किसी को नहीं देना। मेरा कोई दर्शन नहीं कर सकेगा, चाहे खोजते खोजते जन्म गवादे। तुमने तीनों पुत्रों के साथ राज्य करना। जब यह बड़े होंगे तो समुन्दर मन्थन के लिए भेजना।

यहाँ नोट करने वाली बात यह है कि काल निरंजन ने आद्या शक्ति को परमपुरुष का भेद छुपाने के लिए आपने साथ मिला लिया और भी देखे तो निरंजन ने आद्या शक्ति को चार खानि व 84 लाख जूनिया कैसे बनाना है इसका पूरा भेद बताकर शून्य में समा गया और कहा मैं मन रूप में हर जीव के साथ रहूंगा है ताकि कोई भी जीव परम पुरुष का भेद न जान पाये।

बच्चे बड़े हुए तो माता आद्या शक्ति ने तीनों पुत्रों को समुन्दर मन्थन के लिए भेजा। इतने में काल निरंजन ने तमाशा किया स्वांस द्वारा पवन में वेद उत्पन्न किये। निरंजन ने वायु में वेद के शब्द किए कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। इस लिए वेद निराकार तक की बात कहता है। वेद उसका पूरा भेद नहीं बता रहा है। **समुन्दर मन्थन के बाद ब्रह्मा को वेद, विष्णु को तेज और शिवजी को विष** मिला। माता ने कहा जो जो तीनों को मिला है अपने पास रख लें।

कबीर साहिब धर्मदास को बता रहे हैं के अब आदि शक्ति ने

पुनः तीनों पुत्रों को समुद्र मन्थन के लिए भेजा तो इतने में आद्या शक्ति ने तीन कन्याओं की उत्पत्ति कर समुद्र में समाने को कहा। जब समुद्र मन्थन हुआ तो तीनों को तीन कन्याएँ मिली। माता पास आए तो माता ने सावित्री ब्रह्मा जी को, लक्ष्मी विष्णु जी को और पार्वती शंकर जी को दे दी। तीनों भाई बड़े खुश हुए तीनों काम के वशीभूत उनमें रम गए। ऐसे में दैत्यों, देवताओं और राक्षसों की उत्पत्ति हुई। जगत की रचना शुरु हो गई।

**ऐका माई जुगति वियाई तिनि चले परवान।**

**एकु संसारी एकु भंडारी, एक लाये दिवान ॥**

सृष्टि रचना के लिए तीनों को अलग-अलग डिउटी दी गई। ब्रह्मा जी को उत्पत्ति करने की, विष्णु जी को पालनकर्ता की और शिवजी को संहारकर्ता का काम सौंपा गया। इसके आगे तेंतिस करोड़ देवी देवता जिनकी संसार किसी न किसी रूप में पूज रहा है यह सारा निरंजन का परिवार हुआ।

आओ, पाँच भौतिक तत्वों में से इसके अस्तित्व को देखें। चार तत्व तो हमें खुली आंखों से नजर आ रहे हैं लेकिन जो पांचवां तत्व आकाश तत्व है वह चारों तत्वों में रमा हुआ है, यह ही निरंजन है।

84 लाख योनियों में से जिस इंसानी देह को निरंजन ने अपने आप जैसा बनाया है, जिसको हरी मंदिर भी कहते हैं उसमें भी पांचवां तत्व जो आकाश तत्व है वहीं काल पुरुष है। जो सभी शरीरों में मन रूप में रहता है। जब के जीव आत्मा का इस निरंजन के किसी भी देश, देवी, देवता व शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो निरंजन ने जीव आत्मा को रोकने के लिए 84 लाख किस्मों के कैद खाने बनाए हैं। जीव आत्मा जो सत्य पुरुष की अंश है यह बिना बाती और तेल के जलती है, यह

बिना आंख के देखती है, बिना पांव चलती है, बिना कानों के सुनती है, इसे कोई काट नहीं सकता, इसे किसी का डर नहीं है। यह निडर है। इसका कभी भी अंत नहीं हो सकता।

शरीर रूपी कैद खानों से आत्मा को आजाद करवाने के लिए पूर्ण संत सद्गुरु से विदेह नाम लेना पड़ेगा। बिना विदेह नाम के जीव आत्मा सन्तलोक नहीं जा सकती।

निरंजन ने जिस बीज रुपी पाँच शब्दों से पांच तत्व के शरीर की रचना की उन शब्दों का स्थान भी शरीर में रख दिया। जिसे काया का नाम कहते हैं। जीव आत्मा को सत्य पुरुष से दूर रखने के लिए काल निरंजन ने जीवों को अपनी भक्ति में लगाने के लिए काया नाम के प्रगट शब्द गुरु मंत्र के रूप में जीवों को दीये जिसमें सभी जीव काया के नाम का सिमरन करने लगे और अन्दर में खोज करने लगे। बड़े-बड़े ऋषी, मुनि, सिद्ध, साधक, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पीर, पैगम्बर, औलिया भी इन शब्दों में उलझ गये। निरंजन ने इस भक्ति से जीव को बड़ी-बड़ी शक्तियाँ, रिद्ध, सिद्ध, पावर, चार तरह की मुक्ती का स्वर्ग दे दिया, यहां तक के सभी साधक निरंजन भगवान् की साधना में रम गए और 70 प्रकार की अनहद धुनों में आनन्द मगन रहने लगे और चुप्प रह कर अनहद धुनों का रस लेने के लिए एकांत की तालाश में रहे। मगर आत्मा का ज्ञान न हुआ ऐसे में आत्मा शरीर से अलग ना हो कर अमर लोक अपने निज धाम न जा सकी।

—विसथार के लिए देखें पुस्तक अनुराग सागर वाणी

# हर युग में आये साहिब

मैं हर युग में आकर हंसों को अपने धाम ले जाता हूँ। सतयुग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं—

सतयुग चार हंस समझाये। प्रथम राय मित्र से नहीं आये ॥

चित्ररेखा रानी कर नाऊ। तिन सुनि शब्द श्रवण चितलाऊ ॥

राजा रानी पूछत मोही। सो हकीकत कहों मैं तोही ॥

अष्टचौका को शब्द सुनावा। राजा रानी लोक पठावा ॥

दुसरे राय वटक्षेत्र के आवा। सतसुकृति तहँ नाभ धरावा ॥

तिन राजा पूछा चित लायी। तब तेहि भेद कह्यो समझायी ॥

पान परवाना राजहि दीन्हा। राजा वास लोक में कीन्हा ॥

तिसरे राय हरचन्द कहँ आये। बन्ध काटि के लोक पठाये ॥

चौथे पुरी मथुरा में आयी। विकसी ग्वालिन के समझायी ॥

चारि हंस सतयुग समझाये। ते चारों गुरुवंश कहाये ॥

चारिहंस नौ लाख बचाये। शब्द भरोसे घरहि पठाये ॥

साहिब कह रहे हैं कि इस तरह सतयुग में आकर मैंने चार हंसों को तारा और आगे उन चारों ने नौ लाख जीवों का कल्याण किया। आगे कह रहे हैं—

पुनि त्रेता युग कहों विचारी। सात हंस त्रेतायुग तारी ॥

प्रथम ऋषि श्रृंगी समझाये। दुसरे अयोध्या मधुकर आये ॥

तीसरे शब्द कह्यो टकसारा। चौथे बोधे लछन कुमारा ॥

पचवें चलि रावण लगि गयऊ। तहाँ भेंट मंदोदरि से भयऊ ॥

गवीं रावण शब्द न माना। मंदोदरी शब्द पहचाना ॥

छठें चलि वसिष्ठ लगि आये। ब्रह्म निरूपन उनहि सुनाये ॥

सतये जंगल में कियो वासा। जहाँ मिले ऋषि दुर्वासा ॥



सात हंस सातौ गुरु कीन्हा । परम तत्व उनही भल चीन्हा ॥  
सातौ गुरु त्रेता में भयऊ । देइ उपदेश सो हंस पठयऊ ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि त्रेता में मैंने सात हंसों को तारा, जिनमें वशिष्ठ मुनि, श्रृंगी ऋषि आदि भी थे । अब द्वापर युग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं—

त्रेता गत द्वापर युग आया । सत्रह जीव परवाना पाया ॥  
प्रथमें राय चंद विजय कहँ गयऊ । ताकी रानी इन्दुमति रहेऊ ॥  
दुसरे राय युधिष्ठिर कहँ आये । द्रौपदी सहित परवाना पाये ॥  
तिसरे पाराशर पहुँ आये । निर्णय ज्ञान ताहि समझाये ॥  
चौथे राय धुधुल लहि भेदा । बहुत ज्ञान को कीन्ह निखेदा ॥  
पचयें पारसदास समझावा । स्त्री सहित परवाना पावा ॥  
छठये गरुड़बोध हम कीन्हा । विहंग शब्द गरुड़ को दीन्हा ॥  
सातें हरिदास सुपच समझावा । नीमषार महँ उसको पावा ॥  
अठयें शुकदेव पहुँ ज्ञान पसारा । सकल सरब भेद निरवारा ॥  
नवमें राजा विदुर समझाया । भक्तिरूप उन दर्शन पाया ॥  
दशमें राजा भोज बुझाया । सत्य शब्द पुनि उसे चिह्नाया ॥  
ग्यारहें राजा मुचकुन्दहि तारे । बारहें राजा चन्द्रहास उबारे ॥  
तेरहे चलि वृन्दावन आये । चारि ग्वाल गोपी समझाये ॥  
गुरु रूप पुनि पन्थ चलाये । भौसे हंसा आनि छुड़ाये ॥  
बावन लाख जो जीव उबारा । कलियुग चौथे यहाँ पर धारा ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि 17 जीव मैंने द्वापर में तारे । अब कलियुग का वर्णन करते हुए कह रहे हैं—

प्रथमें गोरखदत्त समझाये । तारक भेद हम तुमहिं बताये ॥  
दुसरे शाह बलख को बोधा । पढ़ै आरबी बहुविधि सोधा ॥

तिसरे रामानन्द पहुँ आये। गुप्त भेद हम उन्हें सुनाये ॥  
 चौथे पीर<sup>1</sup> को परचे दीन्हा। पचये शरण सिकन्दर लीन्हा ॥  
 छठे बीरसिंह राजा भयऊ। ताको हम शब्द सुनयऊ ॥  
 सतयें कनकसिंघ समझाये। सोलह रानी लोक पठाये ॥  
 अठएँ राव भूपाले आये। ग्यारह रानी लोक पठाये ॥  
 नौमें रतना बनिन समझाई। जाति अग्रवालिन करत मिठाई ॥  
 दशाँ अलिदास धोबी गयऊ। सात जीव परवाना पयऊ ॥  
 ग्यारहें राजा भोज समझायी। तिन बहु भक्ति करी चितलायी ॥  
 बारहें मुहम्मद कह्यो कुराना। हद्द हुकुम जीव कर माना ॥  
 तेरहें नानक से कह्यो उपदेशा। गुप्त भेद का कहा संदेशा ॥  
 चौदहें साहु दमोदर समझावा। करामात दै जीव मुक्तावा ॥  
 चौदह हंस कलयुग में कीन्हा। गुरु स्वरूप परवाना दीन्हा।  
 पाँच लाख हम पहिले तारे। पीछे धर्मनि तुम पगुधारे ॥  
 वंशन थाप्यों कियो कडिहारा। लाख ब्यालिस जीव उबारा ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि मैंने कलयुग में गोरखदत्त, मुहम्मद साहिब, नानक देव, रामानन्द, राजा भोज सहित चौदह हंसों को तारा। कहा कि पाँच लाख मैंने पहले तारे, फिर तुम आए। तब मैंने 42 लाख और जीवों को उबारा।

साहिब ने धर्मदास को कहा कि हर युग में आता हूँ और जीवों को चिताकर अमर लोक ले जाता हूँ। इस तीन लोक में काल जीवों को सता रहा है। यह देख साहिब ने मुझे भेजा।

तीन लोक जिव काल सतावै। ब्रह्मा विष्णु पार न पावै ॥  
 सत्य पुरुष तब मोहिं पठावा। जीव उबारन मैं जग आया ॥

---

1. पीर-राज गुरु शेख तक्री जी।

# भक्ति को नष्ट करना चाहते हैं ये

---

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह ।  
बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ॥

कभी-कभी मनुष्य भक्ति के सूत्रों को नहीं समझ पाता है ।  
साहिब ने तीनों को महत्व दिया ।

गुरु शिष्य और ईश्वर, मिल कीना भक्ति विवेक ।  
तीनों त्रिधारा बनीं, आगे गंगा एक ॥

आम आदमी, जिसने भी गुरु धारण किया है, गुरु को ही अपना अधिष्ठाता मान लेता है । यहाँ अधिष्ठाता का भाव है कि वो यह मान लेता है कि मेरा सर्वेसर्वा सद्गुरु है; मेरा कर्त्ता-धर्त्ता वो है । गुरु को इष्ट मान लिया । पर गुरु शिष्य को क्या मानता है उस दिन? मैंने पीछे भी बताया कि जिस समय वो दीक्षा देता है, शिष्य को अॅडॉप्ट करता है । जैसे किसी बच्चे को गोद लिया तो आपका हो गया न ! अब उसका सुख-दुख, मान-अपमान सब आपके हो गये । इस तरह गुरु अपनाता है । यह साधारण बात नहीं है । शिष्य का दुख गुरु का दुख होता है । शिष्य की तकलीफ़ गुरु की तकलीफ़ बन जाती है । साहिब कह रहे हैं—

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह ।  
बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ॥

अगर सद्गुरु है तो शिष्य के सुख-दुख में शरीक हो गया । वो

निदान करेगा। उसके साथ में एक ताक़त देता है। अगर पेशे के लिए गुरुआई कर रहा है तो फिर बात अलग है। आप एक चीज़ देखें; कभी लोग कहते हैं कि साहिब-बंदगी वाले कुछ नहीं मानते हैं। नहीं, थोड़ा ईमानदारी से निष्पक्ष होकर सोचें तो आपके सवालियों का जवाब मिल जायेगा। कभी लोग तंग हो जाते हैं। आपके लिए लोगों की ऐसी सोच क्यों है? कुछ कहते हैं कि साहिब-बंदगी नाम सुनकर ही पीछे लग जाते हैं। मैं उनकी बात से सहमत हूँ। आख़िर ऐसा क्यों होता है? क्या हम कोई धर्म-परिवर्तन की दिशा में ले चल रहे हैं? नहीं, यह हमारा लक्ष्य नहीं है, यह हमारा मुद्दा नहीं है। बात तो सामने है न! जब रुहानी रिश्ता गुरु-शिष्य का स्थापित किया तो निंदा का, विरोध का आधार क्या है? आपको बोला कि सात नियमों का पालन करना। पहला, कहा कि सत्य बोलना। दूसरा, कहा कि नशा नहीं करना। तीसरा, कहा कि माँस नहीं खाना। चौथा, कहा कि चरित्रवान रहना। पाँचवाँ, कहा कि चोरी नहीं करना। छठा, कहा कि जुआ नहीं खेलना। सातवाँ, कहा कि हक की कमाई खाना। ये सात सिद्धांत स्थापित किये। अब सत्य बोलना क्यों कहा? क्योंकि—

**साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।**

**जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥**

इसलिए झूठ वर्जित किया। झूठ बोलने से आदमी की बुद्धि भ्रमित हो जाती है। माँस क्यों वर्जित किया? आप सोचें कि आपके बच्चे को कोई काटकर उसका माँस पकाकर खा जाए तो बताओ कि यह काम आपको कैसा लगेगा? आपको अजीब लगेगा। आपको बड़ी पीड़ा होगी। जैसे आप अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, ऐसे सभी कर रहे हैं। भैंस नहीं कर रही क्या? मुर्गी नहीं कर रही है क्या? बकरी नहीं कर रही है क्या? जिन-जिनको आप मारकर, काटकर खा जाते हैं, क्या वो अपने बच्चों से प्रेम नहीं करते हैं? नहीं, वो करते हैं। वैसी ही पीड़ा उन्हें भी मिलती है। इसलिए यह पाप है। फिर नशा क्यों मना किया? शराब का नशा क्या नहीं

ले लेता है इंसान का ! दिमाग ही खराब कर देता है; इज्जत भी चली जाती है; सेहत भी चली जाती है। भांग का नशा भी बड़ा खतरनाक है। मैंने एक को पूछा कि कैसा होता है? वो बोला कि एक बार भांग के पकौड़े खिला दिये किसी ने। मुझे लगा, मानो साँप काटने आ रहा है। कभी बिच्छू-ही-बिच्छू दिखाई दे रहे थे। सीधा लेटता था तो लगता था कि आसमान में उड़ रहा हूँ। उलटा लेटता था तो लगता था कि जमीन में धँसे जा रहा हूँ। मकान टेढ़ा लग रहा था। यह बड़ा अजीब नशा है। पूरी रात कभी खटिया पर तो कभी नीचे आता रहा। जब तक नशा नहीं उतरा यही काम करता रहा। यह समय कैसे गुज़ारा, मैं ही जानता हूँ।

देखा न, दिमाग पर कितना उलटा असर डाला। दिमाग का संतुलन ही खराब हो जाता है। निरा पागल बन जाता है; कुछ भी समझ नहीं आता है। नशा बड़ी खराब चीज़ है। इसलिए कहा कि नशा नहीं करना। फिर कहा कि परस्त्रीगमन नहीं करना। हरेक अपना घर बसाया है। जब उसे पता चलेगा कि उसकी स्त्री का किसी के साथ संबंध है तो पीड़ा होगी उसे। घर में लड़ाई होगी; घर बर्बाद हो जायेगा।

**परनारी पैनी छुरी, मत कोई लाओ अंग।**

**रावण के दस सिर गये, पर नारी के संग ॥**

आप विचार करो कि यह पाप है। हमने एक ही स्त्री के लिए कहा। तो फिर चोरी के लिए कहा। यह भी गलत काम है। दूसरे की मेहनत की कमाई को एक पल में साफ़ कर दोगे तो उसे पीड़ा होगी। फिर जुआ भी ग़लत काम है। फिर हक की कमाई खाने को कहा। किसी से भी कोई धोखा करे तो उसे पीड़ा होती है। अब मुझे बताओ कि विरोध क्यों है? कुछ भी तो ग़लत नहीं है। भक्ति कोई रावण की या हिरण्यकशिपु की तो बता नहीं रहे हैं। एक सर्वशक्तिमान की भक्ति कर रहे हैं। फिर हम सामाजिक भी हैं। जब जय बोलते हैं तो संत-समाज की जय भी बोलते हैं। यानी जितने भी संत हुए, उनकी जय। भक्त-मण्डली की जय भी बोलते हैं। जितने भी भक्त बैठे होते हैं, उनकी भी जय हो

गयी। फिर नगर-बस्ती की भी जय बोलते हैं। यानी मकान भी आ गये। पूरे शहर की जय हो गयी। फिर माता-पिता की भी जय बोलते हैं। फिर सद्गुरुदेव की जय भी बोलते हैं। कभी मधुपरमहंस की जय नहीं बोलते हैं। गुरु की ही जय बोलते हैं। फिर विरोध क्यों है? आखिर इसमें क्या ठीक नहीं है? हम किसी भी पंथ के, किसी भी भक्ति के विरुद्ध नहीं हैं। तमाम भक्तियाँ हो रही हैं। हमने किसी भी धर्म-स्थान को नुकसान नहीं पहुँचाया है। पर एक परमात्मा की भक्ति बोल रहे हैं। तरह-तरह के लोग अपने-अपने इष्ट को मान रहे हैं। विष्णु की भक्ति वाला आज़ाद है। महाकाली का भक्त संतोषी माता के भक्त से लड़ाई क्यों करे? हाँ भाई, रावण की भक्ति कहते तब लोग कहते कि उनकी भक्ति बोल रहे हैं; वो तो बुरा आदमी था, तब हम मानते कि कुछ ग़लती हो रही है, इसलिए लोग नाराज़ हो रहे हैं। पर जब ऐसी बात ही नहीं है तो फिर विरोध की वजह क्या है? क्यों लोग पीछे पड़ रहे हैं? समझें। जो मैं कह रहा हूँ कि प्रेत नहीं मानना, यहाँ है मरोड़े। पहली बात है कि क्यों कहा? इसलिए कि सयाने भ्रमित करके धन लेते हैं। मुझे इसकी ठीक-ठीक जानकारी है। वो पैसे ले लेते हैं, इसमें भी कोई बात नहीं है। पर वो आपकी भक्ति ख़राब कर देते हैं। अनाप-शनाप भक्तियों में लगाकर भक्ति ख़राब कर देते हैं। मेरा मानना है कि यह किसी एक धर्म की समस्या नहीं है। हर धर्म में बुराइयाँ आ गयी हैं।

मैं अपने पंथ का सिद्धांत बताता हूँ। मैं जातिवाद किसी आश्रम में नहीं फैलाने देता हूँ। इससे नुक़सान होगा। उन लोगों को ख़तरनाक मानता हूँ; उन्हें आगे नहीं आने देता हूँ। अगर आएँ तो ताक़त लगाकर पीछे धकेल देता हूँ। यदि बड़ी बिरादरी वाले ही आगे होंगे तो छोटी बिरादरी वाले क्यों आयेंगे? वो कहेंगे कि यहाँ तो बेइज्जती हो रही है। कहीं भगत ही इंचार्ज हों तो बाकी वाले परेशान होंगे। इसलिए जातिवाद को कैंसर से भी ख़तरनाक मानता हूँ। फिर मैं राजनीति में भी नहीं हूँ। कोई किसी भी पार्टी का हो, यहाँ आकर राजनीति नहीं चलानी है। हम

इनसे दूर हैं। इसलिए पाँच-पाँच लोग सभी बिरादरी के रखता हूँ। जिस आश्रम में महसूस करता हूँ कि नियम भंग हो रहा है, इंचार्ज अपनी ही जाति वालों को बटोर रहा है तो उस आश्रम की कमेटी को ही भंग कर देता हूँ। फिर उसकी कमाण्ड खुद अपने हाथ में ले लेता हूँ। हमारा मसला रूह है। वो सबमें है। यह हमारी नीति साफ़-साफ़ है। इसमें कोई सूई की भी गुंजाइश नहीं है। हमारी बात साफ़-साफ़ है। मैं अपनी जाति बोलता भी नहीं हूँ। तो लोग सोचते हैं कि शायद हरिजन हैं। गुरुदेव ने कहा था कि जिक्र ही नहीं करना; सन्यासी की कोई जाति नहीं होती है। मैंने कभी नहीं बोला कि फ़लानी पार्टी को वोट देना। यह दिशा-निर्देश किसी को नहीं दिया है। तो मैं कहना चाहता हूँ कि इससे नुक़सान हो जाता है। इसलिए कहीं रामदासी इंचार्ज है, कहीं ठकुरा, कहीं तरखान। जिस भी पंथ में जाति की बात होगी तो समझना कि राजनीति वाले हैं। रियासी में रामदासिये, भगत अधिक थे। तो मैंने कहा कि सभी आने चाहिए। एक पंडित था; उसने कहा कि यहाँ थोड़ी छुआछूत भी होती है। मैंने कहा कि आज महत्व नहीं रह गया है। वो बोला कि वो लोग लंगर में लगते हैं तो पंडित नहीं आना चाहते हैं। वो कुछ लोगों को लाया। तो मैंने कहा कि कुछ दिन पंडितों को भोजन बनाने दो। यदि इसी कारण से नहीं आ रहे हैं तो उन्हें ही मौका दो। उन्होंने 2-4 दिन बाद हाथ जौड़ दिये, कहा कि हम रौंजड़ी आयेंगे, यहाँ नहीं टिक सकते। मैंने कहा कि क्या हुआ? कहा कि 2 किलो तेल माँगते हैं तो एक पाव लाकर पटक देते हैं। 2 किलो टमाटर माँगते हैं तो एक पाव लाकर देते हैं। ये हमें आपकी नज़रों में गिराकर भगाना चाहते हैं। कहा कि इन्होंने अपना सिक्का जमाया हुआ है तो आदत नहीं छोड़ रहे हैं। वो भाग गये।

कटुआ में बड़ी बिरादरी वाले थे तो छोटी बिरादरी वालों की बेइज्जती करते थे। उन्होंने कहा कि साहिब तो अलग बात करते हैं; वो तो जाति-पाति की बात नहीं करते हैं; साहिब ने ही इन्हें मुकर्र किया है तो अंदर से साहिब की ऐसी ही रज़ा होगी। मैंने वो कमेटी ही भंग कर

दी। वो ट्रस्ट खुद देखता हूँ। क्या कहना चाहता हूँ कि जो भी बिरादरी बटोर रहा है, वो कहीं से भी परमात्मा का भक्त नहीं हो सकता है; वो लीडरी करेगा। हम दोनों काम नहीं कर रहे हैं। हम शुद्ध रूप से सन्यासी हैं। मैं पेट पालने के लिए कुछ नहीं कर रहा हूँ। जितने भी दुनिया के धर्म हैं, सब पैसे के लिए काम कर रहे हैं। मोटी-मोटी रकम, जो लोगों से मिलती है, उसे अपने निजि स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। यह बात किसी एक धर्म की नहीं है। जितने भी धर्म या जाति के अगुआ हैं, वो सब मेरे खिलाफ़ हैं। सभी सभा के लोग मेरे खिलाफ़ हैं। कई बार वो कबीर जयंती पर मेरी नकल भी करते हैं। पर वो चंदा इकट्ठा करने लगते हैं। घरों-घरों में घुसकर पैसे बटोरने लगते हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि साहिब का कितना नाम रोशन करेंगे! हमारे नामियों के पास भी जाते हैं। उनका मुद्दा इलेक्शन होता है। यह मुद्दा हमारा नहीं है। फिर अगुआ उसे करते हैं, जिसे संतमत की ए.बी.सी. भी पता नहीं होती है। मैं जानता हूँ कि हमारे आगे जो माथा मार रहा है, वो बेवकूफी कर रहा है। वो पूरे मीट खाते हैं। साहिब तो कह रहे हैं—

**माँसाहारी मानवा, प्रत्यक्ष राक्षस जान।**

**उनकी संगत मत करो, होय भक्ति में हानि ॥**

यानी कबीर के नाम पर बहुत बड़ी राजनीति करने वाले हैं। राम जी के नाम पर बहुतों के सिक्के चल रहे हैं। हनुमान जी के नाम पर कइयों की राजनीति चल रही है। मैं किसी इष्ट के नाम पर राजनीति करने वाला नहीं हूँ। आप उनकी तरफ देखेंगे तो वो पहचान बनाकर अपना काम करना चाहते हैं। इसलिए मैं जाति-पाति के बहुत खिलाफ़ हूँ। यही कारण है कि मुझसे सभी बिरादरी के लोग प्यार करते हैं। सही यह है कि हरिजन मुझसे बहुत प्रेम करते हैं। वो मुझे हरिजन मानते हैं। मैंने कभी नहीं कहा कि हरिजन नहीं हूँ। जबकि हरिजन कुल में जन्म नहीं है। कोई बाहर जाकर तो झूठ कह सकता है कि फ़लानी जाति का हूँ, पर अपने



घर के पास नहीं बोल सकता है, क्योंकि पकड़ा जायेगा। मैं संगत को अपने घर भी ले गया हूँ। कोई गुरु नहीं ले जायेगा। हमारी बात दर्पन की तरह साफ़ है। हमें भय नहीं है। मेरा मानना है कि धर्म-स्थानों में अधिकतर अच्छे लोग नहीं बैठे हैं। बुल्लेशाह को क्या पड़ी थी यह कहने की!

**ठाकुरद्वारे ठग हैं बसदे, बिच तीर्था धावड़ी।**

**मंदिर दे बिच पोस्ती बसदे, आशिक रहन अलग ॥**

मेरे सत्संग में कोई लीडर आता है तो वेल्कम करता हूँ, पर माइक पर बात नहीं करने देता हूँ। हम किसी एक जाति-बिरादरी के ठेकेदार नहीं हैं। गुरु नानक देव जी सिक्खों के लिए ही नहीं बोल गये। गुरु रविदास जी की वाणी केवल हरिजनों के लिए नहीं है। जो ऐसा काम करते हैं, वो खतरनाक होते हैं। मुझे भय नहीं है। चाहे कोई भी प्रचार करने आया, मुझे कुछ फ़र्क़ नहीं है। मेरा बंदा खुद भी जाना चाहेगा, तो भी नहीं जा पायेगा।

तो मैं नज़र दौड़ाता हूँ कि कहीं कोई जातिवाद फैलाने वाला तो नहीं है। बाकी धर्म-जगत में आप देखें तो सौदागर आ गये हैं, व्यापारी आ गये हैं। बुल्लेशाह ने ऐसे ही नहीं बोला—

**ठाकुरद्वारे ठग हैं बसदे.... ॥**

जो देखा, साफ़-साफ़ बोला। महापुरुषों के नाम पर बड़े गंदे लोग अपना धंधा चला रहे हैं। यह एक धर्म की समस्या नहीं है। कोई भी धर्म-स्थान कैसे बनता है? यह पब्लिक के पैसे से बनता है। मैं ग़लत आदमी को आश्रम में टिकने नहीं देता हूँ। खाली पड़ा हुआ ठीक है, पर ग़लत आदमी आया तो ग़लत संदेश जायेगा। आप देखें, पब्लिक के पैसे से धर्म-स्थान बनता है, पर एक अगुआ होता है। वो वहाँ अपना कब्ज़ा जमाता है, परिवार को लाता है। वो वहाँ आने वाले धन को अपने निजि इस्तेमाल में लाता है। जो पैसा परमात्मा के कार्य के लिए था, उसे वो अपने निजि स्वार्थ में लगाता है। उसपर कंट्रोल करके वो बड़ा आदमी बन जाता है।

मैं सेवक बनकर काम करता हूँ। मैं संगत के पैसे का सही इस्तेमाल करता हूँ। पब्लिक का पैसा पब्लिक के लिए लगाता हूँ। रोटी खिला देता हूँ, हर आश्रम में दरियाँ, टायलेट, बाथरूम बगैरह सब सुविधा प्रदान करता हूँ। जो पैसा आपने दिया, ब्याज के साथ वापिस करता हूँ। आपकी पीढ़ियाँ भी खायेंगी। अपने नाम पर एक सूई भी नहीं है। यह काम मैं दिखावे के लिए नहीं करता हूँ। आप देखें कि पैसे के कारण से क़तल हो रहे हैं, क्योंकि बहुत धन है। महात्मा ए.सी. के कमरे में रहते हैं। ठगी-बेड़मानी कर रहे हैं। मैं आपकी सेवा में लगा हूँ। एक बार राँजड़ी आश्रम बन रहा था। बहुत ज़ोरों से काम लगा था। मैं दिन-भर खड़ा रहता था। बागड़ी की तरह काला हो गया। तब एक ने टोपी दी, कहा कि बागड़ी की तरह काले हो गये हो। भीषण गर्मी में मेरे साथ वाले लोग तंग पड़ जाते हैं तो बदली करता रहता हूँ। पर अपने को कैसे बदली करना है!

कहने का मतलब है कि महात्मा को एशोआराम से रहना नहीं है। पर यहाँ पर कलयुग में उलटा हो रहा है। हम मेहनत करना जानते हैं। हम संगत की सेवा करना जानते हैं।

तो हमारी कोई भी बात समाज के खिलाफ़ नहीं हैं। यहाँ तक झंझट वाली बात नहीं है। मैंने कहा कि भूत नहीं मानना तो सयाने परेशान हो गये। थोड़ा नीला निशान पड़ जाए तो जलबीर आ गया। भैंस दूध न दे तो भूत लग गया। यह क्या है! माताओं-बहनों को नचाते हैं। इसलिए मैंने कहा कि नहीं उलझना। पैसे की बात भी नहीं है। पर गुरु-भक्ति का नाश कर देंगे। शनि महाराज किसी का एक रूपया नहीं लेना चाहता है, पर वो शनि जी के नाम पर ठगी करके ले रहे हैं। वो डराकर धन लूटते हैं। हम हौंसला देते हैं, कहते हैं कि साहिब पर भरोसा रखना। वो भक्ति का नाश कर रहे हैं, डरा रहे हैं। हमने कहा कि साहिब साथ में है। इसलिए सयाने नाराज़ हैं। उनसे भी मेरा सवाल है कि आप यह पैसा कहाँ ले जा रहे हैं। हमारा भी देख लो। हमारा

दर्पन की तरह सामने है। पता चल जायेगा कि कौन सही है और कौन ग़लत। कोई शिवजी के नाम पर, कोई काली जी के नाम पर पब्लिक का शोषण कर रहा है। हमारी किसी से लड़ाई नहीं है। मामला कुछ और है। उन्होंने सोचा कि यह हमारे धंधे को नुक़सान पहुँचा रहा है तो विरोध करने लगे। ये व्यवधान आपको भी आयेंगे। आपको भक्ति से हटाने का प्रयास किया जायेगा। जैसे आप दूसरों को मेरे पास लाना चाहते हैं, इस तरह वो आपको भी वहाँ ले जाना चाहते हैं। कोई बीमार हो जाए तो कहते हैं कि चल सयाने के पास; कहाँ साहिब-बंदगी में चला गया है; वहाँ जाकर तो धर्म ही बदल दिया है। चल, फाण्डा करवाकर आ। भैंस दूध न दे तो चलो फाण्डा करवाओ। मैं भैंसे खरीदता हूँ। डेढ़ साल तक बच्चा न दे तो कम दूध देती हैं। अब, धर्म बदल दिया। यह क्या मामला है! यानी उनका धर्म भूत था। उनका धर्म जादू-जड़ी था। उनका धर्म फाण्डा था। यह सच्चा धर्म नहीं है। हम कुल मालिक की तरफ ले चल रहे हैं। इसलिए विरोध तो होना ही है।

अब 'उलटा चोर कोतवाल को डाँट' वाली बात हो रही है। शर्म ही नहीं रही है। अब वो मेरी वाली बात कर रहे हैं। बाँकेबिहारी को छोड़कर सच्चा गुरु बोल रहे हैं, मन को कंट्रोल करने को कह रहे हैं। कोई दीन ही नहीं है। पब्लिक आए, पैसा चाहिए, और कुछ मतलब नहीं है।

हमने लाखों लोगों का नशा छुड़ाया। पलौड़ा में एक बहुत बड़ा आदमी मेरे पास आया, कहा कि मेरा नौकर आपका नामी है। मैंने आने का कारण पूछा तो कहा कि मेरा नौजवान लड़का है; वो जोश में आकर टी.बी तोड़ देता है; कभी पलंग उठाकर फेंक देता है; सबको मारकर लंबा डाल देता है। मैंने कहा कि समस्या क्या है? वो बोला कि यह अपने को कोई सूई लगाता है। मैं समझ गया। वो रोने लग गया। बड़े घर का लड़का था। मैंने लड़के को पूछा तो उसने कहा कि मुझे पता नहीं चलता है; माता-पिता को भी मारता हूँ; घर का सामान भी तोड़ देता हूँ। मैंने कहा कि ऐसा क्यों करते हो? कहा कि कालेज में था तो लड़कों के साथ

नशा करने लगा। कभी इंजेक्शन भी लगाते हैं। यदि न लगाऊँ तो दिमाग फटने लगता है। पर पहले जब लगाता था तो मस्ती आती थी; अब जान भी नहीं रह गयी है; बस, तोड़ो-फोड़ो का दिल करता है। आजकल बर्दाश्त नहीं कर पा रहा हूँ। उसके पिता ने कहा कि दिल्ली में फ़लानी जगह भी ले गये। वो नशा छुड़ाते हैं। वहाँ 80 हजार रुपये दिये, पर इसका नशा नहीं छूटा है।

देखा न, हर जगह धोखा है। पूरी दुनिया में लूट हो रही है। इसलिए ब्रह्मानन्द जी ने बड़ा प्यारा कहा—

कोई हमसे पूछे यूँ आकर, दुनिया में तुमने क्या देखा।  
हम बतला देंगे यूँ उसको, सब मतलब का मेला देखा।  
हम मतलब के तुम मतलब के, ये मतलब के वो मतलब के।  
गुलिस्तान में फूल खिला था, हमने देखा मतलब का।  
वो दीप दिखा दे तू अपना, जो होवे खाली मतलब से।  
ब्रह्मानन्द कहेगा यूँ, हमने आज खुदा देखा॥

जो मतलब रहित मिल जाए तो वो खुदा ही है।

चकसलारिया में कुछ नामी लोग हैं। उनका भाई उधमपुर में ज्योतिषि का काम करता है। वो बता रहे थे कि वो नशा करता है। पहली जनानी को मारकर भगा दिया है। दूसरी लाड़ी आई है। फिर कहा कि वो ज्योतिषि का काम करता है, कम्प्यूटर से टिबड़े जन्मपत्री बनाता है। मैं पूछना चाहता हूँ कि वो खुद कैसा है! जिससे आप अपनी किस्मत का पत्रा बनवाने जा रहे हैं, वो निजि ज़िंदगी में कैसा है! वो बताने लगे कि दारू पीता है, भाइयों की ज़मीन छीन ली है। ऐसा बंदा ज्योतिषि का काम कर रहा है। ऐसे ही सभी धन के लिए काम कर रहे हैं। इसलिए सावधान रहो। कोई ग्रहों के नाम पर ठगेगा, कोई भूत-प्रेतों के नाम पर ठगेगा। पैसे ले जाते हैं, इसकी भी चिन्ता नहीं है। बस, ये आपकी भक्ति का नाश कर देंगे, यह समस्या बहुत बड़ी है।



# भक्ति दान गुरु दीजिए

---

तुमको बिसर गई सुध घर की, महिमा अपन जनाई हो ॥

निरंकार निर्गुण है माया, तुम को नाच नचाई हो ॥

चर्म दृष्टि का कुलफा देके, चौरासी भरमाई हो ॥

कह रहे हैं कि हे हंसा, तुम्हें अपने सही घर की सुध भूल गयी है। तुम अपने महिमा को नहीं जानते हो, अपनी ताकत को नहीं समझते हो। जो निर्गुण है, निरंकार (निराकार) है, वो सब माया है; वो तुम्हें नाना नाच नचा रही है। तुम्हें भौतिक आँखों की परेशानी देकर, माया में लुभाकर चौरासी की धारा में भरमा दिया है। आगे कह रहे हैं—

चार वेद हैं जाकी स्वांसा, ब्रह्मा अस्तुति गाई हो ॥

सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाए, तेहि मार्ग सब जाई हो ॥

चार वेद उस निर्गुण की स्वांसा से उत्पन्न हुए हैं और उन्हीं की अस्तुति ब्रह्मा जी ने गाई है। ऐसे में सब जीव भ्रमित हो गये हैं और उसी निर्गुण परमात्मा की राह पर जा रहे हैं, जो उन्हें चौरासी में भ्रमित किए हुए है।

साहिब धर्मदास से परम-पुरुष के विषय में बताते हुए कह रहे हैं—

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रच, सब से रहे न्यार।

जिन्द कहे धर्मदास सों, ताका करो विचार ॥

कह रहे हैं कि जो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों की रचना करके स्वयं सबसे न्यारा है, उसका विचार करो।

देस हमार न्यार तिहुँ पुर ते। अहिपुर नरपुर अरु सुरपुर से॥  
 तहाँ नहीं यम का प्रवेशा। आदि पुरुष का है वह देशा॥  
 सत्यलोक तेहि देस सुहेला। सत्यनाम गहि कीजे मेला॥  
 अद्भुत ज्योति पुरुष की काया। हंसन शोभा अधिक सुहाया॥  
 एक हंस जस षोडस भाना। अग्र वासना हंस अधाना॥  
 सत्यपुरुष की ऐसी बाता। कोटिक शशी इक रोम लजाता॥  
 एक रोम की शोभा ऐसी। और बदन की बरनों कैसी॥  
 अनगिनत चन्दा जगत में, अनगिनत दरसें सूर॥  
 ऐसे झलकें नूर सब, नूर नूर भरपूर॥  
 कोटि चन्द की शीतलता, कोटि सूर्य का तेज॥  
 ऐसी शोभा लोक की, सत्य पुरुष की सेज॥

कह रहे हैं कि परम-पुरुष के एक-एक रोम की महिमा इतनी है कि करोड़ों सूर्य और चंद्रमा लजा जाएँ। फिर पूरे शरीर की महिमा कैसे वर्णन करूँ!!

शब्द अखण्ड होत दिन राती। न कोई पूजा न कोई बाती॥  
 ऐसी हकीकत को मैंने जाना।  
 अरस कुरस नूर दरस, तेज पुंज देखा।  
 कोटि भानु साँच मानु, रोम रोम देखा॥

—गरीबदास जी

गरीबदास जी कह रहे हैं कि मेरी इस बात को सच मानना कि मैंने उस परम-पुरुष के एक-एक रोम में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश देखा।

कोई पारखी ही उसे समझ सकता है। वो परम-पुरुष ही आत्मा का सच्चा प्रियतम है। साहिब कह रहे हैं—

आवै न जावै मरे नहिं जनमे, सोई निज पीव हमारा हो।  
 ना कोई जननी ने जन्मो, ना कोई सिरजनहारा हो॥  
 साध न सिद्ध मुनि ना तपसी, ना कोई करत अचारा हो।  
 ना षट दर्शन चार वर्ण में, ना आश्रम व्यवहारा हो॥

ना त्रिदेवा सोहं शक्ति, निराकार से पारा हो।  
 शब्द अतीत अचल अविनाशी, क्षर अक्षर से न्यारा हो॥  
 ज्योति स्वरूप निरंजन नहीं, ना ओम हंकारा हो।  
 धरणि न गगन पवन ना पानी, ना रवि चंद न तारा हो॥  
 है प्रगट पर दीसत नहीं, सतगुरु सैन सहारा हो।  
 कहैं कबीर सब घट में साहिब, परखो परखनहारा हो॥

शब्दों की तरफ ध्यान दें। कह रहे हैं कि जो हमारा सच्चा प्रियतम है, वो जन्म-मरण से परे है, संसार में आता-जाता नहीं यानी वो माता के पेट से अवतार धारण करके नहीं आता। उसका कोई माता-पिता नहीं है और न ही उसे किसी ने बनाया है। वो न सिद्ध है, न साधु, न तपस्वी और न ही वो संसार के आचार करता है। वो इनमें से भी कोई नहीं है और षट्-दर्शन, चार वर्ण आदि से भी परे है। वो चार आश्रम से भी परे है यानी वो न जवान होता है, न बूढ़ा होता है, न वो बच्चा है। उसकी कोई उम्र नहीं है। वो त्रिदेव में से कोई भी नहीं है; वो सोहं भी नहीं है; वो शक्ति भी नहीं है। वो तो निराकार से भी परे क्षर अक्षर से न्यारा है। वो निःअक्षर अचल और अविनाशी है। वो माया और ब्रह्म से भी न्यारा है। वो ज्योति-स्वरूप निरंजन भी नहीं है और 'ओम' भी नहीं है। वो धरती, आकाश, हवा, पानी आदि तत्वों से भी कोई नहीं है और सूर्य, चाँद, तारों से भी परे है। वो सबमें है, पर दिखाई नहीं देता। सद्गुरु के शब्द ही उसका बोध दे सकते हैं। वो साहिब तो सबके घट में रहने वाला है। कोई पारखी ही उसे परख सकता है।

इस शब्द में बहुत बड़ा रहस्य साहिब ने बोल दिया। जब सच्चे गुरु की बात आती है तो कुछ लोग कहते हैं कि एक गुरु किया है तो अब उसे छोड़कर दूसरे के पास जाना तो अपने पति को छोड़कर दूसरे पति के पास जाना हुआ। यहाँ पर विचार करें कि क्या आप अपने पति ( सच्चे परमात्मा , साहिब ) की भक्ति कर रहे हैं या पराए की! साहिब ने त्रिदेव, सिद्ध, मुनि, निराकार ब्रह्म, साकार ईश्वर, ओम आदि सबसे परे बता दिया। इनमें से किसी को

भी जीव का अपना सच्चा पति नहीं कहा। इसका मतलब है कि दुनिया सच्चे पति की भक्ति नहीं कर रही है और जो गुरु पराए पति की ओर ले जा रहा है, जो उसे उसके प्रियतम से नहीं मिला सकता है, आप उसी की शरण में रहना चाहती है, उसे छोड़कर सच्चे गुरु के पास नहीं आना चाहती है और कहती है कि अपने पति को छोड़कर दूसरे के पास नहीं जाना है। अपना पति कौन है, यही मालूम नहीं है। यहीं पर भूल हो रही है। बाकी यह कहना कि अपने पति को छोड़कर पराए पति की तरफ नहीं जाना है, यह बात तो बड़ी अच्छी है। पर सत्य यह है कि अपने पति को नहीं पहचान पा रही है। दादू दयाल तो कह रहे हैं—

**पुरुष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग ॥**

उस एक परम-पुरुष रूपी सच्चे पति को कोई नहीं जान पा रहा है। तभी तो साहिब ने कहा—

**जब तक गुरु मिले नहीं साँचा। तब तक गुरु करो दस पाँचा ॥**

क्योंकि कोई पूरा सद्गुरु ही हमें उस देश में ले जा सकता है, हमें हमारे सच्चे प्रियतम से मिला सकता है।



**दसवें द्वार से आगे—संत वाणी**

**दशम द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई ॥**

**11वें द्वार से जीव जब जाता। परम पुरुष के लोक समाता ॥**

**दसवें द्वार से न्यारा द्वारा। ताका भेद कहूँ मैं सारा ॥**

**नौ द्वारे संसार सब, दसवें योगी साध।**

**एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान ॥**

**—कबीर साहिब**

**..... आठ अटाकी अटारी मजारा, देखा पुरुष न्यारा।**

**न निराकार आकार न ज्योति, नहिं वहाँ वेद विचारा।**

**ओंकार कर्त्ता नहिं कोई, नहीं वहाँ काल पसारा।**

**वह साहिब सब संत पुकारा, और पाखण्ड है सारा।**

**सद्गुरु चीन्ह दीन्ह यह मारग, नानक नज़र निहारा ॥**

**—गुरु नानक देव जी**



# सहज जनि जानो साईं की प्रीत

---

**यह संसार काल को देशा । बिना नाम नहीं कटे कलेशा ॥**

क्या सच में जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, काल का देश है?  
यहाँ—

**कर्म का जाल पसारा है ॥**

सही में यह दुनिया काल का देश है। क्या इसकी अनुभूति हो सकती है कि हम काल के देश में रह रहे हैं? हाँ, अनुभूति हो रही है। देखने से भी पता चल रहा है। संसार के नियम को देखकर, वातावरण को देखकर, जन्म-मरण को देखकर, जीवन के चक्कर को देखकर, जीव-जंतुओं को देखकर, संसार के दुखों को देखकर यह पता लगता है कि हम सब किसी क्रूर व्यवस्था के अधीन हैं, किसी खतरनाक कानून के दायरे में हैं। साहिब की वाणी में वज़न है।

**सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥**

सच में लगता है कि कोई भी स्वतंत्र नहीं है; सभी बंधन में हैं। बंधन कोई रस्सियों के नहीं हैं। बंधन जंजीरों के नहीं हैं। रूह बँधी है। क्या हम सब इन बंधनों को देख सकते हैं? क्या हम सब, जिसने हमें बाँधा है, उसे देख सकते हैं? क्या हम सबकी आत्मा बंधन में है? हम थोड़ा-सा चिंतन करें तो हम सब यह देख सकते हैं। यह जाना जा सकता है। इसका पता चल सकता है। आखिर यह बंधन कैसे दिखे? पहली बात तो आत्मा शरीर में है। आत्मा खुद को नहीं समझ पा रही है। आत्मा

अपने को समझ नहीं पा रही है। इससे पता चल रहा है कि जरूर कहीं भयंकर गड़बड़ है। क्या आत्मा जिस्म में रहकर भी अपने वजूद को नहीं समझ पा रही है? दूसरा, बड़े प्रमाण मिल रहे हैं, जिससे यह पता चलता है कि बंधन में है। जो कुछ भी मनुष्य करता है, वो सब आत्मा के स्वभाव के अनुकूल नहीं है। जैसे आत्मा का स्वभाव है, उससे मेल नहीं खा रहा है। भला आत्मा चोरी कर सकती है? नहीं। हिंसा कर्म कर सकती है? नहीं। छल-कपट कर सकती है क्या? कभी नहीं। क्यों हो रहा है यह सब? जो भी कर्म मनुष्य कर रहा है, कुछ भी आत्मा के अनुकूल नहीं है। आत्मा के स्वभाव के अनुकूल नहीं है। आत्मा ठगी नहीं करने वाली है। पर ये सब कर्म किये जा रहे हैं। ये आत्मा के अनुसार नहीं हैं। तीसरी बात यह कि आत्मा शरीर के धर्म का पालन कर रही है।

### कांचे कुंभ न पानी ठहरे ॥

शरीर का धर्म क्रूर है। शरीर का धर्म अच्छा नहीं है। शरीर का स्वभाव गंदा है। इसमें विकार भरे पड़े हैं। 25 प्रकृतियों का अनुकरण करना पड़ रहा है, इंद्रियों का अनुकरण करना पड़ रहा है। हर इंद्रि का विषय है। तो आत्मा को विषयों का अनुकरण करना पड़ रहा है। इससे पता चलता है कि आत्मा से वो सब करवाया जा रहा है, जो इसका स्वभाव नहीं है। कौतुक यह है कि जिन चीजों ने आत्म-तत्व को बाँधा है, वो पता नहीं चल रही हैं। आत्म-बोध नहीं हो रहा है। जो नचाए जा रहा है, वो पहचान में नहीं आ रहा है। समस्या गंभीर है। इस आत्मदेव को भ्रमित करने वाली ताक़त दिख भी नहीं रही है। कहीं आत्मा को धोखे में रखा गया है। जो मन वैरी है, उसका वजूद भी समझ नहीं आ रहा है। हर काम वो छिपकर सावधानी से कर रहा है। क्रोध आया, दिखता नहीं है। आपसे अनर्थकारी कर्म करवाता है, पर दिखता नहीं। काम आया तो अपना काम करके चला जाता है। पुराणों में आता है कि शिवजी मोहनी रूप पर मोहित हुए। देवराज इंद्र गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का शील भंग करने पहुँच

गया। इसमें सिद्ध-साधक भी हैं, गण-गंधर्व भी हैं, बड़े-बड़े हैं। साहिब की वाणी से प्रमाण मिल रहे हैं।

### सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥

सही में यह पता चल रहा है कि बहुत बड़ी शैतानी ताकत इस आत्मा को जकड़े हुए है। इन परिस्थितियों को देख पता चलता है कि सच में हम सब बहुत बड़े बंधनों में हैं। वो ताकत जहाँ चाहे, खींच ले जाती है; पता नहीं चल रहा है। यह जिस किसी को भी, जहाँ कहीं भी घुमाना चाहे, वहीं घुमाता है। जैसे जेल में बंद कैदी की आँख पर पट्टी बाँध कर जहाँ घुमाया जाता है, वहीं जाता है। कुछ भी आत्मा के अनुकूल नहीं है। बलपूर्वक बहुत पाप आत्मा से करवाए जा रहे हैं। समझ में आ रहा है। आत्मा से चित्त जब भी चाहे, जो भी चाहे, करवाता है। आत्मा का बस नहीं चलता है। मन जो चाहे, इच्छा कर लेता है। बुद्धि जैसा चाहे, फैसला कर लेती है। अहंकार जैसे चाहे, अपनी क्रिया कर लेता है। कण्ट्रोल नहीं है।

### इन सब मिल जीवहि घेरा।

### बिन परिचय यह यम को चेरा ॥

सबने मिलकर घेरा है। आत्मदेव को कुंद करके रखा हुआ है। साहिब ने इन बंधनों पर सटीक शब्द कहे हैं।

### जस नट मरकट को दुख देई। नाना नाच नचावन लेई ॥

जैसे बाजीगर बंदर को दुख देता है। उसके स्वभाव के, उसकी वृत्ति के खिलाफ़ काम करवाता है। कभी गोले के बीच से जंप करवाता है, कभी नचाता है। ये सब उसे नागवार हैं। उसे तकलीफ़ होती है। पर उसे यह सब इसलिए करना पड़ता है कि मजबूरी है। बस नहीं चल रहा है। इस तरह आत्मा मजबूर है। आत्मदेव बंधन में है। हर नाच, जो वो नचाना चाहता है नाचना पड़ रहा है।

### मन ही निरंजन सभै नचाए ॥

सवाल उठा कि बंधन में क्यों आ गया? विद्वान लोग कहते हैं कि कर्मों के कारण। शास्त्र कहते हैं कि कर्मों के कारण। अब सवाल उठा कि कर्मों से आत्मा का क्या संबंध? हम पहले देखते हैं कि कौन से कर्म किये जा रहे हैं? मूलतः शुभ और अशुभ—दो तरह के कर्म इंसान करता है।

### पाप पुण्य ये दोनों बेड़ी, इक लोहा इक कंचन केरी ॥

यथार्थ में दोनों ही कर्म बंधनकारक हैं। आत्मा का दोनों से कोई संबंध नहीं है। अच्छे-बुरे दोनों का प्रवर्तक मन है। दोनों मन की प्रेरणा से होते हैं। तभी तो कह रहे हैं—

### पाप पुण्य ये दोनों बेड़ी ॥

पाप और पुण्य दोनों बेड़ियाँ हैं। इक लोहा है, इक कंचन है। हैं दोनों बेड़ियाँ। क्योंकि कर्म का अधिष्ठा मन है। कर्म से आत्मा का क्या संबंध है? हमारी आत्मा का किसी भी कर्म से कोई संबंध नहीं है। कर्म के विभाग को देखते हैं तो सभी कर्म शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किये जा रहे हैं। सभी शरीर पर केंद्रित हैं। चोर चोरी क्यों कर रहा है? कर्म है न! शरीर की ज़रूरत को पूरा करने के लिए है। अनाज चोरी कर रहा है, धन चोरी कर रहा है, कोई वस्तु चोरी कर रहा है। चोरी की हुई वस्तु का आत्मा से संबंध है क्या? नहीं, आत्मा को ज़रूरत नहीं, शरीर को है। सभी कर्म अज्ञानावस्था में करवाए जा रहे हैं। आत्मा ने अपने को शरीर मान लिया। इसलिए शरीर की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए कर्म कर रहा है। आत्मदेव सभी कर्म कर रहा है। छल, कपट, धोखा। ये सभी कर्मों का अधीष्ठा है—मन। चाहे इहलौकिक, चाहे परालौकिक, जितने भी सुख हैं, उनकी प्राप्ति के लिए कर्म किये जा रहे हैं। इसका मतलब है कि सभी का कारण शरीर है। आत्मा को बहुत बड़ा अज्ञान किया गया कि तुम शरीर हो। आत्मा चेतन स्वरूप है। इतने गंदे खूँटे से इसे बाँधा। यह विकारों से भरा है। किसी कैदी को ऐसे कमरे में बंद किया जाता है, जहाँ अँधेरा होता है, जहाँ गंदगी होती है तो उसे दुख देने के लिए

ही न! ऐसे ही आत्मा को गंदे शरीर में डाला जा रहा है तो यह उसे सुख देने के लिए नहीं है; यह उसे पीड़ा देने के लिए है।

**देह धरे का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोय।**

**ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूर्ख भुगतत रोय ॥**

शरीर धारण करना एक दुख है। शरीर धारण करना एक पीड़ा है। इसलिए आत्मदेव को शरीर में फँसाया गया। आत्मदेव शरीर के बंधन में आ गया। आत्मदेव ने अपने को शरीर मानना शुरू कर दिया। गोस्वामी जी इसी बात को बड़े सुंदर अलंकार से कह रहे हैं—

**जड़ चेतन है ग्रंथ पड़ गयी। यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनई ॥**

आत्मा और शरीर की गठान पड़ गयी है। हालांकि मिथ्या है, झूठी है, पर छूटती नहीं है। इतना बड़ा बंधन है! आत्मदेव को एक नशे की हालत में रखा गया। साहिब फरमा रहे हैं—

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥**

कभी आप भजन करना चाहते हैं, लेकिन मन नहीं करने देता है। कभी ध्यान एकाग्र करते हो तो नहीं करने देता है; अगले ही पल वो घुमाकर कहता है कि लेट जाओ, सुबह देख लेंगे, अभी क्या ज़रूरत है। वाह!

**जो चाहे सो नाच नचाए। मन की कला हाथ न आए ॥**

इसकी कला हाथ नहीं आ रही है। सबको नचा रहा है।

**बाजीगर का बांदरा, ऐसा जिव मन साथ।**

**नाना नाच नचाय कर, राखे अपने हाथ ॥**

...तो इस तरह जन्म-मरण के क्रम को देखकर, जीवन के सर्कल को देखकर लगता है कि हम सच में एक शैतानी ताक़त के हाथ में हैं।

**सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥**

किसी शैतानी ताक़त के हाथ में हैं। और यह सबको नचा रहा है। यहाँ मन का खेल है। यह सबको सच्चा लग रहा है। मन इस आत्मा को बहुत परेशान किया हुआ है। सभी अनात्म काम यह मन आत्मा से

करवा रहा है। बड़ी परेशानी में डाल रहा है आत्मा को।

**बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।**

**जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥**

बड़े बुरे बंधनों से जीव बँध गया है। यह अपने सच्चे साहिब को नहीं समझ पा रहा है।

**जो रक्षक तहँ चीहृत नाहीं। जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं॥**

जो रक्षक है, उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है। आप हम सब इस बात को स्वीकार करते हैं, इसलिए कहते हैं कि मुक्ति चाहिए।

निर्मल आत्मा अनेक बंधनों में बँधी है। ये बंधन कैसे? ये बंधन नज़र नहीं आ रहे हैं। आत्मतत्त्व की तरफ देखें तो यह अजन्मा, इंद्रियों से परे है। रोग आदि आत्मा में नहीं होते हैं। ऐसी आत्मा किन तत्वों में बँधी है? जन्म-मरण के बंधन में भयंकर कष्ट हैं। आत्मा चार खानि में भटक रही है। सबसे बड़ा अज्ञान आया कि इसने शरीर को सत्य माना। इसने मान लिया कि मैं शरीर हूँ। यहीं अज्ञान आया। शरीर का धर्म कठिन है। आत्मा की पहचान नहीं मिल रही है। यह समझ से परे है, दिख नहीं रही है। इसने शरीर को सत्य माना। कौन है, जिसने आत्मा को इस स्थिति तक पहुँचाया कि यह शरीर को नित्य मान रही है? वो है मन। देखते हैं कि इस मन का जाल कैसा है! मन में यह कैसे उलझ गयी? आत्मा समझ में नहीं आ रही है। आत्मा ने अपने को मन मान लिया है, इसलिए दुख और सुख अनुभव हो रहे हैं।

नाम की प्राप्ति के बाद आपमें एक शक्ति निरंतर काम कर रही है। क्या काम कर रही है? जैसे आदमी चेचक का टीका लगाता है। उसमें जो औषधीय गुण हैं, वो ब्लड में जाकर अपना काम करते हैं। वो किटाणुओं को पनपने नहीं देते हैं। इस तरह नाम विकारों के पनपने नहीं देता है।

**जहाँ नाम तहाँ काम नहीं, जहाँ काम नहीं नाम।**

**कहें कबीर कैसे रहें, रवि रजनि इक ठाँव॥**

साहिब फिर वाणी में कह रहे हैं—

**नाम होय तो माथ नमावे । ना तो यह मन बाँध नचावे ॥**

नाम की प्राप्ति के बाद ये चीज़ें आयेंगी। फिर आपको भक्ति क्या करनी है? भक्ति के दो अंग हैं—विश्वास और ध्यान। भक्ति का पहला अंग है—विश्वास। विश्वास ही भक्ति का मेरुदण्ड है। यह भरोसा कैसा? यह भरोसा क्या है? भरोसा कैसे किया जाए? क्या है ध्यान? दो चीज़ें भक्ति में प्रमुख हैं। आग में तपश और रोशनी दो मुख्य धातु हैं। ये आग से अलग नहीं की जा सकती हैं। अगर एक भी अलग की गयी तो आग नहीं रहेगी। आग रहेगी तो तपश रहेगी। कोई कहे कि तपश को हटा दें और आग रहे तो यह नहीं हो पायेगा। कोई कहे कि विश्वास को अलग कर दें और भक्ति करें तो यह नहीं हो पायेगा। फिर भक्ति नहीं रहेगी।

प्रश्न उठा कि विश्वास कैसा? यह विश्वास दृढ़ हो। जीव जिसकी उपासना करता है, उसके प्रति यह मानना कि वो ही रक्षक है, यह विश्वास है। अगर वो उसे छोड़कर कहीं ओर अपनी सुरक्षा के लिए भटक रहा है तो यह विश्वास नहीं है।

आपकी भक्ति में क्या रुकावट आयेगी? कभी आप परेशान हो जाते हैं कि दुनिया क्यों विरोध कर रही है। लोगों ने मुसलमानों को भी आत्मसात् कर लिया, उठ-बैठ रहे हैं। ईसाइयों को भी आत्मसात् कर लिया। क्या बात है कि पब्लिक आपसे तालमेल नहीं बिठा पा रही है? क्या कमी है आपके अन्दर? सवाल है कि आप इतने मजबूत कैसे हो गये? विरोध क्यों है, बताता हूँ। मैं जानता हूँ कि आप वहाँ नहीं पहुँच पायेंगे। मित्रता समान विचारधारा से होती है। एक के विचार ऊँचे हैं तो सांमजस्य नहीं हो पायेगा। पर यह समस्या यहाँ नहीं है। आपका सगा भाई भी अगर ग़ैरनामी है तो ग़ैर समझेगा। माँ भी अगर ग़ैरनामी है तो ग़ैर समझेगी। ऐसा क्यों?

इसके पीछे रहस्य है। निरंजन सबके अन्दर है। वो राजा है। वो ब्रेन में पहुँचाता है, सोचता है कि इसके संपर्क में आए तो वहाँ ले जायेगा।

इसलिए बेमतलब की घृणा आपके प्रति उनके दिल में पैदा करेगा। क्योंकि मन उनमें हावी है। जैसे पहले आप थे, उनमें है। क्यों ऐसा? खतरा है। मन जानता है कि इनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। इनके पास पहुँच गया तो मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा। इसलिए विरोधी आपका विरोध नहीं कर रहा है, आपसे घृणा नहीं कर रहा है; यह मन कर रहा है। ताकि आप गुरु-भक्ति से हटें। इसलिए गुरु-भक्ति करना आसान काम नहीं है।

**कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।**

**भक्ति करे कोई शूरमा, जाति वरण कुल खोय ॥**

जो भक्ति करते हैं, वो जाति, कुल आदि का अभिमान त्याग देते हैं। वो अहंकार रहित हो जाते हैं। वो सद्गुरु को समर्पित हो जाते हैं। वो अपने प्रेम का ढिंढोरा भी नहीं पीटते। वो दूसरों की देखा-देखी भी भक्ति नहीं करते।

**देखी देखी सब कहें, भरे भये प्रभु नाम।**

**अर्द्ध रात कोई जन कहे, खानाजाद गुलाम ॥**

साहिब तो कह रहे हैं—

**भक्ति करो सुरति लाय के, जब हो आधी रात।**

**करके पुनि भाखो नहीं, उर अन्तर में राख ॥**

जब आधी होती है, तब भक्त-जन जागते हैं। तब वे अपने सद्गुरु रूपी, परमात्मा रूपी प्रियतम का ध्यान करते हैं और उनमें समाते हैं। पर वो अपने इस प्रेम को दुनिया के आगे प्रकट नहीं करते।

**जो पिया संग सोवती, कहती नहीं हर्षाय।**

**गर्भ होत है तासु जब, जग में हो प्रकटाय ॥**

जैसे स्त्री अपने पति के साथ सोती है तो इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटती है। यह बात तब संसार को खुद-ब-खुद पता चल जाती है, जब उसके गर्भ होता है। इस तरह प्रभु की, सद्गुरु की भक्ति करने वाले, उनसे प्रेम करने वाले, ढिंढोरा नहीं पीटते हैं कि वे बड़ी भक्ति करते हैं।



समय आने पर जब उनकी भक्ति रंग लाती है, सद्गुरु की कृपा हो जाती है तो संसार को पता चल ही जाता है।

चाहे आपको भरोसा है या नहीं कि नाम लेकर पार हैं, पर मन को पक्का पता है कि पार है। उसे पता है कि मेरा कुछ नहीं चलेगा। दूसरे के द्वारा आपको घेरेंगे। घर में कोई बीमार भी हो गया तो भटकाने की कोशिश करेगा। बुआ आयेगी। बुआ नहीं आई, वो आया। कहेगी कि लड़का बीमार है, सयाने के पास ले जाओ। कभी साहिब आपके अन्दर बैठ बातचीत करता है। इस तरह मन कहता है। उसका हमला आपके भरोसे पर है। वो विश्वास पर हमला करता है। क्या आपको सत्लोक जाने में रोक पायेगा? नहीं। आप नाम के बाद जितना भटकोगे, सज़ा मिलेगी। लाइन पर आ जाओगे। यदि नहीं आए तो यह निरंजन की जीत होगी। मन का फायदा होगा। आप किसी को समझाने योग्य नहीं रह जाओगे। वो यह करना चाहता है। उदाहरण के लिए चित्रौर में एक माई ने नाम लिया। उसका स्कूल है। लोगों ने ऐसा माहौल फैलाया, कहा कि स्कूल के पेड़ में डायन रहती है। दुनिया मुझे पागल नज़र आ रही है। कितनी ज़ालिम दुनिया है! यह मन का काम है। हर नामी को दुनिया पागल लगती होगी। आप शील हैं, नियंत्रण में हैं। कर्म पर आपका नियंत्रण है। उनका कुछ नहीं है। आपको बेवकूफ़ लगते होंगे दुनिया के लोग, जो विषय-विकारों में, दुनिया के अनात्म कार्यों में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। जैसे एक लड़का पत्थर उठा-उठाकर फेंक रहा था। फिर वहाँ से उठाकर ला रहा था। यह क्या काम था? फिजूल। धन तो आप भी कमा रहे हैं, भोजन आप भी कर रहे हैं, संसार के काम तो आप भी कर रहे हैं, पर अन्तर है। आप महात्मा हो गये हैं। आपका अपने पर कण्ट्रोल हो गया है। आपका अपने ब्रेन पर होल्ड है। आप एक महात्मा के समान हो गये हैं। मैं आपको महात्मा मानता हूँ, इसलिए आपकी खिदमत में रहता हूँ। इसलिए साहिब ने कहा—

**एक जीव को भक्ति दिलाए, सो तो कोटि कोटि फल पाए ॥**

जब भी आपने किसी को नाम दिलाया होगा तो आपका पसीना निकल गया होगा। इसमें बौखलाना नहीं होगा। क्या इसमें कर्मों का भी खेल है? समझाता हूँ। गुरु नानन देव जी कह रहे हैं—

**जिसका पूर्व लिखिया, सो गुरु चरण गहे ॥**

मनुष्य के अन्दर कर्मों का प्रभाव कहाँ से होता है?

**कर्म सार बुद्धि उत्पानी ॥**

कर्मों का संचय ब्रेन में है। जैसे आप धन का संचय बैंक में करते हैं, ऐसे ही कर्मों का संचय ब्रेन में होता है। जब ब्रेन चेतन हो जायेगा तो समझ आयेगी। कई जन्म तक शुभ कर्म करते-2 ऐसी बुद्धि होती है। तो एक यह चीज़ है। फिर दूसरा—

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, साध संगत तर जायेगा ॥**

आपके कर्म भी नहीं हैं, पर संग मिला किसी नामी का तो तर जायेंगे।

स्त्री अहंकार रहित है। दुख को व्यक्त करती है। एक ने कहा कि मेरा पति सत्संग में नहीं आना चाहता है। मैं कहती हूँ कि वहाँ चलो तो कहता है कि साहिब आँखों से कुछ करता है।

मेरे विरोधियों ने जो-जो बातें बोलीं, वो मैं सब ठीक-ठीक मान रहा हूँ। वो कहते हैं कि धर्म छुटाता है। सच में छुटाता हूँ। मैं कोई बात मामूली नहीं ले रहा हूँ। मैं काल का धर्म छुड़ाकर सत्य-धर्म की तरफ ले चल रहा हूँ। कोई कहता है कि आँखों से कुछ कर देता है। वो भी सच ही कह रहा है। केवल उसके कहने का भाव, उसके कहने के नज़रिया, उसकी सोच नेगेटिव है। निगाह मिली तो अन्तःकरण बदल देता हूँ।

यदि नामी से मेरी नज़र नहीं मिलती है तो उन्हें संतुष्टि नहीं मिल पाती है। क्यों? इसका मतलब है कि नज़र से कुछ मिला। तो यहाँ वो ठीक कह रहे हैं कि नज़र से कुछ कर रहे हैं। वो उलटा बोल रहे हैं। हम नज़र से कृपा वाली बात कर रहे हैं, जादू वाली बात नहीं कर रहे हैं। कुछ

कहते हैं कि देवी-देवते छुड़ाता है। ठीक ही तो कह रहे हैं। कहाँ गलत हैं! फिर वो समगलर भी बोल रहे हैं। यह भी ठीक ही कह रहे हैं। काल-पुरुष की दुनिया से उसका माल लेकर सत्लोक ले जा रहा हूँ। यह काम कैसा है!

टी.बी. पर हमारे प्रोग्राम के आने से लोग समझ रहे हैं। मैं बड़ी कड़क आवाज़ में बोल रहा हूँ। जो बोलता हूँ, उसे दिल में उतार देता हूँ। वो मेरी बातों में तार्किक संगता देखते हैं। उन्हें समझ में आ गया कि जो-जो बातें इनके विरुद्ध बोली गयीं, वो सब झूठ था।

मैं कहता हूँ कि आप नेगेटिव और पॉज़िटिव दोनों गुणों को देखें। कितना भी क्रूर आदमी होगा, उसमें भी प्रेम, सद्व्यवहार मिलेगा। क्योंकि ये आत्मा के गुण हैं और वो सबमें है। कुछ, जिन्होंने हमारी निंदा की थी, वो भी आ रहे हैं। कुछ नहीं आ पा रहे हैं, उन्होंने पहले निंदा की है, पड़ौसी कहेंगे कि क्या बात है! कुछ आपसे भी पहले भिड़े हैं। इसलिए कुछ आपके और पड़ौसियों के डर से नहीं आ पा रहे हैं।

पर आप कुछ नहीं कर रहे हैं। यदि कोई आपके द्वारा आया तो साहिब ने कृपा की, तभी आया।

### **आपही कण्डा तौल तराजू, आपही तौलन हारा ॥**

नहीं तो कलयुग में आपको भ्रमित करने वाले बहुत हैं। निरंजन के चेले जगह-जगह घूम रहे हैं, जगह-जगह पैठ लगाए हुए हैं। वो आपको भक्ति से हटाने की कोशिश करेंगे, आसानी से किसी को भी सत्य-भक्ति में नहीं पहुँचने देंगे। कलयुग में जो मुक्ति की बात करेंगे, वो और मुसीबत में डाल देंगे।

एक लड़का घर से 10 किलो दूध लेता था और बेचने जाता था। पुराने जमाने में पीपियाँ होती थीं पाँच-पाँच किलो की। वो 2 पीपियाँ भरकर दूध बेचता था। 12-13 साल का लड़का था। एक पीपी सिर पर और एक हाथ में पकड़ता था। पहले हाथ वाली को खाली करता था। क्योंकि वहाँ लटकने से ताक़त अधिक लगती है। एक दिन उसकी सिर

वाली पीपी गिर गयी। वो रोने लगा। उसे भय लगा कि माता-पिता मारेंगे। था भी गरीब घर का। इतने में एक आदमी आया, बोला, देखो, जो सिर पर तुमने पीपी रखी थी, उसमें डकन नहीं था। मैं बताता हूँ कि डकन कहाँ मिलेगा। डकन होता तो नहीं गिरनी थी। कमीज पहनते हैं तो ऊपर जेब होती है। बच्चे ने जो दूध बेचा था, उसके पैसे जेब में रखे थे। वो आदमी कह रहा था कि वहाँ देखो, डकन है। जब वो बच्चा देख रहा था तो वो आदमी उसकी जेब से पैसे निकाल रहा था।

निरंजन डबल मार मार रहा है। उस बच्चे को डबल मार पड़ी। एक दिन हम लोग मोटरसाइकिल पर जा रहे थे। भानुप्रतापसिंह गाड़ी चला रहा था। पीछे मीरा बैठी थी। मैं बीच में बैठा था। अयोध्या जी के पास जाना था। एक बच्चा दही लेकर आ रहा था। हम तेज़ जा रहे थे। उस बच्चे के हाथ से दही गिर गयी। वो रोने लगा। मैंने कहा कि गाड़ी रोको, वापिस करो। भानुप्रताप ने कहा कि छोड़ो, लोग इकट्ठा होंगे। मैंने कहा कि नहीं, वो रो रहा है, चलो। मैंने लड़के से पूछा कि रो क्यों रहे हो? कहा कि दही गिर गयी। मैंने कहा कि फिर क्या बात है, तुम्हें चोट तो नहीं आई न! कहा कि चोट तो नहीं आई, पर मम्मी मारेगी। मैंने कहा कि कितने की है? कहा 10 रुपये की। मैंने कहा कि यह लो, रो मत। तो हम अपने जीवन में लाभ-हानि से सुखी-दुखी हो जाते हैं। यह मन ही है।

**मन हँसे मन रोवे.... ॥**

उलझाया है मन ने। सब नित्य लग रहा है।

**जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कछु लेन न देन ॥**

आत्मा को न दुख है, न चोट लगती है, न आफत आती है। बड़ा अजूबा है। आदमी वहम में जी रहा है। फिर कोई मर गया तो दुख हो जाता है। आदमी ने नित्य मान लिया है। सभी काम यह आत्मदेव से करवा रहा है। जो कुछ भी चाह रहा है, करवा रहा है। जैसे पिंजड़े में कैद

शेर से बाजीगर जो चाहे, करवा लेता है। शेर बादशाह है। पर कभी आग के गोले से जंप करवाता है, कभी कुछ। क्योंकि बंधन में है।

**बहुत बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।**

**जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव ॥**

फिर बांधने के लिए काल के एजेंट बैठे हैं। कोई कहता है कि हत्या मान, कोई कहता है कि तीर्थ कर, कोई कहता है कि मंत्र जाप कर, कोई कहता है कि पुण्य-कर्म कर। जितने भी धर्म प्रचार कर रहे हैं, उनका मुद्दा पैसा है। सतवा बगैरह कर रहे हैं, मुद्दा पैसा है। क्या करना है? बच्चे पालने हैं।

**बंधे को बंधा मिले, गाँठ छुड़ावे कौन।**

**अंधे को अंधा मिले, राह दिखावे कौन ॥**

क्या ऐसे लोगों के सान्निध्य में आत्मा का कल्याण होगा? जो कुछ भी कर रहे हैं, पेट के लिए कर रहे हैं। उनके कहने पर चलकर कल्याण कर पायेंगे? कभी न होगा। कुछ कह रहे हैं कि पाठ सुन, कल्याण हो जायेगा, पाप कट जायेंगे। क्योंकि पता है कि कुछ-न-कुछ तो देगा। हम कह रहे हैं कि कथा गुण, अनुकरण कर। कोई कह रहा है कि तीर्थ कर, पाप कट जायेंगे। क्योंकि दक्षिणा तो पता है कि दे देगा। उसे समझाया नहीं गया कि तू पाप मत कर। उसे कहा कि जितने चाहे, पाप कर और यहाँ आकर माथा टेक, पैसा दे तो पाप ख़त्म हैं। हम ऐसे लोगों से सावधान कर रहे हैं।

**दसों दिशा में लागी आग। कहैं कबीर कहाँ जड़यो भाग ॥**

फिर वो भयभीत करके धन ले रहे हैं। जब कोई दुखी आता है तो सोच आती है कि मेहर करूँ। कभी नहीं सोचता हूँ कि इससे कुछ लेना है।

एक माई आई, उसकी 4-5 गाइयाँ थीं। कहा कि उन्हें आग लग गयी है, जख़मी हो गयी हैं। वो जानना चाह रही थी कि आग लगी है या लगाई गयी है। मैंने कहा कि इस बात को छोड़ दे कि लगी है या लगाई

गयी है। कलयुग में आदमी ज़ालिम है। हमारे 12 आश्रम जला दिये गये। तीन आश्रम में रात के 2 बजे आग लगी है। कुछ कहने लगे कि शार्ट-सर्कट हुआ है। अगर ऐसा होना था तो तीनों बार 2 बजे ही होना था क्या? शॉर्ट-सर्कट दिन में क्यों नहीं होता है? रात को ही क्यों होता है? उन्होंने रात को 2 बजे समय चुना। हमें पता चला, गाइयों को बचा लिया। वो ज़ालिम इतना भी विचार नहीं किया कि गाइयाँ हैं। कितना ज़ालिम है इंसान! मुझे विश्वास था कि आग लगाई गयी है।

तो कभी इंसान दूसरे की खुशी नहीं देख सकता है। कलयुग का इंसान इतना गंदा हो गया है! कोई आराम से रह रहा है तो रहने दो, ईर्ष्या न करो। मैंने कहा कि यह छोड़, इलाज़ कर गाइयों का, 2 तो मर गयी थीं। माई कहने लगी कि सब कह रहे हैं कि यज्ञ कर, पाप लग गया है। मैंने कहा कि सुनो, तेरा क्या कसूर है? तुझे कहाँ से हत्या लगी? तूने पाला होगा, खरीदा होगा, मारना नहीं चाह रही थी। ये डबल चोट कर रहे हैं, कह रहे हैं कि यह कर, वो कर।

यह कलयुग का बंदा बड़ी नीचे आ सकता है। आदमी बड़ा धूर्त है। दुनिया के 10 ख़तरनाक प्राणी बता रहे थे। साँप के लिए कह रहे थे कि साल में 50 हज़ार को मारता है। उनमें मगरमच्छ, शेर आदि भी थे। मैंने कहा कि तुमने सबसे ख़तरनाक को छोड़ दिया। इंसान सबसे ख़तरनाक है।

वो आग लगाई गयी थी। फिर रात को भागने का मौका मिल जाता है। कितनी ज़ालिम दुनिया है! मैंने कहा कि पाप उसे लगेगा, जिसने यह आग लगाई है। तू उनकी सेवा कर। पाप तब लगेगा, जब तू सेवा नहीं करेगी। चाहे नहीं बचें, तो भी सेवा कर, उनका दर्द तो कम हो।

मेरे विचार से जिसने यह काम किया, उसे कई बार जलना पड़ेगा। इसलिए सोचकर काम करना। निरंजन की एक बात तो अच्छी है कि कर्म का फल तो देता है। हिसाब तगड़ा लेता है। छोड़ता नहीं है।

किसी भी माई के पुत्तर को नहीं छोड़ता है। हाँ, साहिब की दया हो तो अलग बात है, नहीं तो तंग करता है।

कहा कि कह रहे हैं कि हरिद्वार जाओ, यह करो, वो करो। मैंने कहा कि अगर कुछ करना ही चाहती है तो आश्रम में भण्डारा कर दे। यह बहुत बड़ा यज्ञ हो जायेगा। मैं हरिद्वार भी देख आया हूँ। वहाँ बड़े खतरनाक लोग बैठे हैं। पूरा धन के लिए कर रहे हैं। बड़ा खतरनाक नेटवर्क है। मैंने माई को समझाया कि तूने कोई दीया भी पास में नहीं रखा था। पाप तो तब लगे कि जब तेरी कोई ग़लती हो। आग रात को लग गयी। मौत कोई समय थोड़ा देखती है, न रात देखती है, न दिन देखती है, न अन्दर देखती है, न बाहर देखती है।

**काल खड़ा सिर ऊपरे, तू जाग विराने मीत।**

**ना जाने कब मारसी, क्या घर क्या परदेश ॥**

अब मैंने माई को समझाया। वो परेशान थी। मैंने कहा कि तुझे कोई दोष नहीं है। माई सौखी थी। मैंने कहा कि ये तुझे दुखी कर रहे हैं। किसी का सुख नहीं देखा जाता है न आजकल! तेरा कसूर नहीं है। तूने कोई ज़हर नहीं खिलाया है। अब कोई आदमी आग लगाकर गया। तूने तो लगाई नहीं है।

एक सेठ था। सेठ बड़ा जोरदार आदमी था। मस्त था। सेठ ने महाजन बिरादरी जोड़ी। एक बाबा के चले थे। पहले सेठ वहाँ जाता था। बाद में सेठ कुछ को यहाँ ले आया। बाबा के चेलों ने सेठ की दुकान को आग लगा दी। स्टोर था। सारा माल जल गया। होलसेल की दुकान थी। सेठ बड़ा दुखी हुआ। वो कहने लगे कि बड़ा साहिब-साहिब करता था, देखा, दुकान जल गयी। क्या रक्षा की?

अब एक तो चोट की, दुकान जला दी, फिर कह रहे हैं कि बड़ा साहिब 2 करता था, दुकान जल गयी। सेठ परेशान हुआ। कुछ सेठ को कह रहे थे कि सर्कट फेल हुआ। नहीं, ऐसा नहीं था। वो आग लगाई गयी थी। रात के समय लगी। दिन को क्यों नहीं होता सर्कट फेल? सेठ थोड़ा

हिल गया। कोई कहने लगा कि लक्ष्मी की पूजा नहीं करता था, कोई कहने लगा कि देवतों को नाराज़ करने का फल देख लिया! जाल फैलाया गया कि देख लिया साहिब के पास जाने का फल। बढ़िया चाल थी। मैंने सेठ को कहा कि चिंता मत कर; साहिब का बंदा होकर परेशान हो रहा है। मैंने उसे पैसा दिया, कहा कि दुकान चला; किसी से नहीं माँगना। किसी से लेकर उसे दिया। सेठ पहले से भी टॉप हो गया। डबल स्टोरी बना ली। बाद में पता चला कि फ़लाने पंथ के लोगों ने जलाई थी।

दुनिया किसी भी हद्द तक जा सकती है। इतनी ज़ालिम है। टीम शातिर है। जब भी आप भक्ति की बात करेंगे, पाखण्डी तबका भ्रम में डालेगा। आप भ्रमित रहें, इसमें उनका लाभ है। आश्रम में हमले की प्लैनिंग में सब मिले हुए थे। ज्योतिषि भी विरोधी थे, कर्मकाण्डी भी विरोधी थे। क्योंकि बड़ी स्पीड में लोग हमारे पंथ में आ रहे थे। उन्हें मंजूर नहीं हो पा रहा था। आज धर्म क्षेत्र में इतनी ख़तरनाक पब्लिक रहती है। बुल्लेशाह ऐसे ही नहीं कह रहे हैं—

**ठाकुरद्वारे ठग हैं बसदे, बिच मस्जिद धावड़ी।**

**मंदिरां दे विच पोस्ती बसदे, आशिक रहन अलग॥**

मेरा सवाल है कि साहिब की भक्ति में आने के बाद हमारे नामी को पड़ौसी भी तंग करते हैं, रिश्तेदार भी तंग करते हैं। यह है प्रतिस्पर्द्धा। कोई किसी का सुख नहीं देख सकता है। पहले लोग दूसरे की मदद करने में तत्पर रहते थे। आज खोपड़ी बदल गयी है। रात-दिन लगे रहते हैं कि भूखा मरे। वो भूखा रहेगा तो तुझे क्या लाभ मिलना है!

**देख पराई चूपड़ी, मत ललचाइये जीभ।**

**रूखा सूखा खाइके, ठंडा पानी पीव॥**

साहिब का नाम करो। उनका इन बातों में ध्यान नहीं है।

**काल का जीव माने नहीं, मैं कोटिन कहूँ समझाय।**

**मैं खींचत हूँ सतलोक को, यह बाँधा यमपुर जाय॥**



जैसे सत्य-भक्ति में आयेंगे, कई रुकावटें मिलेंगी।

**मुझे है काम सतगुरु से, दुनिया रूठे तो रूठन दे ॥**

दुनिया पीछे लगेगी। भक्ति नहीं करने देगी। आपने सुना होगा कि राक्षस रुकावट डालते थे। वो आज भी मौजूद हैं। रावण के कोई सींग नहीं थे। यह तो हमने बना रखा है। वो पुलस्त मुनि का पौता था। भक्ति में रुकावट डालने वाले राक्षस आज भी हैं। जब कोई आत्मा के कल्याण के लिए निकलता है तो दौहरी चोट करते हैं। यह उनका धंधा है। इसलिए—

**सहज जनि जानो साई की प्रीत ॥**



डांकिनी शाकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्मदूत हंकारे।  
सत्य नाम मुन भागें सारे, जब सतगुरु नाम उचारा है ॥

## मेरे सतगुरु दे दरबार

मेरे सतगुरु दे दरबार नूं जावन वालड़िया।  
मेरा हाल मेरे सतगुरु नूं आख सुनावी तूं  
उहनू आखी तेरे वाजो जीना मुश्किल है  
अरजोई मेरी दाता तक पुंचाई तूं।

मेरे सतगुरु.....

उहनूं आखी औगुण पाप ओ मेरे माफ करे।  
मेरे दिल दे गंदे हुजरे नूं ओ साफ करे।  
कर मिनत मेरे मन दी मैल धुलाई तूं।  
अरजोई मेरी दाता तक पुंचाई तूं।

मेरे सतगुरु.....

उहनू आखी तेरे दर्स नूं अँखियां तरस रहीयां।  
नहीं हटदीया पागल अँखियां छम-2 बरस रहीयां।  
उहदे चरणी मेरे हंजू भेंट चढाई तूं।  
अरजोई मेरी दाता तक पुंचाई तूं।

मेरे सतगुरु.....

उहनूं आखी दर्द विछोड़े दा नहीं सह हुंदा।  
उहनू आखी तेरे बिन इक पल नहीं रह हुंदा।  
मेरी दर्द कहानी उहनूं आप सुनाई तूं।  
अरजोई मेरी दाता तक पुंचाई तूं।

मेरे सतगुरु.....

झूठी है सारी दुनिया सतगुरु सच्चा है।  
घर उसदा असली काशी कावा मक्का है।  
कर मिनत मेरे दिल दी गल सुनावी तूं।  
अरजोई मेरी दाता तक पुंचाई तूं।

मेरे सतगुरु.....

# शब्द बिना सुरति आँधरी कहो कहाँ को जाय

---

प्रथमें सुरति शब्द निर्माई। धर्मदास मैं देहूँ बताई ॥

सुरति शब्द आए संसारा। आप ही समरथ रहा नियारा ॥

परम-पुरुष, जो अगम था, से पहले सुरति शब्द हुआ। सुरति चेतन है। यह परम-पुरुष का अंश है। यह सुरति संसार में फँस गयी। इसी सुरति से परम-पुरुष ने सब निर्माण किया। इसका शब्द के साथ बड़ा गहरा संबंध है। इसमें शब्द भी है। वही परम-पुरुष है। इसलिए—

शब्द बिन सुरति आँधरी, कहो कहाँ को जाय।

द्वार न पावे शब्द का, फिर फिर भटका खाय ॥

शब्द के बिना सुरति अँधी है। यह इसके भीतर ही है, पर प्रगट नहीं है। सद्गुरु इस शब्द (सार नाम) को प्रगट कर देता है। सद्गुरु शब्द को अन्दर में प्रगट कर सत्लोक जाने का द्वार खोल देता है।

शब्द सुरति कर मेल, शब्द मिले सतगुरु मिले।

बुन्द सिंधु कर मेल, मिले जो दूजा को कहे ॥

सुरति का शब्द से मेल होने पर ही परम लोक की प्राप्ति होती है और यह शब्द सद्गुरु ही जगाता है। जब यह शब्द (सार नाम) मिल जाता है तो हंसा रूपी बिंद परम-पुरुष रूपी सिंधु में समा जाता है।

सन्तन मत का यही उपदेशा।

पकड़ शब्द जाओ उस देशा ॥

और यह शब्द सद्गुरु से ही मिलेगा। इसलिए संतों ने सद्गुरु की महिमा अधिक कही है।

**हरि कृपा तब जानिये, दे मानव अवतार।**

**गुरु कृपा तब जानिये, छुड़ावे संसार॥**

कितना बड़ा अन्तर है ! परमात्मा यहाँ से छुड़ाने में सक्षम नहीं है। वो मानव-तन दे सकता है, पर छुड़ा नहीं सकता है। इसलिए—

**है यहाँ सतगुरु बिना कोई मोक्ष का दाता नहीं॥**

सद्गुरु मोक्ष का दाता है। जीव स्वयं अपनी ताकत से कुछ नहीं कर सकता है।

**जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥**

जब तक साहिब खुद नहीं छुड़ायेगा, नहीं छूट सकता है।

**मैं कबीर विचलूँ नहीं, शब्द मोर समरथ।**

**ताको लोक पठावहूँ, चढ़े शब्द के रथ॥**

शब्द रूपी जहाज़ पर बैठकर संत उस देश को जाते हैं।

साहिब ने सुरति को जगाने की बात कही। यह सुरति नाम से जगेगी। फिर नाम के सुमिरण की बात कही। यह सुमिरण क्या है? यह सुरति को एकाग्र करता है।

**होंठ कण्ठ हाले नहीं, मुख नहीं नाम उचार।**

**गुप्त सुमिरण जो लखे, सोई हंस हमार॥**

साहिब ने अनहद शब्द की बात भी की है।

**कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।**

**आँख कान मुख बंद कराओ, अनहद झिंगा शब्द सुनाओ॥**

**दोनों तिल एक तार मिलाओ, तब देखो गुलजारा है॥**

**चंद सूर्य एकै घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ॥**

**तिरबेनी के संघ समाओ, भोर उतर चल पारा है॥**

पर अनहद शब्द को ही लोगों ने सार-शब्द मान लिया। यहाँ भूल हो गयी। साहिब ने तो पाँचों मुद्राओं की भी बात की है। क्योंकि वो सबके ज्ञाता थे। उन्होंने सबकी बात करते हुए सत्य-भक्ति का भेद बताया, जो पाखण्डी नहीं जान सके। इसलिए उनके इस रहस्य को वही जान सकता है, वो खुद वहाँ पहुँचा हुआ हो।

है सबमें सबही ते न्यारा ॥

जीव जंतु जलथल सबही में,

शब्द बियापत बोलनहारा ॥

सबके निकट दूर सबहिते,

जिन जैसा मन कीन्ह बिचारा ॥

सार शब्द को जो जन पावै,

सो नहिं करत नेम आचारा ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो,

शब्द गहे सो हंस हमारा ॥

वो सबके पास है। फिर भी सबसे न्यारा है। वो तो सबमें शब्द रूप में समाया हुआ है। इस तरह वो सबके पास है, पर फिर भी, पास होते हुए भी मन-माया के आवरण के कारण सबसे दूर है।

इस सार-शब्द को जो सद्गुरु द्वारा पा लेता है, वो फिर काल-पुरुष के नियम, आचार आदि नहीं करता। साहिब कहते हैं कि मेरी बात को सुनकर विचार करो कि जो सार-शब्द को ग्रहण कर लेता है, वो हमारा हंस हो जाता है।

साहिब फिर कह रहे हैं—

जग में समझा बूझा रहो भाई ॥

यह दुनिया बहु रंग बावरी, जहाँ तहाँ तीर्थ नहाई।

कटे न पाप रहे तन भीतर, मन के मैल न जाई ॥

जोगी तपसी तप में भूले, पंडित भूल पंडिताई ।  
 सत्य वचन कबहूँ नहीं आये, मिथ्या जन्म गँवाई ॥  
 साहु महाजन धन में भूले, दया दीन्ह बिसराई ।  
 पाप की टोपी सिर पर बाँधे, माया जाल बिलाई ॥  
 शब्द विदेह नाम सर्वोपरि, सब घट रहत समाई ।  
 कहैं कबीर अबकी जो बूझे, अमर लोक चलि जाई ॥

यानी यह सार-शब्द सबकी आत्मा में समाया हुआ है ।

### आत्म में परमात्म दर्शो ॥

वो सबमें है । पर गुप्त अवस्था में है । जैसे बीज में पेड़ है, पर ऐसे अंकुरित नहीं होता । सींचकर अंकुरित करना पड़ता है और फिर सूर्य के प्रकाश का योग भी चाहिए । इस तरह वो है तो सबके पास, पर उस गुप्त सार-शब्द को जगाने के लिए सच्चा सद्गुरु चाहिए, जो अपनी ताकत से उसे जगा दे । इसी को नाम-दान की क्रिया भी कहते हैं । यानी कमाई करने के लिए कहने वाला नहीं चाहिए । क्योंकि अपनी कमाई से वो नहीं जग सकेगा । यदि ऐसा संभव होता तो सद्गुरु की कोई ज़रूरत नहीं होती; उसका इस संसार में कोई नामोनिशान ही न होता । पर—

**बिन सतगुरु पावे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय ॥**

उसे जाग्रत करने वाला सद्गुरु है । इसलिए सद्गुरु द्वारा ही उस सार-शब्द को पाया जा सकता है और उसे पाकर ही जीव संसार-सागर से पार हो सकता है । इसलिए तो कहा—

**है यहाँ सद्गुरु बिना कोई मोक्ष का दाता नहीं ॥**

बुल्लेशाह ऐसे ही नहीं कह रहे हैं—

**ना रब्ब मैं तीर्था दीठ्या, ना रोजा नमाजे ।**

**बुल्लेशाह नू मुर्शिद मिल्या, अन्दरों रब्ब रखाया ॥**

साहिब इस सार-शब्द के विषय में कह रहे हैं—

**प्रथमें शब्द सुरति निर्माई, धर्मदास में देहुँ बताई ।**

**सार शब्द से लोक बनाया, सोई सार हंसान मुक्ताया ॥**

इसी सार-शब्द से उस कुल मालिक ने उस लोक की रचना की और इसी सार-शब्द से हंसों को मुक्त किया। साहिब कह रहे हैं—

**कब गुरु मिलि हो सनेही आई ॥**

**लोभ मोह को जाल बनो है, तामे रहयो अरुझाई ।**

**जाकी साची लगन लगी है, सो वा घर को जाई ॥**

**सुरति समानी शब्द कुण्ड में, निरति रही लौ लाई ।**

**पिया बिना यों प्यारी तलफै, तलफि तलफि जिय जाई ॥**

**चलो सखी वा देशे चलिये, जहाँ पुरुष को ठाई ।**

**हंस हिरंवर चँवर ढरत है, तन की तपन बुझाई ॥**

**कहैं कबीर सुनो भाई साधो, शब्द सुनो चित लाई ।**

**नाम पान पांजी जो पावै, सो वा लोकै जाई ॥**

यानी सद्गुरु से वो सार नाम पाए बिना हंस उस देश में कतई नहीं जा सकता है और यह सार नाम उन सांसारिक गुरुओं के पास में नहीं मिलेगा, जो सगुण-निर्गुण भक्तियों के देने वाले हैं। यह केवल उन सद्गुरु से ही प्राप्त हो सकता है, जो स्वयं उस लोक में पहुँचा हुआ हो और वहीं से इस सार नाम को लाया हो। तभी तो इस नाम की इतनी महिमा है। यह नाम जीव को निर्मल कर संसार-सागर से पार कर देता है।

**जन्म जन्म की मैली छूटी, पुरुष शब्द जो पावई ।**

**नाम भाव सुमिरण गहे, सो जीव लोक सिधावई ॥**

दूसरी ओर जो अन्य नाम हैं, वो काया से संबंध रखते हैं, इसलिए वो निरंजन और माया तक ही ले जा सकते हैं।

पाँच तीन अधीन काया, न्यारा शब्द विदेह है ।

देह माहिं विदेह दरसै, गुरुमता निज एह है ॥

पाँच तत्व और तीन गुणों वाला नाम काया के अधीन है। वो बोलने में आ जाता है, लिखने में आ जाता है। पर जो न्यारा शब्द है, सार नाम है, वो विदेह है और इस देही के अन्दर नहीं है।

जब जीव सार नाम को पा लेता है तो वो नाम उसे उस देश में ले जाता है, जहाँ से जीव आया है। इस नाम के बिना आत्मा अँधी है। वो अपने घर की राह भूली हुई है। पर यह सार नाम उसे वहाँ ले जाता है।

जग मग नग मुक्तापुर, चल हंसा वा देश ।

तहाँ पुरुष इक रहत है, कहैं कबीर संदेश ॥

हम आए वही देश से, सुनिये संत सुजान ।

शब्द सही कर मानिये, कहैं कबीर प्रमान ॥

साहिब कह रहे हैं कि उस न्यारे देश से चलकर आया हूँ। और सद्गुरु के द्वारा प्राप्त सच्चे नाम (सार शब्द) के द्वारा ही उस लोक में जाया जा सकता है।



पिण्ड ब्रह्माण्ड और वेद कितेबै, पाँच तत्त के पारा ।

सतलोक यहा पुरुष विदेही, वह साहिब करतारा ॥

—दादू दयाल जी

नाम बिदेही जब मिले, अंदर खुलें कपाट ।

दया सन्त सतगुर बिना, को बतलावे बाट ॥

—तुलसी साहिब हाथरस वाले



## आत्म-विचार

- ☞ ध्यान करते समय अपने अंतःकरण में सुरति को रोककर अमर-पद का ध्यान करना चाहिए। जब शब्द ( साहिब ) और सुरति घट के समीप एक हो जावें तो समझना चाहिए कि अब ध्यान हुआ है।
- ☞ दोनों तिल अन्दर एक करने से ही अतिशीघ्र सुरति उठकर पिण्ड से बाहर हो जाती है।
- ☞ जितना समय ध्यान अमरपद में है उस समय तक अनन्त ज्ञान आत्मा का मिलता है तथा मन उसी तरह घुलता है, जैसे पानी में नमक।
- ☞ सद्गुरु जब भी चाहे शिष्य को परमपद में पहुँचा सकता है...सच्ची प्रार्थना होने पर।
- ☞ पूर्ण स्फूरना के साथ अत्यंत जागरूक होकर गुरु रूप में ध्यान करना चाहिए।
- ☞ श्वेत शब्द में अत्यंत गहराई से ध्यान करने से सुरति अत्यंत चेतन हो जाती है। अतः वहाँ अत्यंत गहराई से ध्यान करना चाहिए।
- ☞ ध्यान में आलस मत करें।
- ☞ मन-निग्रह का सर्वोत्कृष्ट तरीका गहन ध्यान है। गहन ध्यान के द्वारा ही पूर्ण मन-निग्रह होता है एवम् ठीक उसी तरह महान् गुणों की उपलब्धि होती है,

जिस तरह गोताखोर को समुद्र में गोता लगाने से रत्नों की प्राप्ति होती है।

- ☞ जितना समय ध्यान अमर पद में है, शिष्य को अनन्त सुख मिलता है।
- ☞ जब अनन्त में आत्मा प्रविष्ट होती है तो उसमें कोटि सूर्यों का प्रकाश आ जाता है। तब वह समतुल्य होकर साहिब के सामने विनती करता है।
- ☞ सुरति से ही सब प्रकाशित हैं, अतः सुरति को गहराई से ऊपर की ओर जाने दें।
- ☞ जैसे भोजन करने से भूख मिटती है, वैसे ही नाम करने से अज्ञान समाप्त हो जाता है।
- ☞ परम-पुरुष की सुरति में रहने से स्वभाव अत्यंत ही निर्मल हो जाता है।
- ☞ आप केवल सुरति हैं। गहन सुरति करें।

आवै न जावै मरे नहिं जनमे, सोई निज पीव हमारा हो।  
 ना कोई जननी ने जन्मो, ना कोई सिरजनहारा हो॥  
 साध न सिद्ध मुनि ना तपसी, ना कोई करत अचारा हो।  
 ना षट दर्शन चार वर्ण में, ना आश्रम व्यवहारा हो॥  
 ना त्रिदेवा सोहं शक्ति, निराकार से पारा हो।  
 शब्द अतीत अचल अविनाशी, क्षर अक्षर से न्यारा हो॥  
 ज्योति स्वरूप निरंजन नाहीं, ना ओम हंकारा हो।  
 धरणि न गगन पवन ना पानी, ना रवि चंद न तारा हो॥  
 है प्रगट पर दीसत नाहीं, सतगुरु सैन सहारा हो।  
 कहैं कबीर सब घट में साहिब, परखो परखनहारा हो॥

# कोटि जन्म का पंथ था गुरु पल में दिया पहुँचाय

---

प्रकृति ने हम सबको कर्मज्ञानेन्द्रियाँ समान रूप से दी हैं। इसमें प्रकृति ने भेद-भाव नहीं किया है। ऐसा नहीं है कि किसी को देखने के लिए तीन तो किसी को 2 आँखें दी हैं; किसी को 2 हाथ तो किसी को 3 हाथ दिये हैं; किसी को 4 टाँगें तो किसी को 2 टाँगें दी हैं। नहीं, प्रकृति ने यह भेदभाव नहीं किया है। प्रकृति ने कम-से-कम सैद्धांतिक रूप से एक ही व्यवहार किया है। हम सब एक जैसे हैं। सुख और दुख को अनुभव करने की वृत्ति भी एक जैसी है। प्रकृति का विधान बराबर है। इस तरह आन्तरिक चक्षु भी समान रूप से दिये हैं। ऐसा नहीं है कि किसी को विशेष रूप से सँवारा है। यह समस्या नहीं है।

यह दिव्य-दृष्टि सबके अन्दर है। प्रमाण मिल रहा है।

**तू देख हिय नैना ॥**

‘हिय’ हृदय को कहते हैं।

**चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे।**

**दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए ॥**

‘चश्म’ कहते हैं आँख को। चश्मदिल यानी अन्दर की आँख। गोस्वामी जी भी कह रहे हैं—

**श्रीगुरुपद नख गण मणि ज्योति।**

**सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥**

साहिब बार-बार कह रहे हैं—

## देख हिय नैना ॥

यह सबके पास है। इसका इस्तेमाल भी सब कर रहे हैं। सभी प्राणी अपनी इंद्रियों का प्रयोग कर रहे हैं। यह बुद्धि आदि भी सम्यक् रूप से सभी इस्तेमाल कर रहे हैं। आप कहेंगे कि हम नहीं कर रहे हैं। नहीं! सभी भला-बुरा देख रहे हैं। जीवन की घटनाओं को समझ रहे हैं। दिव्य-दृष्टि से जान रहे हैं कि क्या अच्छा होने वाला है, क्या बुरा होने वाला है, किस काम में लाभ होगा, किस में हानि। दिव्यदृष्टि में मन का खलल है। कहाँ है यह? अगर कहें कि आँख बंद करके अन्दर देखो, तो जब देखते हैं तो कुछ अँधकार दिख रहा है। आँखें बंद की, फिर किससे दिखा? आँखें तो बंद थीं।

कभी आप ध्यान एकाग्र करके कुछ देखते हैं। यह दिव्य-दृष्टि आपके पास तो है। कहीं दूर नहीं है।

**जहँ जाना तहँ निकट है, रहा सकल भरपूर।**

**बाड़ी गरब गुमान ते, ताते पड़ गयो दूर॥**

कभी कुछ अन्य पंथों के लोगों से पूछता हूँ कि अन्दर में कैसे उतरे, कैसे गये तो वो ठीक से नहीं बता पाते हैं, अटक जाते हैं या फिर किताबी बात बोल देते हैं। पर यथार्थ में जानते नहीं हैं।

बाहरी किताबी चीज़ों से काम नहीं चलने वाला है।

दिव्य-दृष्टि लाजवाब है। गीता में भी पुष्टि मिल रही है। कहा कि हे अर्जुन, इस आत्मा की आँखें नहीं हैं, तब भी सभी दिशाओं से देखने में सक्षम है। उसी से हमारी यह दिव्य-दृष्टि चलायमान है। यह केवल हमारी एकाग्रता है, जो सबमें है। जो देखना कहा, वो एकाग्रता का नाम है। कोई खिड़की नहीं है कि खोलें। इसका इस्तेमाल सभी कर रहे हैं। मुख्य बात है कि एकाग्र हो जाएँ। जब एकाग्र होते हैं तो अनुभूतियाँ होती हैं। कभी गहन चिंतन में चले जाते हैं; विचार करते हैं कि क्या किया जाए, क्या न किया जाए। कई चीज़ों के परिणाम भी पहले ही दिख जाते

हैं। इससे प्रमाण मिल रहा है कि यह सब इस्तेमाल कर रहे हैं।

हमारी दिव्य-दृष्टि खण्डित हो गयी है। यह कैसे खण्डित हो गयी है? एकाग्रता क्यों नहीं हो पा रही है, आत्मानुभव क्यों नहीं हो पा रहा है? क्योंकि आम आदमी भौतिक जगत के पदार्थों के विश्लेषण में लगा है। सुरति उलझ गयी है। तभी साहिब चेता रहे हैं—

**सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय ॥**

सात सुरति है। हमारे शरीर में सात सुरति काम कर रही हैं। प्रथम **अमी सुरति** है। यह आनन्द की अनुभूति करवाती है। जहाँ भी यह लगे, वहीं मज्जा आने लगता है। फिर दूसरी **चमक सुरति** है। ये बिखरी हुई हैं। कभी आँखें खुली होती हैं, पर आप देख नहीं पाते हैं। कभी आप किसी से मिलते हैं पर ध्यान आपका नहीं होता है। मिलकर भी नहीं मिलते हैं। कभी भोजन खाते हैं तो स्वाद नहीं मिलता है। क्योंकि जो स्वाद का अनुभव करवाने वाली सुरति थी, वो उसकी वहाँ नहीं थी। वो कहीं चली गयी थी। शरीर में जितने भी काम हो रहे हैं, सुरति का ही खेल है। तीसरी **मूल सुरति** है। यह दिव्य-दृष्टि बँट गयी है। आँखें देख रही हैं तो यह भी सुरति का कमाल है, कान सुन रहे हैं तो यह भी सुरति है, नाक सूँघ रहा है तो यह भी सुरति है। इसे मूल सुरति भी कहते हैं। मूल यानी विशेष। यह खास है। परीक्षा में बैठना है तो मूल सुरति चाहिए, ड्राइवर गाड़ी चला रहा है तो उसे भी मूल सुरति चाहिए। तो हरेक इसका इस्तेमाल करता है। हमारी दिव्यदृष्टि जगत के पदार्थों में बँट जाती है तो कुंद हो जाती है।

पदार्थों को देख रहे हैं, पर एकाग्र नहीं हों तो देखते हुए भी नहीं देख पाते हैं। क्योंकि अनुभव करने वाली आँख (सुरति) नहीं थी। भौतिक क्रियाएँ करते हैं तो यह दिव्यदृष्टि विखण्डित हो जाती है। योगी प्राणों का भी निग्रह करता है ताकि चौथी **शून्य सुरति** विखण्डित न हो।

साहिब की आध्यात्मिकता एक तथ्य की तरफ ले चल रही है कि सुरति का ही सारा खेल है।

पाँचवीं सुरति है—‘ठाँव ठाँव रस चाखे ॥’ यह दिव्य दृष्टि है, जिससे जगत के पदार्थों की अनुभूति करते हैं, उनकी तरफ उन्मुख होते हैं। यह सबके अन्दर है। छठी, ज्ञान सुरति है। यह हमें पूरा-पूरा बोध देती है। हरेक चीज़ का बड़ा विशेष महत्व है। ‘सप्तम सुरति हृदय के माहीं। हृदय से कुछ न्यारा नाहीं ॥’ यह पूरे अंगों को चलायमान करती है। देखा न, दिव्यदृष्टि सात रूपों में बिखरी हुई है। इसे समेटना है। कभी ध्यान में बैठते हैं तो कोई अनुभूति नहीं होती है। आप हताश हो जाते हैं। सब आपके अन्दर विद्यमान है।

**जहाँ जाना तहाँ निकट है, रहा सकल भरपूर।**

**बाड़ी गरब गुमान ते, ताते पड़ गयो दूर ॥**

तो इस दिव्य-दृष्टि से समस्त चीज़ों की अनुभूति होती है। यह दिव्यदृष्टि हमारी आत्मा ही है। इसपर मन का आवरण है। अन्दर में घूमने का मतलब गुफा के अन्दर नहीं घूमना है। समग्र एकाग्रता है।

**तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय।**

**कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावै कोय ॥**

यह है—अन्दर में घूमना। जब तन स्थिर हो, मन स्थिर हो, वचन स्थिर हो, सुरति, निरति भी स्थिर हों, एक पल ऐसा आता है तो वो कल्पान्तर की साधना से भी अधिक है।

तो ऐसी चीज़ें अन्तःकरण में भरी पड़ी हैं। और आदमी है कि बाहर जा रहा है—अपने कल्याण के लिए।

**पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै ॥**

साहिब कह रहे हैं कि अपने वजूद में आ। पलटने का मतलब कहीं खोपड़ी में नहीं घुसना है, कहीं पेट में नहीं घुसना है, दिल में नहीं घुसना है। अन्दर में उतरने का मतलब है—समग्र एकाग्रता।

बड़े सटीक शब्दों में समग्र एकाग्रता का उदाहरण दिया है।

**तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय।**

**कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावै कोय ॥**

यही एकाग्रता है। यह कैसे होगी? यह शरीर तो चलायमान होता है। किडनी तो काम कर ही रही है, दिमाग भी काम कर ही रहा है। इनका संचालन स्वांसा कर रही है, प्राण कर रहे हैं।

ड्राइवर ड्राइविंग सीट पर बैठता है तो चार चीजों का ध्यान रखता है—स्टेयरिंग, ब्रेक, क्लच, एक्सीलेटर। चार मुख्य चीजें होती हैं। ब्रेक से गाड़ी रोकता है। स्टेयरिंग से दिशा बदलता है, एक्सीलेटर से गति बढ़ाता है। क्लच से गेयर बदलता है। इस तरह अन्दर में खेल वायु का है, प्राणों का है। 10 वायुएँ अलग-अलग काम कर रही हैं। इन्हें 10 पवन कहते हैं। इनके द्वारा ही शरीर में तमाम काम होते हैं।

उदाहरण के लिए डाइजस्टिव सिस्टम को **अपान वायु** संचालित करती है। **उदान वायु** किडनी को संचालित करती है, हृदय को **प्राण** वायु संचालित करती है, **धनन्जय वायु** फेफड़ों को संचालित करती है, **किरकिल वायु** नासिका को संचालित करती है, **देवदत्त वायु** आँखों को संचालित करती है, **समान वायु** जोड़ों को और **सर्वतनव्याम वायु** पूरे शरीर की कोशिकाओं को संचालित करती है। देखा न, शरीर को 10 पवनों ने संचालित किया। जो आप जुबान से बोल रहे हैं, हवा का रहस्य है। सुन रहे हैं तो पवन का खेल है।

तो फिर तन स्थिर कैसे हो? किडनी काम करती-ही-करती है। हृदय धड़कता-ही-धड़कता है। फिर कैसे हो स्थिर? जब सुषुम्ना नाड़ी चलती है तो सब वायुएँ उसमें समाती हैं। वायु से ही सब अंग काम कर रहे हैं। तो सब सीज़ हो जाते हैं। यह हुआ तन सीज़ करना।

फिर मन का भी महकमा है। यह बड़ा लंबा है। स्वयं मन के चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। मन से संकल्प हो रहे हैं तो स्थिरता कैसी! बुद्धि से निश्चय हो रहे हैं। इसका भी निग्रह कठिन लग रहा है। चित्त का निग्रह कैसे करें? अनचाहे भी कई चीजें याद आ जाती हैं। यह भी एक क्रिया है। इसका संचालन भी आत्मा ही कर रही है, हमारी

दिव्य-दृष्टि ही कर रही है। मूल-सुरति अपने बिंदू पर आए तो ये पूरे कण्ट्रोल में आ जायेंगे।

सुषुम्ना में प्रवेश करते हैं तो मन का आकर्षण, उसका जोर कम हो जाता है। जैसे स्वप्न में जाते हैं तो सुरति कुंद हो जाती है, उसका जोर कम हो जाता है, क्योंकि जो उस अवस्था को चेतन करने वाली चीज़ थी, वो चली गयी। इस तरह सुषुम्ना में मन का तेज़ कम हो जाता है। सुषुम्ना में मन आपको इतना नहीं खींच पाता है, जितना कि जाग्रत में खींच लेता है। तब ध्यान का जोर बढ़ जाता है। पर मन हावी हो चुका है। वो आत्मा को कल्पनाओं में भ्रमित कर रहा है। दुनिया की चीज़ों में आप वैसे नहीं जा रहे हैं। मन चालाक है, चाहता है कि दिव्य-दृष्टि न खुले। क्योंकि जानता है कि यह खुली तो मुझे भी समझ जायेगा। फिर शरीर से सांसारिक काम नहीं करेगा, आत्मनिष्ठ हो जायेगा। इसलिए अपने को रखने के लिए, अपने वजूद को रखने के लिए आपको शरीर बनाए रखना चाहता है। इसी पर तो साहिब कह रहे हैं—

**तेरा बैरी कोई नहीं तेरा बैरी मन॥**

.....०.....०.....

**जीव के संग मन काल रहाई। अज्ञानी नर जानत नाहीं॥**

.....०.....०.....

**मन ही आहे काल कराला, जीव नचाए करे बेहाला।**

.....०.....०.....

**मन ही स्वरूपी देव निरंजन, तोही रहा भरमाई॥**

देखो, चेतावनी से भरे शब्द ही तो हैं न! आपकी समग्र एकाग्रता में मन का दखल है।

**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**

**कहैं कबीर गुरु पाइये, मन ही की परतीत॥**

जब भी साधकों से बात करता हूँ, एकाग्रता के विषय में पूछता हूँ तो मन के निग्रह की कोई बात ही नहीं करता है। क्योंकि वो केवल



पढ़कर बोल रहा है। स्वःनुभूति नहीं है। चाहे योगी भी है, मन निग्रह करना पड़ता है।

तो सुषुम्ना में पहुँचते हैं तो मन स्थिर होने लगता है। पाँव की पाँचों उँगलियाँ हमारे पाँवों को संचालित कर रही हैं। इस तरह काम, क्रोध आदि द्वारा मन संचालित होता है। स्थूल रूप में मन इंद्रियाँ हैं। कर्मज्ञानेन्द्रियाँ मन का स्थूल रूप हैं। मन, बुद्धि आदि मन का सूक्ष्म रूप हैं। यह इन सबके द्वारा हमारी दिव्य-दृष्टि को दुनिया में फैला रहा है। साधना में भी साहिब ने कहा—

**मन की तरंग मार लो, हो गया भजन।**

**आदत बुरी सुधार लो, हो गया भजन।**

**आया है तू कहाँ से, और जाना है कहाँ।**

**इतना सा बस विचार लो, हो गया भजन॥**

जब ध्यान में बैठते हैं तो मन ध्यान को चालाकी से धीरे-2 निकालकर ले जाता है। दिव्य-दृष्टि को कहीं दूर ले जाता है। मन पर गुरु लगाम कस दे तो काबू में आ सकता है।

बैल में ताक़त है; हाथी में भी ताक़त है। पर अंकुश से काबू में किया जाता है। इस तरह नाम की ताक़त से मन पर अंकुश लग जाता है।

साधना के दो आयाम हैं। पहला—एकाग्रता। शरीर की एकाग्रता और मन की एकाग्रता। दोनों को मन ही संचालित कर रहा है। इंद्रियों को भी संचालित कर रहा है और मन, बुद्धि आदि को भी संचालित कर रहा है। अगर आपकी इच्छा हुई कि आम खाना है तो यह इच्छा किसने उत्पन्न की? आत्मा में तो इंद्रियाँ ही नहीं हैं। स्वाद की अनुभूति मन करता है। दो कारण से यह मन आत्मा को इन चीज़ों में लगाता है। एक तो, वो आनन्द लेता है। यह आनन्द मन को मिलता है, आत्मा को नहीं। पर वो आत्मा को कहता है कि यह मज़ा तुझे मिला। फिर दूसरा, वो आत्मा को भ्रमित करने के लिए ऐसा करता है। आत्मा को इससे आनन्द नहीं मिलने वाला है।

षट्स हैं। इन सबका अनुभव हमारा मुख और ब्रेन कर रहा है। आत्मा इनसे परे है। आत्मा में मुख नहीं है। आत्मा भूल से इसी को आपा मान रही है। आत्मा ही सबको संचालित कर रहा है। आत्मा के प्रकाश से ही सब प्रकाशित हैं। इसे बाँधने वाला भी कोई और नहीं, यह स्वयं है। यह अपनी ताकत से अपने को भ्रमवश बाँध रही है।

आत्मा विरोध करे तो मन कुछ नहीं करवा सकता है। मन कहता है कि आम खाना है तो मुख से लार टपकने लगती है। आत्मा में तो यह है नहीं। वो कैसे ले सकती है इसका मज़ा। विषय-भोगों का आनन्द तो इंद्रि लेती है। आत्मा में ये इंद्रियाँ ही नहीं हैं। यह सब अनात्म-कर्म हुआ कि नहीं!

लोग कहते हैं कि दुनिया में 7 आश्चर्य हैं। मैं कहता हूँ कि एक ही आश्चर्य है और वो यह कि हम अपने को नहीं जान पा रहे हैं। यह आश्चर्य है। दुनिया बौराई हुई है।

**संतो मोहि देख देख आवै हाँसी।  
पानी में मीन मरे जात है पियासी॥**

पागल उसे कहते हैं, जिसका कण्ट्रोल न हो। सभी पागल ही तो हैं। किसी का भी काम, क्रोध आदि पर कण्ट्रोल नहीं है। मन चालाक है। यह सबको नचा देता है। यह आत्मा का दुरोपयोग कर रहा है। इसका अपना अस्तित्व नहीं है। इसकी अपनी उर्जा नहीं है। आत्मा की उर्जा से आत्मा को भ्रमित किये जा रहा है।

यह आत्मा सबमें एक समान है। मैं उदाहरण देता हूँ। 8 गाय रखी हैं। एक टोकरा रोटी का उन्हें सुबह-शाम खिलाता हूँ। कभी किसी को कम दो तो वो विरोध करती है। उन्हें कम-ज़्यादा का ज्ञान है। कभी लेट हो जाऊँ तो कहती हैं। एक बार टोपी पहनकर गया तो नहीं पहचाना। फिर बोला तो पहचाना। यानी वो आवाज़ को भी पहचान रही हैं। उनके पास कितना ज्ञान है!

कभी कुत्ते आ जाते हैं। ज़मीन खोदकर बैठ जाते हैं। मैं ब्रश कर

रहा था। मैंने एक लड़के को कहा कि पत्थर देना। उसने पत्थर पकड़ाया। वो कुत्ता पहले ही उठकर भाग गया। यानी उसे ज्ञान था कि अब यह पत्थर मारेगा। आप एक मच्छर को मारते हैं तो वो पहले ही उड़ जाता है। वो जान जाता है कि हमला कहाँ से आ रहा है। हाथ के दवाब से जान जाता है। एक छोटे से मच्छर को भी यह ज्ञान है। वो बच जाता है। ये सब चेतनता कहाँ से आई मच्छर में? चींटी से लेकर हाथी में एक ही आत्मा है। वो तो केवल शरीर का अन्तर है। इसलिए यह चीज़ सबमें है। आप जीव-जन्तुओं को देखें तो आपको अपने वाली चीज़ सबमें मिलेगी।

### हित अनहित पशु पक्षिन जाना।

तो ध्यान में कभी आप धुनें सुनने की सोचते हैं, कभी तारे देखने को बैठते हैं। यह नहीं सोचना। जहाँ का चिंतन होगा, वहीं पहुँच जायेंगे। कोई तस्वीर बनायेंगे तो बनती जायेगी। आप चाहें कि वो तस्वीर आपको आशीर्वाद दे तो वो पक्का देगी; हाथ उठेगा। पर यह मन का खेल था। मन का क्षेत्र बहुत बड़ा है।

### मन चीह्ने कोई बिरला भेदी ॥

इसे कोई जान नहीं पा रहा है। कोई भी नहीं।

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा।

सब मिलि लाग निरंजन सेवा ॥

जितनी भी आप क्रियाएँ कर रहे हैं, मन की गुलामी है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

माता-पिता, रिश्ते-नाते आदि इंद्रियों से हैं। आत्मा इंद्रियों से परे है। तो यह क्या झमेला है? पूरी रूहानियत कहूँगा तो हैरान हो जाओगे, मुझे पागल कहोगे। सच में मैं पागल लगूँगा। खाना झूठ, बैठना झूठ, देखना झूठ। सब स्वप्न।

जितनी भी अनुभूतियाँ हैं, मन से हो रही हैं।

मन ही आहे काल कराला, जीव नचाए करे बेहाला।

जीव के संग मन काल को वासा, अज्ञानी नर गहे विश्वासा ॥

मन परिवर्तनशील है। गीता में संवाद आता है। वासुदेव ने कहा कि सत्य और प्रेम ही जीवन के लिए परिपूर्ण नहीं हैं; हे अर्जुन! अपनी आत्मा के कल्याण के लिए भृकुटी के मध्य में ध्यान रोक, साधना कर। साधन करना यानी कण्ट्रोल करना। किस पर कण्ट्रोल?

आरती क्या होती है? 'आर्त' शब्द संस्कृत का है। 'आर्त' यानी पीड़ित। आरती यानी पीड़ित की प्रार्थना। यह सामूहिक की जाती है। एक आदमी किसी के पास समस्या लेकर जाता है तो इतना ध्यान नहीं देता है। जब बहुत आदमी जाते हैं तो वो चिंतन करता है। साधना क्या है? किसी चीज़ का निग्रह करना। इसे कहते हैं साधन। अगर अलग-अलग इंद्रियों को कंट्रोल करने की कोशिश करेगा तो नहीं हो पायेगा। एक को करेगा तो दूसरी एक्टिव हो जायेगी। दूसरी को करेगा तो तीसरी एक्टिव हो जायेगी।

**मूल कबीरा गह चले, कुल खेले संसार ॥**

तभी वाणी में एक सटीक शब्द कह रहे हैं—

**तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय।**

**कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावै कोय ॥**

कितना कठिन है तन को स्थिर करना! कितना कठिन है मन को स्थिर करना! फिर—

**...वचन थिर, सुरति निरति थिर होय ॥**

क्या है यह वचन थिर? तन स्थिर बताया, मन स्थिर बताया। कई बार आपके मन में भी सवाल उठते हैं। आप अपने आप से सवाल पूछते हैं। चेतना चलती रहती है। यह एकाग्र नहीं है। इसे रोकना है।

**सुरति निरति थिर होय ॥**

सुरति सात हैं और जो शरीर को चलायमान कर रही है, वो निरति भी एकाग्र हो जाए।

**कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावै कोय ॥**

ऐसा एक पल कल्पांतर की साधना से भी अधिक है।

मैं ध्यान सूत्रों के खिलाफ नहीं हूँ। आप उनसे मदद लें। पर हर जगह धोखा है। किसी भी जगह पर कैसे भ्रमित करते हैं? जैसे दूरी बताने वाले कि.मी. के पत्थर लगे होते हैं। मैं जालंधर जा रहा था तो किसी ने 60 कि.मी. से 0 हटा दिया था। यानी 6 कि.मी. बता रहा था।

आप किसी को भ्रमित न करो। आप शिष्ट बनें। साधन के विषय में यही कह रहे हैं। मन कैसे स्थिर हो? मन के अपने चार रूप हैं। जब संकल्प करता है तो मन कहते हैं। आप संकल्प किये जा रहे हैं। संकल्प एक पल भी नहीं रुक रहे हैं। चिंतन पल-पल किये जा रहे हैं। याद भी पल-पल किये जा रहे हैं। क्रिया भी पल-पल किये जा रहे हैं। जीवन के हरेक काम के लिए निश्चय कर रहे हैं। पाँव किसी दिशा में बढ़े तो पहले निश्चय हुआ, तभी बढ़े। काँटा आया रास्ते में, पाँव की दिशा बदल गयी, तो भी निश्चय हुआ। चित्त से याद किये जा रहे हैं। कभी उन तथ्यों को याद नहीं करना चाहते हैं, पर आ जाते हैं। ये सब मन से संचालित हो रहे हैं। पर आत्मा के सहयोग बिना कोई कुछ नहीं कर सकता है। कभी आप ध्यान में बैठते हैं तो अगले पल कहीं और घूमने लगते हैं। यानी कुछ चीजें रूकावटें दे रही हैं। फिर कैसे हो? बड़ा जटिल है मन। क्या चाह रहा है? आपको अपने में आने नहीं दे रहा है। अपने में आने का मतलब है—एकाग्रता। अपनी तरंगें भेजकर भ्रमित किये जा रहा है। इसलिए कह रहे हैं—

**मन की तरंग मार लो, हो गया भजन।**

**आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन।**

**आया है तू कहाँ से, और जाना है कहाँ।**

**इतना सा बस विचार लो, तो हो गया भजन ॥**

तो इस तरह मन की क्रियाएँ चलती हैं। मन क्रियाएँ कर रहा है। संकल्प कर रहा है। निश्चय कर रहा है। और कोई चीज़ इंसान के कंट्रोल में नहीं है। सबमें आपकी भूमिका है। पक्का है। याद कर रहे हैं तो आपकी भूमिका है। जैसे पंपिंग सेट को स्टार्ट करते हैं तो हैंडल घुमाते

हैं। सेल्फ-स्टार्ट में भी पुश तो किया न! आत्मा का सहयोग न हो तो मन कुछ नहीं कर सकता है।

बोलना क्रिया है, सोचना क्रिया है, स्वांस लेना एक क्रिया है। मन के चारों रूप हमारी आत्मा पर डिपेंड हैं। गाड़ी चल रही है, पर फ्यूल चाहिए। मन कुछ भी कर रहा है, पर जो ताकत चाहिए, वो आत्मा है। गाड़ी में फ्यूल नहीं है तो कुछ काम नहीं करेगा। पहिये आगे नहीं बढ़ेंगे, लाइट नहीं जलेगी। पूरा काम फ्यूल का है। मन के संचालन में आत्मा का सहयोग ज़रूरी है।

निश्चय एक क्रिया है, स्मृति भी क्रिया है। साधना में बैठे हैं, ध्यान कहीं चला गया तो क्रिया है। मन ने याद दिलाया तो यह क्रिया है। आप ऊपरी तौर पर एकाग्र होना चाहते हैं। अपने को स्वयं ही बाँध रहे हैं।

### **आपा को आपा ही बंध्यौ ॥**

हे आत्मा! तू अपनी उर्जा द्वारा अपना ही बिशान कर रही हो। मन के चारों अंगों को संचालित करने में आत्मा की उर्जा चाहिए।

आत्मा ऐसा क्यों कर रही है? आपने फैसला किया कि ध्यान करना है। ध्यान क्यों नहीं जमा? गुरु नानक देव कह रहे हैं—

**मन माया में फंद रह्यो, बिसरेयो नाम गोविंद।**

**कह नानक रे सुन मना, अंत पड़त यम फंद ॥**

आप अपने बच्चों को प्रेरणा देते हैं कि बुरी संगत में नहीं जाना। आत्मा बुरी संगत में आ गयी है।

**चार अंतःकरण के संग आत्मा खराब।**

**जैसे नीच प्रसंग से, ब्राह्मण पियत शराब ॥**

यदि मन का साथ न होता तो आत्मा चोरी करने नहीं जा सकती थी।

**बसे कुसंग चाहत कुशल, कहैं रहीम बड़सोस।**

**महिमा घटी समुद्र की, जो रावण बस्यो पड़ौस ॥**

इस तरह आत्मा इनके संपर्क में है। वो जगह आत्मा नहीं जान पा रही है। वो तरंगे आ रही हैं। कहाँ से आ रही हैं? मन ने यह रहस्य रखा। वैज्ञानिक ब्रेन तक जायेगा। पर ब्रेन के ऊपर भाग में सुषुम्ना में मन रह रहा है। ब्रेन को मन संचालित कर रहा है। इसलिए वो समझ नहीं आ रहा है, दिख नहीं रहा है।

ब्रेन में खुद नहीं आया। मन तरंगें भेजता है। यही प्लैन करता है। एक तरफ से आत्मा को व्यस्त रखना चाहता है। जानता है कि एक पल भी एकाग्र हो गयी तो अपने को जान जायेगी। इसलिए एक पल भी नहीं छोड़ता है। यह बहुत बड़ा तपस्वी है। आपको भी 24 घण्टे सतर्क रहना होगा।

**नानक जो निशि दिन भजे, रूप राम को जान ॥**

साहिब भी कह रहे हैं—

**उसको काल क्या करे, जो आठ पहर हुशियार ॥**

हर समय एकाग्र रहना।

**पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै ॥**

जब अपने में आते जायेंगे तो दिव्य-शक्ति बढ़ती जायेगी। यह तो आपमें है-ही-है। इसे कहीं से आहुत नहीं करना है। आत्मा समग्र गुणों से परिपूर्ण है। फिर अविवेक से काम कैसे हो जाते हैं? इंद्रियों के काम कैसे हो जाते हैं? क्योंकि आत्मा ने अपने को यही मान लिया है। आत्मा ने संकल्प-विकल्प को ही अपना आपा मान लिया।

कभी आप सोचते हैं कि अमर-लोक में जाकर देखेंगे कि कैसे हैं प्रभु! कैसी है आत्मा! नहीं, वहाँ जाकर ऐसा नहीं लगता है कि अहा, कैसा है प्रभु! कोई आश्चर्य नहीं लगता है। नींद में होते हैं तो जागने पर अपने ही घर में होते हैं। कोई आश्चर्य थोड़ा लगता है कि कहाँ हूँ! आपके अनन्त जन्म हो चुके हैं। तब भी आत्मा नहीं भूली है। आप जानते हैं। सूर्य को बादल आच्छादित किये हैं। आत्मा का कुछ भी कम नहीं किया जा सकता है। जो न्यूनाधिक हो जाए, वो नष्ट हो जायेगा। आत्मा में कुछ भी

प्रविष्ट नहीं किया जा सकता है। यह परिपूर्ण है। तो कुछ नया नहीं लगता है। कुछ आश्चर्य नहीं लगता है। हाँ, केवल यह आश्चर्य लगता है कि कहाँ चला गया था! वो प्रभु अनजाना नहीं लगता है।

आत्मा को ज्ञान है। इसलिए मैं किसी को भी हलके में नहीं लेता हूँ। केवल विस्मृति हो गयी है।

किताब का पन्ना पलटते हैं, पढ़ते हैं। पर कभी नज़र के सामने से पेज हट जाता है। ध्यान नहीं रहता है कि कौन सी चीज़ कहाँ लिखी है। कहीं किसी को मिलते हैं तो उसका नाम याद नहीं आता है। आप उसे जानते हैं, पर नाम याद नहीं आता है। चित्त की भ्रमांक स्थिति से यह हुआ। आत्मा मन के साथ में रह रही है, इसलिए भ्रमित हो गयी है।

**संगत से गुण होत है, संगत से गुण जाय ॥**

मन से आत्मा को विस्मृति हो गयी। वो नहीं जान पा रही है। इसने अपने को इच्छा रूप में मान लिया है। खुद ही खिलौना बन गयी है। इसका कारण मन है।

**तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन ॥**

जिन तथ्यों पर साहिब ने बोला है, यह अध्यात्म है। कोई कथा-कहानियाँ अध्यात्म नहीं है। आज अध्यात्म का नामोनिशान नहीं रहा है। साहिब तो कह रहे हैं—

**माला लकड़ पूजा पत्थर, तीरथ है सब पानी।**

**कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी ॥**

साहिब ने वज्र जैसा प्रहार किया।

आम-तौर पर आप देखते हैं कि लोग कथाएँ ही बोल रहे हैं। महापुरुष जो बोलते हैं, आत्मा समझती है। वो बातें आत्मा तक पहुँचती हैं। क्योंकि आत्मा जानती है। साहिब ने बड़ा प्यारा शब्द कहा—

**बिना सतगुरु नर फिरत भुलाना।**

**खोजत फिरत न मिलत ठिकाना ॥**



बड़े अच्छे अलंकार से साहिब ने आत्मतत्त्व विस्मृत कैसे हो गया, यह बताया है। अपनी ताक़त को कैसे खो दिया है, यह बता रहे हैं। कह रहे हैं कि बिना सच्चे सद्गुरु के यह भूला हुआ है।

**केहर सुत इक आन गड़रिया।**

**पाल पोस के कियो सयाना॥**

‘केहर’ शेर को कहते हैं। ‘सुत’ बच्चे को कहते हैं।

एक बार एक शेर का बच्चा बक़रवाल की बकरियों में आ गया। वो अपनी माँ से बिछड़ गया। बक़रवाल उसे उठाकर ले गया।

**पाल पोस के कियो सयाना॥**

माँ से बिछड़ा हुआ था। माँ नहीं मिली। अब वो भेड़-बकरियों के साथ रहने लगा।

**करत कलोल फिरत अंजियन संग।**

**आपन मरन उनहूँ न जाना॥**

‘अजा’ बकरी को कहते हैं। ‘कलौल’ यानी खेलकूद। वो गड़रिये की बकरियों के साथ खेलता था। अपना भेद उसे मालूम नहीं था कि शेर हूँ। बड़ा हो गया। घास भी खाने लगा। घास क्यों खाने लगा? आपके बच्चे भी कभी मिट्टी खाते हैं। बच्चों की जीभ इंद्री तेज़ होती है। मिट्टी में एक तत्व है। खाने की चीज़ नहीं थी। विषैले पदार्थ भी हैं। पर आदत पड़ गयी। मिट्टी खाना गंदी आदत है।

आत्मा को इंद्रियों के साथ रहने की बड़ी गंदी आदत पड़ गयी है। मेरा भतीजा मिट्टी खाता था। उसकी माँ कहती थी कि यह मिट्टी खाता है। मैंने कहा कि घर में मिट्टी न रखा करो। बाद में वो कहने लगी कि यह बाहर जाकर मिट्टी खाता है। मैंने कहा कि बाहर न जाने दो। फिर एक दिन कहने लगी कि जूते के तलवे से मिट्टी निकालकर खाता है। देखा न, कितनी गंदी आदत थी! मैंने कहा कि जूते ऊँची जगह पर रखा करो। फिर एक दिन कहने लगी कि अब दीवारों को चाटता है। अब दीवारें थोड़ा तोड़नी थीं। वाह! ऐसा ही है मन।

**तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहिं न चीहृत पंडित काजी ॥**

तो उसे बाद में समझाया, भय दिया कि नहीं खाओ। मिट्टी खाने की चीज़ नहीं है। इस तरह शेर के लिए घास खाने की चीज़ नहीं है।

एक भैंस का कट्टा है। भैंस को चारा देने जाऊँ तो वो मेरे पैर की टो पकड़कर नौचता है। उसने दोनों टो खा ली हैं। भूखा होता है तो कुछ खाना चाहता है। वो खाने की चीज़ नहीं है; पर भूखा था।

संभवतः, शेर का बच्चा भी घास खाना इसलिए सीख गया होगा, क्योंकि उसे कुछ और न मिला होगा। उसने देखा होगा कि बाकी भी यही खा रहे हैं। वो भी खाने लग गया। वो लड़ाई भी भेड़ की तरह ही करने लग गया। बोलने भी भेड़ की तरह ही लगा। गरजने की जगह मिनमिनाने लगा। कुत्ता भौंकता है, हाथी चिंगाड़ता है, शेर गरजता है, बकरी मिनमिनाती है। वो मिनमिनाने लगा। शेर को मिनमिनाना नहीं है। पर वो भेड़ों को मिनमिनाते देखता था। पूरे काम बकरियों वाले करने लगा। चलना भी बकरियों की तरह हो गया। वो बकरियों के साथ रह-रहकर बकरी बन गया। शेर कैसे बकरी बन सकता है? संगत।

**मृगपति और जंगल से आयो।**

**ताहि देख वो बहु डराना ॥**

अब जो बकरवाल था, वो जब भी बकरियों को डंडा मारता था तो शेर को भी मारता था। जैसे सभी उसके काबू में थे, वो भी था। जब कहीं खो जाता तो बकरवाल उसे पकड़ लाता था। क्या आदमी शेर को पकड़ सकता है? नहीं, बकरियों के संग में उसका यह हाल हो गया। वो पूरी-पूरी बकरी बन गया। अपने को नहीं जानता था। तो—

**मृगपति और जंगल से आयो, पाल पोस कर कियो सयाना ॥**

‘मृगपति’ शेर को कहते हैं। मृग 27 फीट छलाँग लगाता है। शेर 28 फीट मारता है। शेर का स्वभाव है कि अपना शिकार एक्टिव करके मारता है। जैसे आप भोजन लचीला करके खाते हैं। शेर पहले दौड़ाता है। आप फुलका ठीक से बनाकर खा रहे हैं। शेर भी ऐसे ही करता है।

वो पीछे से वार नहीं करता है। पहले भयभीत करता है। भागने का मौका देता है। दौड़ा-दौड़ाकर फिर मारता है। यह उसका स्वभाव है। उसे मृगा से चुनौती मिलती है। वो शेर को चैलिंग देता है। मृगा को शेर बड़े शौक से मारकर खाता है। पर जो शेर इंसान का माँस एक बार खा ले, वो फिर नरभक्षी हो जाता है, फिर दूसरे जानवर का शिकार करना उसे अच्छा नहीं लगता है। वो इंसान को ही खाता है। क्योंकि इंसान की चमड़ी ही माँस है। भालू को खायेगा तो पहले बाल हैं। वो नौचता है। जिस शेर के मुँह पर इंसान का खून एक बार लग जाए तो वो दूसरे जानवर का शिकार नहीं करता है।

तो दूसरे जंगल का मृगपति आया। उसे देखकर वो बकरी बना हुआ शेर का बच्चा डर गया।

### ताहि देख वो बहु डराना ॥

शेर ने देखा कि यह शेर का बच्चा है और घास खा रहा है, बकरियों के साथ में है और डंडे भी पड़ रहे हैं। यह तो बकरी बना हुआ है। यह तो शेर के धर्म के खिलाफ़ है। वो उसके पास पहुँचा। उसे देख बच्चा डर गया।

एक बार लंगूरों के टोले में इंसान भी था। वो क्या कर रहा था? जैसे लंगूर छलाँग मार रहे थे, वो भी मार रहा था। इतना तेज़ कोई आदमी पेड़ों में नहीं जा सकता है। वो लंगूरों के साथ लंगूर हो गया था। जहाँ लंगूर जाएँ, वो भी चला जाता था।

अब सवाल उठा कि वो कैसे लंगूर बन गया? था वो आदमी। 2-3 चीजें हैं। पहली बात है कि 90 प्रतिशत मेलजोल है। आदमी की 90 प्रतिशत आदतें मिलती हैं। पर टेक्निकल कारण कुछ और है। वो क्यों छलाँगें मार रहा था? क्योंकि फल खाने और दूध पीने से उसका शरीर लचीला हुआ। छोटेपन से ही लंगूरनी उठाकर ले गयी होगी और उसे ममता दे दी होगी, अपना दूध पिला दिया होगा।

मैंने अखबार में पढ़ा कि एक कुत्तिया कूड़े के ढेर पर पड़े हुए

छोटे से बच्चे को रोज़ दूध पिलाने जाती थी। किसी ने बच्चे को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया था। कुतिया ने सोचा होगा कि कचरे में पड़ा है। वो रोज़ दूध पिलाने जाती थी। उसका टाइटल भी था—कुतिया की ममता।

संभवता लंगूरनी ले गयी होगी और प्यार दे दिया होगा। बच्चे ने भी उसे ही अपनी माँ समझ लिया होगा। जैसे कोई बच्चा अपनाते हैं तो वो तो उन्हें ही अपने माता-पिता समझता है न! ऐसा ही हुआ होगा। अब धीरे-धीरे उसे सब सिखा दिया होगा। पर उसके शरीर का ढाँचा आदमी की तरह था। दूध पीने और फल खाने से आदमी तेज़ होगा।

पर यह नहीं कह रहा हूँ कि अनाज नहीं खाना। क्योंकि लोग मेरी बात को उलट-पुलट कर देते हैं। एक दिन मुझे किसी ने कहा कि गाय माता है तो भैंस क्या है? लोग सवाल पूछते हैं। भैंस की दो चीज़ें उसे थोड़ा किनारा कर रही हैं। भैंस पहले अपना शरीर बनाती है, पर गाय जितना खिलाओ, वापिस कर देती है। पर ईमानदारी से देखें तो—

**जिसका पीजिए दूध, तिसको कहिये माय ॥**

इसलिए सभी की रक्षा करनी है।

तो वो बच्चा लंगूर हो गया। वो इंसान से किनारा करता गया। लंगूर बन गया। छलाँगें इसलिए मार रहा था कि दूध वही पिया, जीनस् आ गये। लंगूरों के टोले में भाषा भी सीख गया। बच्चों की याददाश्त भी बड़ी तेज़ होती है।

एक बार गुरुदेव के पास कुछ लोग आए, कहा कि यह कैसा कलयुग आ गया है, इंसान का बच्चा लंगूर बन गया है। तो गुरुदेव ने यह बात बताई थी।

वो लंगूरों की तरह ही काट भी रहा था, लंगूरों की तरह आदमी से चिढ़ रहा था, सब काम कर रहा था, उलटे लटक रहा था। संभवतः वो शेर का बच्चा भी वैसे ही हो गया। एक गाय ने बच्चा दिया तो दूसरे दिन मर गयी। अब दूसरी गाय उसे दूध पिलाने लगी। वो समझ रही थी कि इसकी माँ मर गयी है। कभी-कभी वो दूध पिला देती थी। फिर उसे

निप्पल से दूध पिलाने लगे। पहले विरोध हुआ। पर बाद में वो समझ गया कि उसकी जीविका का कोई और साधन नहीं है।

संभवतः इसी तरह हमारी आत्मा मन और इंद्रियों के संग में बिगड़ी है।

तो जंगल के शेर ने देख लिया कि घास खा रहा है। फिर आश्चर्य हुआ। वो वहाँ गया तो उसे देख बच्चा डरने लगा। शेर ने कहा कि डरो नहीं। उसने कहा कि तुम मुझे खा जाओगे। शेर ने कहा कि तू भी शेर है। उसने कहा कि मैं तो बकरी हूँ। वो डरने लगा।

### पकड़ भेद ताहि समझाना ॥

वो बच्चे को चश्मे के पास ले गया और उसे दिखाया कि देख, मैं और तू एक जैसे ही हैं। उसने कहा कि क्या सच में मैं शेर हूँ? शेर ने कहा कि तू शेर है। उसने उसे सब कुछ सिखा दिया। पंजा चलाना भी सिखा दिया। दहाड़ना भी सिखा दिया। उसकी वो ताक़त तो थी ही। इस तरह आत्मा की ताक़त कम नहीं हुई है, केवल मन के संग में कुंद हो गयी है।

### सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल ॥

कभी किसी की फटी हालत देखकर हम बदतमीजी से पेश आते हैं। कमजोर शक्ल देखकर बदतमीजी कर देते हैं। यानी हम पैसे को इज्जत देते हैं, आत्मा को नहीं। उदाहरण देता हूँ। मैं स्लीपर क्लास में यात्रा करता था। एक मास्टर जी आए। वो वापिस जा रहे थे। मेरे साथ ही चल पड़े। वो तंग पड़े। उन्होंने कहा कि आप ए.सी. में यात्रा किया करें। मैंने कहा कि 4-5 गुणा खर्चा है। तब 500 रुपये की टिकट थी। उसने कहा कि गुरु जी, मेरी प्रार्थना है कि आप आने-जाने की टिकट मेरी तरफ से ले लेना। मैंने कहा कि मैं ए.सी. में जाना ही नहीं चाहता हूँ। अगर ए.सी. में बैठा रहूँ तो फिर धूप में जाकर सत्संग नहीं कर पाऊँगा। मैं स्वाभाविक रहना चाहता हूँ।

कुछ कहते हैं कि अकेले नहीं घूमें। पहले मैं अकेले ही घूम रहा

था। तो कहा कि आप हमारे आदर्श हैं, कई घटनाएँ हो जाती हैं, आप किसी को साथ रख लिया करें। तो मैं ए.सी. में यात्रा करने लगा था। फिर लड़के को भी साथ में लेकर चलने लगा।

एक दिन टी.टी. आया, उससे लड़के से कहा कि तुम अन्दर कैसे आए? उसने बड़ी बदतमीजी से बात की। मैंने कहा कि सुनो, मैं आपकी शिकायत करूँगा। आपकी बातचीत ठीक नहीं है। जो भी कर्मचारी है, वो जनता का सेवक है। हरेक कर्मचारी का राजा पब्लिक है। वो सेवक है पब्लिक का। टैक्स के रूप में पब्लिक द्वारा संग्रहीत धन उसे दिया जा रहा है। मैंने कहा कि आपने यह व्यवहार क्यों किया? मैं पक्का शिकायत करनी है; बहुत बड़ा अपराध कर दिया आपने। इसका मतलब है कि दुबला-पतला यात्रा नहीं कर सकता है ए.सी. में। साधारण कपड़े वाला यात्रा नहीं कर सकता है। आपकी वाणी कितनी कठिन थी! आप कैसे पेश आए! उसने कहा—सॉरि।

जहाज़ में जाँएँ तो एयर होस्टैस होती है। वो उतनी देर के लिए आपकी नौकर है। आपकी जूठन भी उठाती है। मेरे पास कोई आए तो मैं अच्छी तरह से पेश आता हूँ, सबकी बात सुनता हूँ। समय नहीं है तो बात और है। मैं आत्मा की तरह पेश आता हूँ।

**स्वामी से सेवक बड़ा, गावत वेद पुराण।**

**राम बांध लंका गये, लांघ गये हनुमान ॥**

आप किसी पर भी जुल्म नहीं करें। कुरूप है तो उसका मखौल न उड़ाएँ। किसी की आँख खराब है तो उसे देखकर मुस्कराएँ नहीं। यह जुल्म है। यह तो उसके दर्द पर नमक फेंकना है। भूलकर भी अपनी ओर से किसी को पीड़ा न दें। उसकी आत्मा दुखेगी। आपके साथ कोई ऐसा व्यवहार करे तो कैसा है! आपको खेद होता है।

आप सबको इज्जत दें। बड़ों को इज्जत दें। मोटरसाइकिल है तो 60 की स्पीड से ऊपर न चलाएँ। मैं सबको सावधान करता हूँ। यह मेरी सीख याद रखना।

दो लड़के मोटरसाइकिल पर जा रहे थे। बड़ी स्पीड में जा रहे थे। आगे बस आई। गलती लड़कों की थी। बस के साथ टच हुई मोटरसाइकिल और लड़खड़ाकर गिर गयी। लड़के उठे और बस वाले के पास गये। बस एक बुजुर्ग चला रहा था। खींचकर बस से उतारा और मुँह पर खींचकर मुक्के मारे।

सवाल है कि कितनी पीड़ा दी होगी उन्होंने उसे? किसी के साथ भी ऐसा व्यवहार करने से पहले सोच लें। भूल कर भी किसी के साथ ऐसा व्यवहार न करें, जो आप अपने लिए नहीं चाह सकते हैं।

उसके दाँत भी टूट गये होंगे। वो घर गया होगा। उदास हो गया होगा। उसकी कोई गलती नहीं थी। वो दुखी हो गया। बातचीत से निदान करना चाहिए था। जानवर यह काम नहीं कर सकते हैं, इसलिए वो झगड़ा करते हैं, पर इंसान को यह काम शोभा नहीं देता है। वो बुजुर्ग था। इस उम्र में भी गाड़ी चला रहा था। उसे कितनी पीड़ा हुई होगी! हमारा उससे कोई शारीरिक नाता नहीं था। चुटकी में जो सज़ा देनी थी, दे दी। साहिब ने अच्छी बात कही—

**दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।**

**बिना सांस की फूँकनी, लोहा देत गलाय ॥**

क्रोध चालाक है। जब देखता है कि सामने वाला बलवान है तो बातचीत करता है। तब झगड़ा नहीं करता है। तब क्रोध रफूचकर हो जाता है। इस तरह जीवन जीने की शैली सीखना। नफरत से देखो भी नहीं किसी को।

**कबीरा इस संसार में, दो बातें हैं सार।**

**दुख दिये दुख होत है, सुख दिये सुख होय ॥**

कोई आपको पीड़ा दे तो अन्तःकरण दुखता है। अगर उसने सोच लिया कि आपकी टाँग टूटे तो पक्का टूटेगी। कभी-न-कभी टूटेगी। अन्तःकरण से सोच लिया तो नुक़सान हो जायेगा। कोई अमीर है तो ग़रीब को न सताना। सुन्दर हो तो कुरूप को न सताना। ये सब अपराध

है। संतों ने जीवन जीने की दिशा बताई है। आप अखरोट की तरह रहें। ऊपर से कठोर रहें पर भीतर से कोमल हों।

### निर्मल जन सबन से प्रीति ॥

रामायण का शब्द याद आ गया। जो शीलवंत हैं, महापुरुष उनसे प्रभावित हो जाते हैं। वशिष्ठ मुनि भरत को बड़ा प्रेम करते थे। वो सबके गुरु थे। लेकिन सबसे अधिक प्रेम भरत से करते थे। क्यों? राम जी ने अपने मुँह से भरत की बढ़ाई की है।

### जापर गुरु को अति अनुरागू, को कह सके भरत को भागू ॥

जिनसे गुरुजन प्रेम करते हैं, उसके भाग्य की तुलना नहीं की जा सकती है। यदि प्रेम किया तो आपकी तरफ ध्यान चला गया। भरत शील थे। लक्ष्मण से भी अधिक ताक़त थी। भरत अपमान नहीं करते थे। भरत की माँ कश्मीर की थी। पहले कश्मीर का कैकय नाम था। प्रदेश, गाँव के नाम पर पहले लड़कियों के नाम रखते थे। गांधारी गांधार देश की राजकुमारी थी। तो कैकय से कश्मीर हो गया। अयोध्या से बड़ी दूर पड़ता है। वो राजनीति में बड़ी निपुण थी। जब उसने राम को वनवास और भरत को राज्य के रूप में दो वर माँगे तब भरत ननिहाल में था। इंसान में ग़लतफहमियाँ आ जाती हैं। हमें कैसा जीवन जीना है, इसकी पूरी झलक रामायण में मिल जाती है। मैं पहले रामायण के माध्यम से सत्संग करता था। पर अब नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि तब संगत सगुण उपासना करने लग जायेगी, भ्रमित हो जायेगी।

जब भरत वापिस आया तो पता चला। उसने माता से कहा कि आपने बड़ा ग़लत किया; मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारी कोख से जन्म लिया। आने वाला समाज मुझे कभी माफ़ नहीं करेगा। वे बड़े हैं तो राज्य के हकदार वे हैं। भरत बड़ा दुखी हुआ, क्योंकि उसे कोई आकांक्षा नहीं थी कि मुझे मिले। वो बड़ा टॉप था। तभी राम जी भी अधिक प्रेम करते थे।

### भरत समान नहीं भाई जग में ॥



कहा कि रामजी को मनाकर वापिस लाऊँगा। सबने कहा कि हमने बड़ा मनाया; वो नहीं आने वाले हैं। भरत को भरोसा था, कहा कि मैं बुला लाऊँगा। भरत चल पड़ा। सम्राट था वो भी। अयोध्या राजधानी थी भारत की। भारत के राजा थे। अकेले नहीं जाना था। तो सेना सहित खोज में निकले। जहाँ-जहाँ पर राम जी गुजरे थे, उस-उस जगह को प्रणाम करता चला। जिस मल्लाह ने नाव में बिठाकर पार किया था, उसकी खोज की; उसे गले लगाया। ढूँढ़ते जा रहे थे। भरत ने खोज की। क्योंकि अनजाने में गये थे। तो केवट को हृदय से लगाया। कहा कि तेरी नाव में बैठकर पार गये। तो वहाँ पहुँचे। दूर से पेड़ की ओट से लक्ष्मण जी ने देखा कि भरत आ रहा है, सेना भी ला रहा है। वो पंचवटी में गया, राम जी से कहा कि जल्दी उठो, धनुष-वाण उठाओ, देखो, भरत कितना कपटी निकला; वो युद्ध करने आ रहा है। राम जी ने कहा कि तू जीवन भर अपने को माफ़ नहीं कर पायेगा। तूने कैसे सोच लिया कि भरत ऐसा काम कर सकता है! भरत जैसा शील कोई भी नहीं है। वशिष्ठ जी ब्रह्मवेत्ता हैं; वो भरत को बड़ा प्यार करते हैं। वो अपने लिए किसी को पीड़ा नहीं दे सकता है। तूने यह धारणा क्यों लाई? बहुत कम लोग जानते हैं कि भरत बड़े थे। शायद कहीं लक्ष्मण से भी अधिक साधना भरत की थी। ताकत भी बड़ी थी। जब हनुमान जी संजीवनी लेकर जा रहे थे तो अपने वाण से नीचे उतार दिया था। तो भरत बड़े थे। राम जी से प्रार्थना की, कहा कि चलो। राम जी ने कहा कि नहीं, सुनो, नहीं चलना है। ऐसा ही विधि का विधान था।

**रघुकुल रीत सदा चल आई। प्राण जाय पर वचन न जाई॥**

कहा कि नहीं चल सकता हूँ। आखिर में कहा कि यदि आपके दिल में थोड़ा भी प्रेम है तो एक बार मेरे लिए चलो, नहीं तो समाज मुझे माफ़ नहीं करेगा, सब कहेंगे कि भरत भी शामिल था। मेरे कारण से चलो। राम जी ने समझाया कि वचन दिया है, विवश हूँ। जंगल में जो समय गुजरा, उसका अरण्यकाण्ड में विवरण है। अंत में नहीं माने तो उनकी खड़ाऊँ लेकर चले। भरत ने कहा कि सिंघासन पर आपकी

खड़ाऊँ ही रहेंगी; मैं मंत्री बनकर राज्य का संचालन करूँगा। यह बड़ी बात थी। इसलिए जो बड़े लोग हैं, वो स्वार्थ में नहीं होते और सांसारिक वैभव में नहीं होते। उनसे परे होते हैं। यदि इनमें हैं तो दुनिया को रास्ता नहीं दे सकते हैं।

**चलो चलो सब कोई कहे, पहुँचा बिरला कोय।**

**एक कनक अरु कामिनी, दुर्गम घाटी दोय ॥**

साहिब ने जो कहा, अनूठा कहा। वो तो राम जी के गुरु के गुरु थे। सत्सुकृत के नाम से वशिष्ठ जी को ज्ञान दिया था।

मैं एक बात कहता हूँ कि हर काम तेज़ी से करें, पर एक काम तेज़ी से नहीं करना चाहता हूँ। किसी का अपमान नहीं करना चाहता हूँ। आप भी किसी का अपमान करने में तेज़ी मत करना। किसी की सेवा में तेज़ हो जाना। सेवा में ताक़त लगाना। अपमान में ढीले हो जाना, कोशिश करना कि नहीं करें।

...तो

**मृगपति और जंगल से आयो....**

तो जब जंगल का शेर आया तो सब सिखा दिया।

**पकड़े भेद ताहि समझाना ॥**

पानी के चश्मे में दिखाया कि तू क्या है। कहा कि तू अपनी मां से बिछड़ गया था। उसे सब कुछ सिखाया, कहा कि अब जा। सभी सिखाते हैं। चिड़िया उड़ना सिखाती है। कुत्तिया भी अपने बच्चे को सिखाती है। तो जब वो बकरियों के बीच में गया तो जैसे गडरिया पहले सबकी तरह उसे भी डंडा मारता था, अब भी मारने लगा तो वो दहाड़ा। सारी भेड़ें भाग गयीं; गडरिया भी भाग गया। रूपांतर यह है कि परमात्म रूपी शेर का बच्चा इंद्रिय रूपी भेड़ों के साथ विषय रूपी घास खा रहा है। मन रूपी गडरिया उसे डंडे मार रहा है। जंगल के शेर रूपी संतजन मिलते हैं तो आज्ञाचक्र रूपी चश्मे के पास ले जाते हैं, कहते हैं कि देख, तू आत्मा है।

उसकी ताक़त कहीं कम नहीं हुई थी। पर कहाँ थी ताक़त?

ताक़त भेड़ों जैसी बन गयी क्या? नहीं, भेड़ों के साथ रहकर भी शेर जैसी ही ताक़त थी। ताक़त नहीं बदली। वही थी। स्वभाव बदल गया। भेड़ों की संगत में रह-रहकर भेड़ों की तरह ही हो गया। शेर मिला तो उसे उसका स्वरूप दिखा दिया।

इस तरह संतजन मिलते हैं तो आत्मा को जगा देते हैं। इंद्रिय रूपी भेड़ें भी डरने लगती हैं। मन कहीं भटकाता है तो आत्मा कहती है कि यह नहीं करना है। मन की ताक़त नहीं रह जाती है।

इस तरह आपको बदल दिया। यह बदलाव कैसे आया? आत्मदेव अपनी ताक़त समझ चुका कि मेरी इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता है। इसलिए आप स्थिर हो गये और इच्छाएँ ख़त्म हो गयीं। आप अनूठे हो गये। आप निराले हो गये। अब आत्मदेव भ्रमित नहीं हो रहा है। जगत के पदार्थों का आकर्षण ख़त्म हो गया। कैसे ख़त्म हो गया? जैसे भ्रमवश रस्सी को साँप मानने के भ्रम से भयभीत थे। अगले पल यथार्थ ज्ञान हो गया तो भ्रम ख़त्म हो गया। फिर चाहें कि डरें तो भी उस रस्सी से भय नहीं लगता है। इस तरह चाहने पर भी अब दुनिया के कामों में मज़ा नहीं मिलने वाला है।

**सतगुरु मोर शूरमा, कसकर मारा बाण।**

**नाम अकेला रह गया, पाया पद निर्वाण॥**

सद्गुरु ने बड़ा ही अनूठा काम किया।

**पकड़े भेद ताहि समझायो॥**

इस तरह मन का बड़ा जोर है। आत्मा को भ्रमित करता है। गुरु आत्मरूप दिखाकर इस मन से पार कर देता है।

**कोटि जन्म का पंथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय॥**

इसलिए तो मैं कहता हूँ कि जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है।



# योगमत और संतमत में अंतर

योगमत	संतमत
1. योगमत में काया का नाम है।	1. संतमत में विदेह नाम है।
2. योग मत चाचरी, भूचरी, अगोचरी मुद्राओं के इर्द-गिर्द घूमता है, जो शरीर में हैं।	2. संतमत में पाँच मुद्राओं से आगे शीश से सवा हाथ ऊपर ध्यान रखने को कहा है।
3. यह नाम लिखने-पढ़ने में आता है। इनसे काल-पुरुष ने पाँच तत्व पैदा किये और शरीरों की रचना की।	3. यह अकह नाम है जो लिखने-पढ़ने में नहीं आता है और पाँच तत्वों से बाहर है।
4. योगमत में अनहद धुनों को ही परमात्मा माना जाता है।	4. संतमत में आत्मा किसी शब्द की मोहताज नहीं, क्योंकि आत्मा अपने आप में परिपूर्ण है।
5. योगमत करनी अथवा कमाई का मार्ग है।	5. यह सहज मार्ग है, गुरु कृपा का मार्ग है और भृंग-मता है।
6. योगमत में सुरति शब्द का अभ्यास किया जाता है।	6. संतमत सुरति को चेतन करने का मार्ग है।
7. योगमत में काल का नाम लिया जाता है। यह नाम शरीर को दिया जाता है।	7. संतमत जिंदा नाम प्रदान करता है जो कि शरीर को छोड़ आत्मा को दिया जाता है।
8. योगमत में गुरु की भूमिका न के बराबर होती है।	8. संतमत में भक्ति का सार ही संत सद्गुरु है।
9. योगमत सीमाबद्ध है, जिसमें साधक दसवें द्वार तक ही जाता है।	9. संतमत असीम है जो कि ग्यारहवें द्वार की बात करता है, जो सुरति में है।

योगमत	संतमत
10. योगमत निराकार निरंजन की ही सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता है।	10. संतमत में निराकार सत्ता से आगे चौथे लोक अर्थात् अमर लोक की बात की जाती है।
11. योगमत में कमाई का फल खत्म होने पर वापिस माता के पेट में आना पड़ता है।	11. संतमत में जीव सदा के लिए आवागमन से मुक्त हो जाता है और अपने निजधाम सत्य लोक को चला जाता है।
12. योगमत बैशाखियों के सहारे चलता है जो कि शास्त्रों की साक्षी देकर अपने आप को स्थापित करता है।	12. संतमत में संत सद्गुरु अपने अनुभव से बोलता है जो किसी का मोहताज नहीं होता है।
13. इसमें रिद्धि-सिद्धि और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, मगर आत्मा का ज्ञान नहीं होता है।	13. संतमत में जीव को आत्मज्ञान होने से आध्यात्मिकशक्तियाँ मिलती हैं।
14. योगमत मीन और पपील मार्ग है।	14. जबकि संतमत विहंगम मार्ग है।

- ✿ पाँच शब्द औ पाँचों मुद्रा, सोई निश्चय माना।  
आगे पूरण पुरुष पुरातन, उसकी खबर न जाना॥
- ✿ नौ नाथ चौरासी सिद्ध लों, पाँच शब्द में अटके।  
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुँह लटके॥
- ✿ काया नाम सबहिं गुण गावैं, विदेह नाम कोई बिरला पावै।  
विदेह नाम पावेगा सोई, जिसका सद्गुरु साँचा होई॥
- ✿ जब तक गुरु मिले नहीं साँचा, तब तक गुरु करो दस पाँचा॥

**सत्यपुरुष का पाँचवा पुत्र निरंजन है  
जो तीन लोक का राजा, चौरासी लाख योनियों  
व अनहद का रचयिता है**

1. मैं सिरजों मैं मारऊँ, मैं जारौ मैं खाऊँ ।  
जल थल नभ महँ रमि रहा, मोर निरंजन नाऊँ ॥
2. सात शून्य सातहि कमल, सात सुरति स्थान ।  
इक्कीस ब्रह्माण्ड लग, काल निरंजन ज्ञान ॥
3. एक पाट धरती चले, एक चले असमानी ।  
काल निरंजन पीसन लगे, सवा लाख की धानी ॥
4. गुप्त भयो हैं संग सबके, मन निरंजन जानिये ॥
5. अनहद की धुन भँवरगुफा में, अति घनघोर मचाया है ।  
बाजे बजे अनेक भांति के, सुनि के मन ललचाया है ॥

- ..... ।
- यह सब काल जाल को फँदा, मन कल्पित ठहराया है ॥
6. तहाँ अनहद की घोर शब्द झनकार है ।  
लग रहे सिद्ध साधु न पावत पार है ॥
  7. मन ही निराकार निरंजन जानिए ॥
  8. ज्योति निरंजन लग काल पसारा ।  
मन माया भई किया सृष्टि विस्तारा ॥
  9. बिना जाने जो नर भक्ति करई ।  
सो नहीं भवसागर से तरई ॥
  10. मन ही सरूपी देव निरंजन तोहि रहा भरमाई ।  
हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई ॥

—कबीर साहिब

# ऐसे करें सतगुरु भक्ति

---

गुरु-भक्ति क्यों करें? क्या पड़ी है गुरु-सेवा की? सीधा परमात्मा (परम-पुरुष) की भक्ति कर लेते हैं। आखिर गुरु-भक्ति के लिए क्यों बोला गया?

**शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु रिझाय आपा खोई ॥**

समझें। वो परमात्मा निर्द्वन्द्व है, मायातीत है, व्योमातीत है। उसकी तरंगें आपको नहीं समझा सकती हैं। वो आपको नहीं समझा सकता है। आप उसे नहीं समझ सकते हैं। जबकि गुरु माया में है, मन में है, इंद्रियों में है, इसलिए वो आपको समझा सकता है, आप उसे समझ सकते हैं। वो माया में रहते हुए भी माया से परे है। पर वो इसमें रह रहा है, इसलिए वो आपको ठीक से समझा सकता है, पर परमात्मा (परम-पुरुष) आपको समझाने में सक्षम नहीं है। आप परम-पुरुष को समझ सकने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए उसकी भक्ति करना चाँद पर पत्थर फेंकने की तरह है। साहिब ने तो धर्मदास से कहा कि परम-पुरुष की भक्ति का कोई मतलब नहीं है, कोई लाभ नहीं है। बेकार है उसकी भक्ति करना।

जैसे सूर्य को आप स्थूल आँखों से नहीं देख सकते हैं। अँधेरा छा जायेगा। पर चंद्रमा की तरफ देख सकते हैं। उसमें जो प्रकाश है, वो भी सूर्य का ही है, पर वो सौम्य है। इस तरह गुरु सहज है। गुरु में वो सत्ता चेतन है।

**सत्य पुरुष की आरसी, संतन केरी देह।  
लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं में लख लेह ॥**

इसलिए गुरु-भक्ति बोली ।

एक समय धर्मदास जी ने साहिब से पूछा—

धर्मदास विनती करे, हिये में बहु हुलसाये ।

हे स्वामी मुझ दीन को, दीजे अमल बताये ॥

कौन अमल करना चाहे, जो तुम होये दयाल ।

क्या अन्तर हम तुममें, इससे करो निहाल ॥

पूछा कि क्या काम करें, जिससे आप प्रसन्न हो जाएँ? आखिर आपमें और हममें अन्तर क्या है? क्यों आपको प्रसन्न करना है?

साहिब कह रहे हैं—

धर्मदास मम कहत हूँ, जो है नीकी बात ।

हम तुममें अन्तर नहीं, फक्त भर्म की भ्रान्त ॥

अगनपुंज कबीर जी, चिंगारी सब दास ।

चिंगारी और अगन में, क्या कीजे विश्वास ॥

कहा कि जैसे आग और चिंगारी का अन्तर है, ऐसा ही मेरा और जीवों का समझो ।

धर्मदास जी ने पूछा—

अगनपुंज है स्वामीया, जाडन करदे झट ।

हममें शक्ति क्यों नहीं, इससे करे प्रगट ॥

तुम तो सब कुछ कर सको, हो सब करने योग ।

करना चाहते जो हम, वह भी होत अयोग ॥

कहा कि आपमें तो बड़ी ताकत है, जो चाहें कर सकते हैं, पर हममें क्यों नहीं है?

साहिब कह रहे हैं—

धर्मरूप एहि धूर है, रही एहि पर छाया ।

हममें यह व्यापे नहीं, यों समझो मन माय ॥

तुम त्रिगुण की भक्ति में, उरझो हो सब लोग ।



**हमसे त्रिगुण डरत है , यूँ हम जाडन योग ॥**

कहा कि तुमपर माया का आवरण है, पर मुझे माया नहीं लगती ।  
तुम त्रिगुण की भक्ति में उलझे हुए हो, पर मुझसे त्रिगुण भयभीत रहता है ।

धर्मदास जी पूछ रहे हैं—

**क्यों त्रिगुण तुमसे डरे, हे गुरु दीन दयाल ।**

**जब तुम हम सब एक है, तुमसे क्यों निराल ॥**

**तत्त्व प्रकृति है वही, और ब्रह्म का अंश ।**

**केही कारण अन्तर पड़ो, है गुरु भर्म ही धंस ॥**

कहा कि आपसे त्रिगुण क्यों डरता है? जब हम सब एक हैं, एक ही ब्रह्म के अंश हैं तो आप हमसे निराले क्यों हैं, आपमें और हममें अन्तर क्यों है?

साहिब कह रहे हैं—

**हमसे त्रिगुण भया, हम त्रिगुण में नाहिं ।**

**तुम सब त्रिगुण से भये, यूँ समझो मन माहिं ॥**

**तुम पर तो त्रिगुण की, छाया रही जो धूर ।**

**जो तुमते एही छुटे, तब हम करे कबूल ॥**

कहा कि तुम्हारे शरीर की उत्पत्ति त्रिगुण से ही हुई है, जबकि त्रिगुण की उत्पत्ति हमसे हुई है और हम त्रिगुण में नहीं हैं, उससे परे हैं ।  
जब तक त्रिगुण की छाया तुमपर रहेगी, तब तक यह अन्तर रहेगा ।

धर्मदास जी ने कहा—

**अन्तर तुम्हारा सब सुना, मन बुद्धि चित लाय ।**

**अब निकाल इस राह से, दीजे मोहे बताय ॥**

**कौन यत्न से उतरूँ, सो कहीये प्रगटाये ।**

**जौन धूर छाई हुई, ताको यत्न बताय ॥**

कहा कि फिर मुझे इस त्रिगुण की राह से निकालो । जिससे

त्रिगुण की माया से छूट सकूँ, वही उपाय बताओ।

साहिब कह रहे हैं—

प्रथम सत संगत करो, पुनः संत की सेव।

याते सब कुछ बन पड़े, यु जानो मन भेव॥

कहा कि पहले संतों की संग करो और फिर उनकी सेवा। इसी से बात बनेगी। इसलिए सभी संतों ने गुरु की महिमा कही है।

गरीबदास जी कह रहे हैं—

सतगुरु अगम भूमि से आये। कर्म काण्ड जीव बंध छुड़ाये॥

सप्त भूमि का भय नहीं कोई। दशों दिशा एक मृग जोई॥

सप्त भूमि में बिचरन लागा। दिव्य दृष्टि देखा अनुरागा॥

अकल अलील भूमिका भारी। सब मूर्ति से मूर्ति न्यारी॥

जा मूर्ति का कहूँ विवेका। सतगुरु बिन कौन कूँ देखा॥

सिंधु शब्द में कैसे मिलि हैं। बिन पग पंथी कैसे चलि हैं॥

मार्ग बिना चलन है तेरा। सतगुरु मेटे तिमिर अँधेरा॥

फिर एक शब्द में गरीबदास जी पुनः सद्गुरु की महिमा का बखान करते हुए कह रहे हैं—

सतगुरु भेदी भेद लखाई। कागा से हंसा होय जाई॥

सतगुरु अधर धार अधिकारी। सतगुरु खोले वजर किंवारी॥

सतगुरु शंख कला दर्शावे। सतगुरु अरश विमान बिठावे॥

सतगुरु जो चाहे सो करहीं। चौदह कोटि दूत यम डरहीं॥

ऊत भूत सब त्रास निवारें। चित्र गुप्त के कागज फारै॥

कौवे से हंस हो जायेगा। सद्गुरु की इतनी महिमा है कि हंस को काल के पंजे से छुड़ा शब्द रूपी जहाज़ पर बिठा लेते हैं और अमर-लोक ले जाते हैं। वो चित्रगुप्त के सब लेखे भी मिटा देते हैं। सद्गुरु जो चाहें, वो कर सकते हैं। उनके आगे यम के 14 दूत भी कुछ नहीं कर सकते हैं।

आठ पहर सन्मुख लड़ै, सो बान्धे बाना।

जीव चला भवसागरा, सोई सूर मरदाना ॥  
 सतगुरु की सेवा करे, पावे परवाना ।  
 कहैं कबीर धर्मदास से, तेहि काल डराना ॥

इसलिए गुरु-सेवा करनी है, इसलिए गुरु-भक्ति की महिमा है ।  
 वो काल से जिताकर अपने देश में ले जायेगा ।

कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती हैं कि लगता है कि जो गुरु कह रहे हैं वो ठीक नहीं है और जो मेरा दिमाग कह रहा है, वो ठीक है । नहीं, ऐसा नहीं करना । जहाँ मन का प्रयोग करोगे, मन संसार में ही पटकेगा । इसलिए गुरु के आगे समर्पित होना । अपनी अक्ल नहीं चलाना ।

नाम सत्य गुरु सत्य हो, आप सत्य जो होय ।  
 तीन सत्य जब एक हों, विष से अमृत होय ॥

यह तीसरा आप सत्य कैसा? जो गुरु कहता चले, करते जाना ।  
 अपनी अक्ल नहीं चलाना, अपने मन की नहीं करना । जो गुरु कहे, वो करना ।

खाक हो गुरु के चरण में, तो तुझे मंजिल मिले ॥

नहीं सोचना कि जो मैं सोच रहा हूँ, वो ठीक है ।

मुझे है काम सतगुरु से, दुनिया रूठे तो रूठन दे ॥

कभी ऐसी भी परिस्थिति आयेगी कि पूरी दुनिया कहेगी कि यह काम ठीक है, पर गुरु कहेगा कि यह ठीक नहीं है । तो गुरु की मान लेना । एक महापुरुष दुनिया की धारा में नहीं बहता है । वो दुनिया की धारा से बाहर निकल जाता है । वो मन-माया की सीमा से बाहर है । इसलिए उसकी मान लेना । बस, बाजी आपके हाथ में आ गयी ।

दुनिया कहे कि फ़लानी जगह माथा टेको । आप मत सोचें कि दुनिया नाराज़ हो जायेगी । होने देना ।



## काल पुरुष निराकार निरंजन के चौदह परिवारक देवताओं के नाम

मन के देवता	:	चंद्रमा
बुद्धि के देवता	:	ब्रह्मा
चित्त के देवता	:	नारायण
अहंकार के देवता	:	शंकर
नेत्र के देवता	:	सूर्य
कान के देवता	:	दिशा
वाचा के देवता	:	अग्नि
त्वचा के देवता	:	वायु
नाक के देवता	:	अश्विनी कुमार
जीभ के देवता	:	वरुण
हाथ के देवता	:	इंद्र
पाँव के देवता	:	उपेन्द्र
लिंग के देवता	:	प्रजापति
गुदा के देवता देवता	:	यम



# वाणी साहिब की

---

## नहीं मानै कहा गँवार

नहीं मानै कहा गँवार, मैं कैसे कहूँ समझाय ॥  
झूठे को विश्वास करत है, साँचे नहिं पतियाय ॥  
आतम त्यागि अनातम पूजत, मूरख शीश नवाय ॥  
साधु संग विमल गंगाचज, तेहि तजि तीरथ जाय ॥  
अपनो हित अनहित नहिं सूझे, रही अविद्या छाय ॥  
कहैं कबीर प्रत्यक्ष न माने, ताको कौन उपाय ॥

कह रहे हैं कि मैं किसे समझाकर कहूँ, यह मूर्ख मनुष्य मेरी बात को मानता नहीं है। यह तो झूठे का ही विश्वास करता है, सच्चे पर विश्वास नहीं करता है। आत्मा को छोड़कर अनात्म तत्वों की भक्ति कर रहा है, जड़ तत्वों की तरफ जा रहा है, उनके आगे शीश झुका रहा है। संतजनों का संग गंगाजल के समान हृदय को निर्मल करने वाला है, पर उनका संग न करके तीर्थों में जा रहा है। इसे अपना हित-अनहित कुछ भी नहीं सूझता है, क्योंकि माया इस पर छाई हुई है। साहिब कह रहे हैं कि मैं क्या उपाय करूँ, कोई भी मेरी बात को प्रत्यक्ष देखते हुए भी मानता नहीं है।

## है अंधेर यही

मैं कासों कहूँ कोई न माने कही।  
बिन सतनाम भजन यह बिरथा, आयु जाय रही ॥

आतम त्यागि पषाणहि पूजे, धरि दुलहा दुलही।  
 किरतम आगे कर्ता नाचत, है अंधेर यही॥  
 पशु को मारि यज्ञ में होमे, निज स्वारथ अबही।  
 एक दिन तुमसे आय अचानक, बदला लेय सही॥  
 पाप कर्म करि सुख को चाहे, यह कैसे निबही।  
 पार उतरना चाहै सिंधु से, स्वान की पूँछ गही॥  
 कहैं कबीर कहूँ मैं जो कुछ, मानो हवा बही।  
 कोई न सुने कही जग मेरी, बहिर न्याय सबही॥

मैं किसे कहूँ, कोई भी मेरी बात को मानता ही नहीं है। सत्यनाम के सुमिरन-भजन के बिना तो आयु व्यर्थ में ही समाप्त होती जा रही है। चेतन आत्मा को छोड़कर लोग दुलहा-दुलहिन का वेष बनाकर पत्थरों की पूजा कर रहे हैं। बनावटी मूर्ति के आगे उसे रचनेवाला मनुष्य ही नाचता है। यही अज्ञान किसी को समझ नहीं आ रहा है। अपने स्वार्थ के कारण लोग पशु की बलि देकर यज्ञ करते हैं, पर याद रहे कि एक दिन वो अचानक आकर इसका बदला ले लेगा। लोग पाप-कर्मों में लीन रहकर सुख की चाह कर रहे हैं। यह कैसे संभव हो सकता है! इस तरह लोग मानो कुत्ते की पूँछ पकड़कर समुद्र से पार होना चाह रहे हैं। साहिब कह रहे हैं कि लोग मेरी बातों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से ऐसे निकाल देते हैं, जैसे हवा बह रही हो। मेरी बात को कोई भी नहीं मानता है।

## चेत रे गुमानी जग में जन्म न मिले

चेत रे गुमानी जग में जन्म न मिले, माया संग ना चले॥  
 दस से सोलह गये खेल में, बीस गये तेरे मन के मेल में।  
 चालीस नारी के फेर में, पचपन हाथ मले॥  
 अब भी जाग पड़ा क्यों सोवै, सोने से तेरे काम न होवै।

भरमन की तू कहाँ तक ढोवै, टाले नाहिं टले ॥  
 भजन करे सो हरि सुख पावै, धन दौलत तेरे काम न आवै ।  
 काया भी तेरे साथ न जावै, अग्नि बीच जले ॥  
 सुमिरण ध्यान लगा ले प्राणी, हो नहिं तेरी कुछ भी हानि ।  
 कहत कबीर सुनो अज्ञानी, करले करम भले ॥

यह मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलने वाला है। इस अमोलक तन को पाकर हे मनुष्य! माया में न उलझ। माया तेरे साथ में नहीं जायेगी। कभी खेलने में लगा रहा तो कभी स्त्री में उलझा रहा। अब धन-दौलत में खोकर माया की नींद सो रहा है। अब भी समय है, तू जाग जा और सद्गुरु का भजन कर; यह धन-दौलत तेरी काम नहीं आयेगी। यह काया भी तेरी साथ नहीं जायेगी और अग्नि में जला दी जायेगी। इसलिए तू गुरु का सुमिरन और ध्यान लगा और अच्छे कर्म कर, जिससे तेरी कुछ भी हानि नहीं होगी।

## संतो समझे का मत न्यारा

संतो समझे का मत न्यारा, जो आतम तत्व विचारा ॥  
 औरन सो कहे आपा खोजो, आप अपन न जाने ।  
 मुख कुछ और हिरदय कछु आना, कैसे नाम पिछाने ॥  
 औरन सों कहे मोह न कीजै, निर्मोही होय रहिये ।  
 माया मोह सकल आपहि में, या दुख कासो कहिये ॥  
 औरन को कहे तजो बड़ाई, आप बड़ाई चाहे ।  
 मान-बड़ाई छूटत नाहीं, झीना पीर कहावै ॥  
 औरन सो कहे पक्ष न कीजै, आपन पक्ष न छूटे ।  
 कहन सुनन को साधु कहावै, साँच कह रिस टूटे ॥  
 जौं लग राग द्वेष मन माही, स्तुति निंदा भावै ।  
 तब लग तीनों ताप न छूटे, कहा भये बहु गावै ॥

पद साखी औरन समझावै, आपा समुझत नाहीं ।

कहैं कबीर नाम क्यों दरशे, मैं तैं छूटत नाहीं ॥

लोग दूसरों को उपदेश तो देते हैं, पर स्वयं उसपर अमल नहीं करते हैं। पर जब तक स्वयं दोषों से परे नहीं हो जाते, पद और साखियाँ गाकर दूसरों को समझाने का कोई लाभ नहीं है।

## हंसा निंदक का भल नाहीं

हंसा निंदक का भल नाहीं ।

निंदक के तो दान पुण्य ब्रत, सब प्रकार मिट जाहीं ॥

जा मुख निंदा करे संत की, ता मुख जम की छांही ।

मज्ज रुधिर चले निशिवासर, कृमि कुबास तन मांही ॥

शोक मोह दुख कबहूँ न छूटे, रस तजि निरघिन खाहीं ।

विपत विपात पड़े बहु पीड़ा, भवसागर बहि जाहीं ॥

निंदक का रक्षक कोई नाहीं, फिर फिर तन मन डाहीं ।

गुरु द्रोही साधुन को निंदक, नरक मांहि बिलखाहीं ॥

जेहि निंदे सो देह हमारी, जो निंदे को काही ।

निंदक निंदा करि पछितावै, साधु न मन में लाहीं ॥

निंदक का तो किसी भी तरह से भला नहीं हो सकता है। निंदक के द्वारा किये गये दान, पुण्य, ब्रत आदि सब बेकार हो जाते हैं। जिस मुख से संतों की निंदा करता है, वो मुख काल की छाया में रहता है। वहाँ मज्जा, रुधिर, कीड़े आदि गंदी चीजें ही बहती रहती हैं, जिससे शरीर में बदबू रहती है। उसका मोह और दुख कभी दूर नहीं होता है। वो मीठे रस को छोड़कर निंदा का ही आहार करता है। उसके ऊपर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है, जिससे उसे बड़ी पीड़ा होती है और वो भवसागर में बह जाता है। निंदक की रक्षा करने वाला कोई नहीं होता। उसके तन, मन सदा ईर्ष्या, राग, द्वेष में जलते रहते हैं। गुरु से द्रोह करने वाला और



संतों की निंदा करने वाला नरक में पड़ा बिलखता रहता है। निंदा करने वाला तो शरीर की ही निंदा करता है, पर साधु को इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है जबकि निंदक निंदा करके पछताता ही है। साहिब कहते हैं कि जिनमें दया, संतोष, धर्म, क्षमा, शील आदि गुण होते हैं, वे साधु होते हैं और सद्गुरु के संग में रहते हैं, उन्हीं के उपदेशानुसार जीवन व्यतीत करते हैं।

## अवधू तन का मन रखवारा

अवधू तन का मन रखवारा, कोई जाने जाननहारा ॥  
 मन ही देव देहरा मन ही, मन सेवा मन पूजा।  
 मन ही मन ले पाती तोड़े, मन ही मन के राजा ॥  
 मन ही उठे मन ही बैठे, मन मेगा मन न्यारा।  
 मन ही ताता मन ही शीतल, मन मीठा मन खारा ॥  
 ध्यान लगाय बैठे घट भीतर, तज दे विषय विकारा।  
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सो जन जग से न्यारा ॥

इस शरीर की रखवाली करने वाला मन है, पर इस बात को कोई विरला ही जानता है। मन ही देवता है, मन ही मंदिर है, मन ही सेवा-पूजा करने वाला है, निराकार मन ही शरीर रूपी स्थूल मन को ले जाकर पूजा के लिए पत्तियाँ तोड़ता है, मन ही इस शरीर रूपी स्थूल मन का राजा है, मन ही उठता है, मन ही बैठता है, मन ही लोगों से नाता जोड़ता है और मन ही उनसे नाता तोड़ लेता है, मन ही गर्म हो जाता है, मन ही शीतल हो जाता है, मन ही मीठा हो जाता है, मन ही खारा हो जाता है यानी मन का स्वभाव बदलता रहता है। इसलिए साहिब कह रहे हैं कि घट के भीतर ध्यान लगाकर स्थिर हो जाओ और विषय-विकारों को त्याग दो तो संसार-सागर से मुक्त हो जाओगे।

## तू नाम सुमर पछतायेगा

तू नाम सुमर पछतायेगा ॥  
 पापी जियरा पाप करत है, आज कल छुट जायेगा ॥  
 लालच लागे जनम गँवायो, माया भरम लुभायेगा ।  
 धन जोवन का गर्व न कीजे, कागज सा गल जायेगा ॥  
 सुमरन भजन दया नहिं कीन्ही, ता मुख चाटे खायेगा ।  
 धर्मराज जब लेखा माँगे, क्या मुँह लेकर जायेगा ॥  
 जीवन भर तू सुख को खोजै, सुख दुख सब छुटि जायेगा ।  
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, साध संगत तर जायेगा ॥

नाम का सुमिरन कर लो, नहीं तो बाद में पछताना ही पड़ेगा ।  
 धन-दौलत के लालच में जन्म गँवा रहो हो । ऐसे में तो माया मोहित कर  
 लेगी और सही घर में नहीं पहुँच पाओगे । धन और जवानी तो कागज  
 की तरह गल जायेंगे, इसलिए इनका अभिमान न करना । यदि कहीं बाहर  
 मृत्यु हो गयी तो जिस मुख से सुमिरन-भजन नहीं किया वो कुत्ते और  
 सियारों द्वारा चाटा ही जायेगा । हे मनुष्य ! जब धर्मराज तुमसे तुम्हारे कर्मों  
 का हिसाब माँगेगा तो वहाँ कौन-सा मुख लेकर जाओगे । तुम तो जीवन-  
 भर संसार में सुख की खोज करते रहे, पर याद रहे कि संसार के सारे  
 सुख-दुख यहीं छूट जायेंगे । इसलिए हो सके तो साधु की संगत कर,  
 क्योंकि उनके संग से तू माया के संसार से पार हो जायेगा ।

## जो जो देखूँ सो सो रोगी

जो जो देखूँ सो सो रोगी । रोग रहित मेरे सतगुरु जोगी ॥  
 हम निरोग मन मोक्षहि दीन्हा । काम रोग एक निर्वश कीन्हा ॥  
 जिभ्या रोग से मीन फँसाना । वासना रोग कमर लपटाना ॥  
 दृष्टि रोग जल मरत पतंगा । नाग गयो पड़ काल सुरंगा ॥

हेतहि रोग सकल संसारा । त्रिरोग में बँधत विकारा ॥  
 रोगे जन्महि रोगे मरहि । फेर आनि संकट में परहि ॥  
 रोगी ज्ञान जो तीनों पावै । रोग गुरु बिन कौन छुड़ावै ॥  
 सतगुरु साहिब दया जब कीन्हि । कहत कबीर गुरु रोग लै लीन्हि ॥

कह रहे हैं कि सद्गुरु को छोड़कर सभी रोगी ही हैं । हम निरोगी हो गये हैं, क्योंकि मन को मोक्ष की राह पर लगाकर उसके खतरनाक हथियार काम को उसके वंश सहित समाप्त कर दिया है । जीभ के रोग के कारण मछली काँटे में फँस जाती है । मछली की जीभ बड़ी तेज़ है । यदि काँटे में आटा बगैरह लगाकर फेंको तो यह जानते हुए भी कि कोई उसे पकड़ने के लिए ऊपर खड़ा है, वो चुपके से उसे खा लेना चाहती है । क्योंकि जीभ के स्वाद को नहीं छोड़ पाती है, जिससे शिकारी के चंगुल में फँस जाती है । वासना के रोग के कारण कामी पुरुष स्त्री की कमर से लिपटा रहता है । आँखों के रोग के कारण पतंगा दीपक की लौ में अपना जीवन समाप्त कर देता है । वो आँख इंद्रि का कायल है; दीपक की लौ से प्रेम करता है । उसकी आँखों का यह रोग उसका नाश कर देता है । मृगा संगीत सुनने का कायल है, जिसके कारण वह शिकारी के जाल में फँस जाता है । मोह रूपी रोग से सारा संसार ग्रसित है । तन, मन और धन रूपी तीन रोग सबको लगे हैं, जिससे सारे बँध गये हैं । इसी कारण बार-बार का जन्म-मरण का रोग लगा हुआ है । यदि तन, मन और धन रूपी रोगों का ज्ञान हो जाए तो ही बच सकता है । पर सद्गुरु के बिना इन रोगों से कोई नहीं छुड़ा सकता है । जब सद्गुरु दया करते हैं वो तन, मन और धन तीनों रोग ले लेते हैं यानी जब शिष्य को नाम का दान देते हैं तो पहले उससे तन, मन और धन—तीनों लेते हैं । ये तीन ही जीव पर रोगों की तरह छाए हुए हैं । इसलिए गुरु इन रोगों को लेकर उसे निरोग कर देता है ।



## मेरे साहिब खोली राँझड़ी च हट्ट अड़ीओ

मेरे साहिब खोली राँझड़ी च हट्ट अड़ीओ,  
नाम दे के चौरासी देवे कट अड़ीओ।

नाम देके चौरासी.....

भृंग मता सन्त मता साहिब बतामदा,  
भृंगा जिवे कीट फड़ शब्द सुनावदा।  
साहिब पल में काया दे पलट अड़ीओ।

नाम दे के चौरासी.....

सत्य दा झंडा चुक साहिब आप आ गया,  
सतलोक विच सारे जीव पहुँचा रिहा।  
निरंजन डरै नाले देखे अँखा अड्डु अड़ीओ।

नाम दे के चौरासी.....

10वें द्वार तक काल घेरा पाया ए,  
अनहद नाद में सभी उलझाया ए।  
साहिब 11वें का भेद रहे दस अड़ीओ।

नाम दे के चौरासी.....

सतलोक दा साहिब शब्द सुनावदा,  
करमा दा वही खाता पल च मुकामदा।  
मन आत्मा तों हो गया अलग अड़ीओ।

नाम दे के चौरासी.....

पांच तत्व विच काल जीवा नूँ फसाया ऐ,  
काया विच नाम दस जीव उलझाया ऐ।  
विदेह नाम रहे साहिब दस अड़ीओ।

नाम दे के चौरासी.....

# आरती

आरति करहुँ संत सद्गुरु की, सद्गुरु सत्यनाम दिनकर की ।  
काम, क्रोध मद, लोभ नसावन, मोह रहित करि सुरसरि पावन ।  
हरहिं पाप कलिमल की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

तुम पारस संगति पारस तब, कलिमल ग्रसित लौह प्राणी भव ।  
कंचन करहिं सुधर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

भुलेहुँ जो जिव संगति आवें, कर्म भर्म तेहि बाँधि न पावें ।  
भय न रहे यम घर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

योग अग्नि प्रगटहि तिनके घट, गगन चढ़े श्रुति खुले वज्रपट ।  
दर्शन हों हरिहर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

सहस्र कैवल चढ़ि त्रिकुटी आवें, शून्य शिखर चढ़ि बीन बजावें ।  
खुले द्वार सतघर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

अलख अगम का दर्शन पावें, पुरुष अनामी जाय समावें ।  
सद्गुरु देव अमर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

एक आस विश्वास तुम्हारा, पड़ा द्वार मैं सब विधि हारा ।  
जय, जय, जय गुरुवर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥  
सद्गुरु सत्यनाम.....

# आरती

जय सद्गुरु देवा, साहिब जय सद्गुरु देवा,  
सब कुछ तुम पर अर्पण करहूँ पद सेवा ।

जय गुरुदेव दया निधि, दीनन हितकारी, साहिब भक्तन हितकारी,  
जय जय मोह विनाशक, जय जय तिमिर विनाशक, भय भंजन हारी ।  
साहिब जय.....

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, साहिब प्रभु मूरति धारी,  
वेद पुराण बखानत, शास्त्र पुराण बखानत, गुरु महिमा भारी ।  
साहिब जय.....

जप तप तीर्थ संयम, दान विधि दीन्हे, साहिब दान बहुत दीन्हे,  
गुरु बिन ज्ञान न होवे, दाता बिन ज्ञान न होवे, कोटि यत्न कीन्हे ।  
साहिब जय.....

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, साहिब जीव बहे सारे,  
नाम जहाज बिठाकर, शब्द जहाज चढ़ाकर, गुरु पल में तारे ।  
साहिब जय.....

काम क्रोध, मद, लोभ, चोर बड़े भारी, साहिब चोर बहुत भारी,  
ज्ञान खड्ग दे कर में, शब्द खड्ग देकर में, गुरु सब संहारे ।  
साहिब जय.....

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें, साहिब न्यारे-न्यारे यश गावें,  
सब का सार बताकर, सब का भेद लखा कर, गुरु मार्ग लावें ।  
साहिब जय.....

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, साहिब सब दोषक हारी,  
वचन सुनत तम नासे, शब्द सुनत भ्रम नासे, सब संशय टारी ।  
साहिब जय.....

तन, मन, धन सब अर्पण, गुरु चरणन कीजै, साहिब दाता अर्पण कीजै,  
सद्गुरु देव परमपद, सद्गुरु देव अचलपद, मोक्ष गती लीजै ।  
साहिब जय.....

## पुस्तक सूची

हिन्दी में

- |  |   |
|--|---|
| 1. परा रहस्या                                | 18. सहजे सहज पाइये                                    |
| 2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु                    | 19. रोगों से छुटकारा                                  |
| 3. पावन प्रार्थनाएँ                          | 20. सद्गुरु महिमा                                     |
| 4. सद्गुरु चालीसा                            | 21. भक्ति के चोर                                      |
| 5. वार्षिक डायरी                             | 22. अनुरागसागर वाणी                                   |
| 6. सद्गुरु भक्ति                             | 23. भक्ति सागर  |
| 7. कहाँ से तू आया और कहाँ<br>तुझे जाना रे?   | 24. हरि सेवा युग चार है, गुरु<br>सेवा पल एक           |
| 8. सत्संग सुधारस                             | 25. सत्य नाम के पटतरे उबरे<br>पतित अनेक               |
| 9. नाम अमृत सागर                             | 26. काग पलट हंसा कर दीना                              |
| 10. अमृत वाणी                                | 27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग<br>खोजे बन माहिं           |
| 11. सद्गुरु नाम जहाज है                      | 28. गुरु पारस गुरु परस है                             |
| 12. चल हंसा सतलोक                            | 29. गुरु अमृत की खान                                  |
| 13. कोटि नाम संसार में तिनते<br>मुक्ति न होय | 30. शीश दिये जो गुरु मिले तो<br>भी सस्ता जान          |
| 14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला<br>कोय      | 31. मूल सुरति   |
| 15. गुरु सुमिरै सो पार                       | 32. भृंग मता होय जिहि पासा,<br>सोई गुरु सत्य धर्मदासा |
| 16. तीन लोक से न्यारा                        |   |
| 17. सेहत के लिए जरूरी                        |   |

33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी  
 34. गुरु संजीवन नाम बतावे  
 35. नाम बिना नर भटक मरे  
 36. रोगों की पहचान  
 37. यह संसार काल को देशा  
 38. न्यारी भक्ति  
 39. साहिब तेरी साहिबी सब  
 घट रही समाय  
 40. जाप मरे अजपा मरे अनहद  
 भी मर जाए  
 41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के  
 निदान में  
 42. सुरति समानी नाम में  
 43. सबकी गठरी लाल है, कोई  
 नहीं कंगाल  
 44. निराले सद्गुरु  
 45. कुँजड़ों की हाट में हीरे का  
 क्या मोल
46. जीवड़ा तू तो अमर लोक का  
 पड़ा काल बस आई हो  
 47. मुझे है काम 'सद्गुरु से  
 जगत रूठे तो रूठन दे'  
 48. जेहि खोजत कल्पो भये  
 घटहि माहिं सो मूर  
 49. आत्म ज्ञान बिना नर भटके  
 50. बिन सतगुरु बाँचे नहीं  
 कोटिन करे उपाय  
 51. अँधी सुरति नाम बिन जानो  
 52. सत्यनाम निज औषधि  
 सद्गुरु दर्ई बताय  
 53. सेहत संजीवनी  
 54. भक्ति दान गुरु दीजिए



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के.)